अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर
जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज

श्रीविद्या-सपर्या

(खड्गमाला सहित)



भगवती राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी

प्रकाशक

स्वामी सदानन्द सरस्वती

शारदापीठ प्रकाशम्, द्वारका (गुजरात)



अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

अवतरण : विक्रम संवत् १९८१ भाद्रपद शुक्ल तृतीया तदनुसार २ सितम्बर १९२४ ई.। जन्मनाम : पोथीराम स्थान: ग्राम-दिघौरी, जिला-सिवनी (मध्यप्रदेश) पितृनाम: श्रद्धेय पं.श्री धनपति उपाध्याय, माँ : पूज्या गिरिजादेवी।

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, गोवध विरोधी आन्दोलन, अध्यात्मिक उत्थान मण्डल की स्थापना। ज्योतिष्पीठाधीश्वर : ७ दिसम्बर १९७३ को ज्योतिष्पीठ के ४६ वें शङ्कराचार्य। १९७४ ज्योतिर्मठ का जीर्णोद्धार। द्वारकाशारदापीठाधीश्वर : २७ मई १९८२ को ७८ वें द्वारकाशारदापीठाधीश्वर। श्रीशारदापीठम् द्वारका का जीर्णोद्धार। रामजन्मभूमि पुनरुद्धार समिति की स्थापना। रामालय ट्रस्ट की स्थापना। विश्वकल्याणाश्रम में चिकित्सालय-निर्माण। रामसेतु रक्षा अभियान। गंगा सेवा अभियान के अन्तर्गत अविरल, निर्मल गंगा धारा आन्दोलन।

श्रीवनम् श्रीविद्यापीठ परमहंसी गंगाश्रम झोंतेश्वर, विश्वकल्याणाश्रम सिंहभूमि, कौन्नगर कलकत्ता, श्रीविद्यामठ वाराणसी, श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी गणेशगंज सिवनी, शङ्कराचार्य दीक्षास्थली गोविन्दनाथ वन सांकलघाट, बंगलामुखी मंदिर जबलपुर, श्रीमदाद्यशङ्कराचार्य समाधिस्थल केदारनाथ, शङ्कराचार्य मठ हरिद्वार, राजयोगाश्रम बरहटा, मातृधाम कातलबोड़ी, हिङ्गलाज शक्तिपीठ नरसिंहपुर, अन्य मठ - रायपुर, भोपाल, इन्दौर, अमदाबाद, शंकराचार्य नगर खेड़ा, डाकोर, सोमनाथ, खम्भात, धोलका, रतनपुर राजकोट, तक्षशिला जामनगर आदि की स्थापना एवं सञ्चालन पूज्यश्री द्वारा सम्पन्न हो रहा है।

पूज्य महाराजश्री के आदेशानुसार अनेक सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियाँ सम्पादित होती रहती हैं। अनेक अस्पताल, संस्कृत पाठशालायें, शङ्कराचार्य बाल विद्या निकेतन आदि के द्वारा भारतीय संस्कृति और संस्कारों का संवर्धन करने वाले कार्य उनके शिष्यगण, भक्तगणों द्वारा सम्पन्न होते रहते हैं।

म्



चक्रैश्च पञ्चभिः ।
शिवयोर्वपुः ॥
फलं समवाप्नुयात् ।
श्रीचक्रदर्शनम् ॥

ऐसे कुल नौ चक्रों से संसिद्ध
रूप है। जो फल विधिपूर्वक सौ
र्शन मात्र से प्राप्त हो जाता है।

श्रीविद्या-सपर्या

(खड्गमाला सहित)

संस्कर्ता
अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर
एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

तृतीय संस्करण ३००० प्रतियाँ

वैशाख शुक्ल-५ सं. २०७५
२५२५वीं शङ्कराचार्य जयन्ती
दिनाङ्क २० अप्रैल २०१८

मूल्यम् : २०० रूप्यकाणि

प्रकाशक
स्वामी सदानन्द सरस्वती
शारदापीठ प्रकाशन,
द्वारका, देवभूमि द्वारका (गुजरात)

मुद्रक
वोरार्ट, 210, सर्वोदय, जी.पी.ओ. के पास
अहमदाबाद-380001

Shrividya-Saparya

(With Khadagmala)

Auspicious

Shri Swroopananda Saraswati Swamipada
the incumbant Jagadguru Shankracharya of
jyotishpeetha Badrikashram and Shardapeetha-
Dwarka

Published by :
Swami Sadanand Saraswati
Shardapeeth Prakashanam
Dwarka, Devbhumi Dwarka (Gujarat)

Shrividya-Saparya

(With Khadagmala)

Auspicious

Shri Swroopananda Saraswati Swamipada
the incumbant Jagadguru Shankracharya of
jyotishpeetha Badrikashram and Shardapeetha-
Dwarka

Third Edition : 3000 Copy

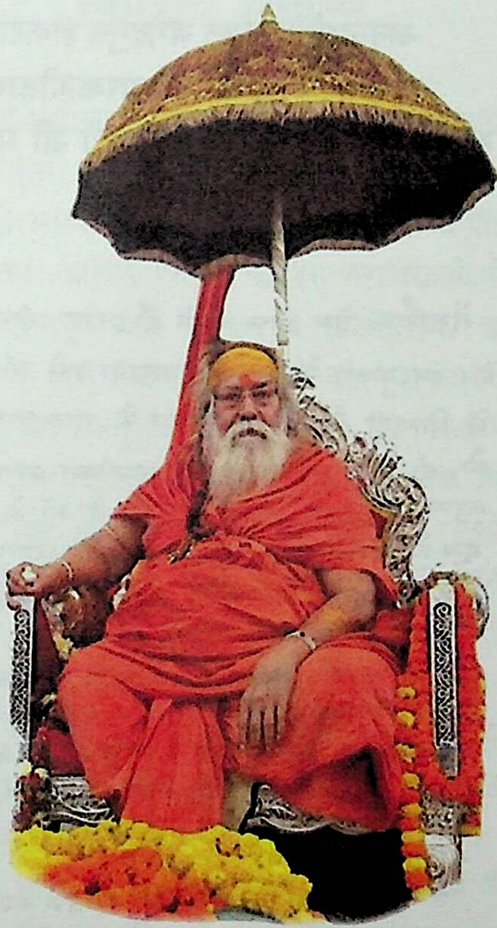
Vishakh Shukl-5, Samvat 2075
2525Th Shankracharya Jayanti
Date 20 April 2018

Price : 200/-

Published by :
Swami Sadanand Saraswati
Shardapeeth Prakashanam
Dwarka, Devbhumi Dwarka (Gujarat)

Printed by
Vorart
210, Sarvodaya, Near G.P.O.,
Ahmedabad

पूज्यपाद ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर
जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज



स्वप्रकाशशिवमूर्तिरेकिका, तद्विमर्शतनुरेकिका तयोः ।
सामरस्य वपुरिष्यते परा, पादुका परशिवात्मनो गुरोः ।।

(चिद्विलास)

शिवनाम से जानी जाने वाली स्वप्रकाशरूपमूर्ति तथा शक्तिनामिका उसी की विमर्शरूप दूसरी मूर्ति, इन्हीं दोनों का सामरस्य पराशक्ति है जिसका परशिवात्मक सद्गुरु की पादुका के ध्यान से स्मरण होता है।

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य
ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारकापीठाधीश्वर
स्वामी श्रीस्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज का
शुभाशीर्वाद

नैसर्गिक प्रेम प्राप्त करने की इच्छा जीव का स्वभाव है। इस संसार में प्रेम की समग्रता उसे माँ के वात्सल्य में मिलती है। बाल्यावस्था के वात्सल्यपूर्ण स्नेह को माँ से प्राप्त करने वाला आजीवन उसका स्मरण करता है। हमारे ऋषि मुनियों ने माँ के प्रेम के मूल में समस्त विश्व की पालयित्री महाशक्ति के प्रेम का दर्शन किया और बतलाया कि वही महामाया है। वह निर्मोह पशुपक्षियों में भी मोह उत्पन्न करके उनका स्वार्थ भुलाकर उनके पुत्रों का पालन करती है। वह परमेश्वरी चैतन्यस्वरूपा है, समस्त गुणों की अधिष्ठात्री है। तीन शरीर रूपी तीन पुरों की स्वामिनी होने के कारण उसे त्रिपुरसुन्दरी कहा जाता है। परमहंसी गङ्गा क्षेत्र श्रीनगर उस जगज्जननी की उपासना का प्रमुख केन्द्र बनने जा रहा है।

साधकजन सात्विक उपचारों से उस करुणामयी की आराधना करके स्वयं सद्गुणसम्पन्न और शक्तिशाली बनकर समष्टि-व्यष्टि के समन्वित विकास में योगदान करें। सबको स्नेहमयी दृष्टि से देखते हुये सबको आह्लादित करें यह आशंसा व प्रार्थना है।

स्वरूपानन्द सरस्वती

किञ्चिद् वक्तव्य

अशरणशरणअकारणकरुणकरुणावरुणालया परमपावनी पराम्बा भगवती राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी की आराधना वेदमूलक 'श्री' की उपासना का ही स्वरूप है । वेद में श्री और लक्ष्मी प्रभृति संज्ञाओं से उपनिबद्ध तथा तान्त्रिक परम्परा की दस महाविद्याओं में श्रीकुल की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देवी के रूप में ख्यातिलब्ध, भक्तों और साधकों के लिये परम हितावह माता श्री की पूजा सभी के लिये परम उपादेय है, किन्तु ६४ योगिनियों, नव आवरणों, नव त्रिकोणों, वहिर्दशार एवं अन्तर्दशार प्रभृति सैद्धान्तिक प्रकृष्टताओं के कारण श्रीविद्या की साधना सामान्य व्यक्ति के लिये अर्थात् गुरुपदाब्जकृपाविरहितजन के लिये नितान्त दुर्लभ, गोपनीय तथा दुरूह है, चाहे वह कितना ही बड़ा साधक क्यों न हो । इसीप्रकार समर्थगुर्वनुकम्पयाप्राप्तप्रसाद साधक के लिये भी भगवती का स्वरूपावबोध तब तक अत्यन्त कठिन है जब तक गुरु का सतत मार्गदर्शन प्राप्त न हो क्योंकि भगवती का स्वरूप, **कहत कठिन समुझत कठिन, साधन कठिन विवेक** की उक्ति को अक्षरश: चरितार्थ करने वाला है । अत: साधक के द्वारा कहीं किसी भी समय पूजा में त्रुटि सम्भावित है । ध्येय है कि यह स्वरूपावबोध श्रद्धा, पवित्रता, समर्पण, निष्ठा, समाहित मन, जगज्जननी के परमपूतचरणाम्बुजजन्यपावनपराग के प्रति भक्ति तथा भक्त के जन्मजन्मान्तरीय पुण्यराशि की समुदीयमानता का पवित्र परिपाक है । एतावता एतत् कार्य निमित्त किसी सिद्ध की कृपा छाया अथवा तद्प्रवर्तित ज्ञानकोशात्मक ग्रन्थरत्न का मार्गदर्शन आवश्यक

होता है । जिसका संग्रथन कठिनतर कार्य है ।

वस्तुतः भारतीय चिन्तनसरणि अध्यात्ममूलक है । अतः यहाँ की भौतिकवादी प्रतीत होने वाली ज्ञानशाखाओं का भी अन्तिम लक्ष्य अध्यात्म ही होता है । ऐसी स्थिति में श्रीविद्या का तो कहना ही क्या है? वह तो साक्षात् अध्यात्मस्वरूपा है । इसीलिए तो इसे 'विद्या' कहते हैं क्योंकि इसकी प्रवृत्ति ही मुक्ति के लिये है (**सा विद्या या विमुक्तये**) और यह ब्रह्मगति की प्रदात्री भी (**विद्या हि सा ब्रह्मगतिप्रदा या**) है । यद्यपि लोकव्यवहार में अन्य ज्ञानशाखाएँ भी विद्या पद से अभिहित होती हैं, किन्तु परमार्थतः **विद्या** श्रीविद्या ही है क्योंकि अमृतत्त्व की उपलब्धि इसी से सम्भव है। इस सन्दर्भ में भगवान् भाष्यकार श्रीमदादि शङ्कराचार्य ने अपने द्वारा रचित **त्रिपुरसुन्दरीवेदपादस्तव** में कहा है कि -

सन्तु विद्या जगत्यस्मिन् संसारभ्रमहेतवः ।
भजेऽहं तां यया विद्वान् विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥

तन्त्रविधान में श्रीविद्या को पञ्चदशाक्षरी, षोडशाक्षरी, ललिताम्बा, महाविद्या तथा कामसेविता आदि विभिन्न नामों से जाना जाता है। लोकहित को ध्यान में रखकर ऋतम्भराप्रज्ञा के धनी मनीषियों ने सृष्टि के आदि में इस देवी की सपर्या को आवश्यक समझा । परिणामतः वेद में एतत्सम्बद्ध बहुसंख्यक सूक्तों के दर्शन होते हैं, तथा वैदिक परम्परा के ध्वजवाहक शङ्करावतार भगवान् आद्यशङ्कराचार्य जी महाराज ने भी भगवती की स्तुति में अनेक स्तोत्रों का न केवल प्रणयन किया प्रत्युत् सपर्या मार्ग को सुस्पष्टतया प्रशस्त कर अग्रगामी भी बनाया । आपने इसी क्रम में करुणालहरी, आनन्दलहरी एवं सौन्दर्यलहरी प्रभृति अनेक ग्रन्थों की रचना की। भगवती त्रिपुरसुन्दरी को माता अपर्णा (पार्वती) का साक्षात् रूप

माना जाता है । अत: सर्वविध विद्याओं के मूल अर्धनारीश्वर शिव से अभेद सम्बन्ध और वेदमूलक होने के कारण श्रीविद्या की सपर्या अत्यन्त प्राचीन है, किन्तु परतन्त्रता और विदेशी प्रशासन के प्रभाववश यह परम्परा सुषुप्त हो गयी थी, जिसे भगवान् शङ्कराचार्य जी महाराज ने पुन: जागृत किया । यही कारण है कि शिवस्वरूप शङ्कराचार्य जी द्वारा स्थापित चारों शाङ्करपीठों में भगवती की उपासना अविच्छिन्नत: लगभग २५०० वर्षों से होती आ रही है ।

इस उपासना शृङ्खला में परमपूज्य शङ्कराचार्य परम्परा के सिरमौर मनीषी, ज्योतिष्पीठ के पूर्व जगद्‌गुरु शङ्कराचार्य तथा मेरे दादागुरु परमपूज्य स्वामीश्री ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज थे तथा २०वीं शताब्दी के सर्वोत्कृष्ट वक्ता, ज्ञानी, सनातन वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के उन्नायक धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज, द्वारकाशारदापीठ को ३५ वर्षों तक शङ्कराचार्य के रूप में अलंकृत करने वाले जगद्‌गुरु शङ्कराचार्य स्वामी अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ जी महाराज एवं शृङ्गेरी, ज्योतिष्पीठ, द्वारकाशारदामठ तथा गोवर्धनमठ जगन्नाथपुरी के जगद्‌गुरु शङ्कराचार्यों तथा अन्य तपोधन महापुरुषों ने भी श्रीविद्या की आराधना परम्परा को आगे बढ़ाया ।

नवनवोन्मेषशालिनी मेधा से समृद्ध ऋषियों ने अपनी उत्कट साधना के द्वारा ऐसी गहन ज्ञानोपलब्धि की जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने समूचे श्रीयन्त्र को मानव के सर्वाङ्गीण शरीर में रूपायित कर दिया । तदनुसार शरीर को श्रीचक्र, ब्रह्मरन्ध्र को बिन्दुचक्र, मस्तिष्क को त्रिकोण, ललाट को अष्टकोण, भ्रूमध्य को अन्तर्दशार, कण्ठ को वहिर्दशार, हृदय को चतुर्दशदशार, कुक्षि

को वृत्त, नाभि को अष्टदल कमल, कटि को अष्टदल के बाहर का वृत्त, स्वाधिष्ठान को षोडशदल कमल, मूलाधार को षोडशदल कमल का वाह्यवृत्तत्रय, जानु को भूपुर की प्रथम रेखा, जङ्घा को द्वितीय रेखा और करों को तृतीय रेखा स्वीकार किया गया है। इसीलिये श्रीचक्र को चक्रराज कहा जाता है। योगिनी हृदय स्तोत्र के अनुसार अपने शरीर और ब्रह्माण्ड को श्रीचक्र समझने वाला व्यक्ति महान् तपस्वी हो जाता है -

पिण्डब्रह्माण्डयोर्ज्ञानं श्रीचक्रस्यविशेषतः ।

ज्ञात्वा शम्भुफलावाप्तिर्नास्त्यस्य तपसः फलम् ।।

भारतीय विचार पद्धति में प्रत्येक चिन्तक अपने पूर्व चिन्तनों और चिन्तकों के प्रति कृतज्ञता का निर्वाह करते हुए, पूर्व पीढ़ी को अपना प्रेरक स्वीकार करते हुए, देश काल पात्र परिस्थिति को ध्यान में रखकर लोकहित हेतु स्वयं द्वारा प्राप्त संगृहीत अर्जित तथा सुविचारित चिन्तन से न केवल वर्तमान को अलंकृत करता है प्रत्युत् भावी पीढ़ी का प्रेरणास्रोत भी बन जाता है और कभी कभी काल की दृष्टि से परवर्ती होते हुए भी वह अन्यों की अपेक्षा अधिक ख्यातिलब्ध, लोकोपयोगी, लोकस्वीकृत एवं कालजयी बन जाता है। उदाहरणार्थ वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों, धर्मशास्त्रों और रामायण आदि की प्रख्यात व प्रतिष्ठा प्राप्त विचार पद्धति के बावजूद श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेशक षोडशकलावतारी भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की शिक्षायें, सभी पुराणों के रहते हुए भी श्रीमद्भागवतमहापुराण की विशेषताएँ, सभी नदियों के रहते हुए भी पुण्यतोया भगवती जाह्नवी के गुण, सर्वविध प्राणियों के अस्तित्व के बावजूद पक्षिराज जटायु, वानरराज हनुमान व जाम्बवान् के व्यक्तित्व तथा सुदीर्घ आर्ष परम्परा के

बावजूद महर्षि शुकदेव एवं उनकी लोक को देन अविस्मरणीय हैं और रहेंगे । इस प्रसंग में शङ्कराचार्यों की अविच्छिन्न परम्परा के बावजूद यदि हम स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी तथा ज्योतिष्पीठ बद्रीनाथ एवं शारदापीठ द्वारका के स्वनामधन्य परमपूज्य जगद्‌गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज़ के कालजयी व्यक्तित्व पर दृष्टिपात करें तो लोकहित हेतु उनके द्वारा कृत अपरिमित योगदान अन्यों की अपेक्षा अतीव विलक्षण है । आप श्रीचक्र के नव आवरणों तथा तत्सम्बद्ध रहस्यों के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञाता हैं । एतावता श्रीविद्या के रहस्यों का सरलतयावबोध कराने में आप ही समर्थ अधिकारी हैं क्योंकि आप पर भगवती की असीम कृपा है और आप वरेण्य साधक, तपोमूर्ति, समर्पित भक्त तथा अद्भुत ज्ञानी हैं । आपने राष्ट्र की स़ांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक अभ्युन्नति के साथ-साथ इस दुर्लभतम विद्या को अपनी करुण दृष्टि से सर्वसुलभ बनाने का कार्य किया है और **दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा** को **आबालगोपविदिता** बना दिया है । आपने देश के अनेक भागों में विशाल भगवती राजराजेश्वरी के मन्दिरों का निर्माण करवाया है और साधकों को साधना हेतु प्रेरित तथा उत्साहित किया है । उनके द्वारा निर्मित प्रथम राजराजेश्वरी मन्दिर मध्यप्रदेश के हृदयस्थल झोंतेश्वर में परमहंसी गंगा आश्रम में है, जो आज भारत के पञ्चम धाम के रूप में विख्यात है । अत्यन्त मनोरम वनप्रान्त में स्थित यह आश्रम और भव्य मन्दिर तथा वहाँ का दिव्य वातावरण यात्रियों का मन मोह लेता है । ज्ञात हो कि यही वन पूज्यपाद की तपस्थली भी रहा जब वे ११ वर्ष की अवस्था में यहाँ पधारे थे और अपनी साधना से इस वनप्रान्त को माङ्गलिकता प्रदान की थी ।

जगद्गुरु आद्य शङ्कराचार्य के द्वारा प्रवर्तित तन्त्रमार्ग में सात्त्विक उपासना का उपदेश है और वर्तमान में शाङ्कर सम्प्रदाय ही अनवच्छिन्न रूप से चला आ रहा है । इसके अनुसार उपासना करने से साधक शीघ्र ही मन्त्र सिद्धि के द्वारा लौकिक और पारलौकिक कल्याण, अर्थात् 'अभ्युदय और निःश्रेयस' का अधिकारी हो जाता है ।

श्रीयन्त्राधिष्ठात्री भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी की मातृभाव से उपासना है । वह करुणामयी, कृपामयी, भक्तवत्सला माता अपने पुत्रों का कल्याण करती है और इसमें विशेष विधि-विधानों की ओर जाना भी आवश्यक नहीं है । शास्त्रों में कहा गया है कि-

निष्कामो देवतां नित्यं योऽर्चयेत् भक्तिनिर्भरः,
तामेव चिन्तयन्नास्ते यथाशक्तिमनुजपन्
सैव तस्यैहिकं भारं वहेन् मुक्तिञ्च साधयेत्
सदा सन्निहिता तस्य सर्वञ्च कथयेच्च सा
वात्सल्यसहिता धेनुर्यथा वत्समनुव्रजेत्
अनुगच्छेच्च सा देवी स्वं भक्तं शरणागतम् ॥

जो साधक निष्काम भाव से श्रद्धाभक्ति युक्त होकर उस कृपामयी माता का चिन्तन करता है, और यथाशक्ति अपने इष्ट मन्त्र का जप करता है तो वह भगवती उस भक्त के ऐहिक एवं पारलौकिक समस्त भारों को स्वयं वहन करती है और शेष में मुक्ति भी देती है । इतना ही नहीं उस शरणागत भक्त के वह सदा साथ रहती है और सब कुछ उसको कहती रहती है । जैसे वात्सल्य स्नेह से द्रवित चित्त होकर गाय अपने बछड़े के पीछे रहती है, उसी तरह वह करुणामयी माता अपने शरणागत भक्त के अनुगत होकर

सबप्रकार से रक्षा करती है । संसार की यात्रा बड़ी भयानक है, उससे परित्राण पाने के लिये मातृभाव की उपासना ही सर्वश्रेष्ठ है । **आपदि किं करणीयं स्मरणीयं चरणयुगलमम्बायाः, न मातुः परमस्ति दैवतम्** आदि शास्त्रों का उपदेश है कि माता के समान दूसरा कोई बड़ा देवता नहीं है । अतः विपत्ति काल में माता के चरण कमलों का निरन्तर स्मरण करना चाहिये । इससे मनुष्य दीनता, हीनता, दरिद्रता, आधि-व्याधि, शोक-सन्तापों से मुक्त होकर परम कल्याण को प्राप्त कर लेता है । यह भारतीय उपासनाओं में सर्वश्रेष्ठ उपासना मानी जाती है । और यह ज्ञान विज्ञान से परिपूर्ण रहस्यमयी पद्धति है । इसका गुरुपरम्परा से ही ज्ञान होता है । सर्वप्रथम इसमें मन्त्र दीक्षा परमावश्यक है। मन्त्रदीक्षा के विना कोई इस पूजा का अधिकारी नहीं होता है । दीक्षा प्राप्त करके उसके नियमों का पालन करना भी आवश्यक है । इस साधना की तीन कोटियाँ होती हैं । साधक, सिद्धि और सिद्ध ।

प्रारम्भ में साधक के लिये मन्त्र का अर्थ और मन्त्र चैतन्य की क्रिया तथा बाह्य एवं आभ्यन्तर योनि मुद्रा का ज्ञान आवश्यक है। इसके बिना चिरकाल तक सिद्धि सम्भव नहीं है । ये सब गुरुगम्य ज्ञान है जिसने विधिपूर्वक साधना करके अनुभूति प्राप्त की है, वही मन्त्र रहस्य का ज्ञान प्राप्त कर पाता है और वह श्रद्धालु उपासकों को भी उपकृत करने में समर्थ होता है । अतः सम्प्रदाय पूर्वक गुरुपरम्परा से ही इस साधना का रहस्य प्राप्त होता है । किसी भक्त के अनेक जन्मों के पुण्यपुञ्ज जब एक साथ उदित होते हैं तो इस साधना में श्रद्धा उत्पन्न होती है । तदनन्तर जब भक्त उत्कट उत्कण्ठा से उस विश्वपति से प्रार्थना करता है तो

अशरणशरण अकारणकरुण भगवान् विश्वनाथ स्वयं उसका मार्गदर्शन करते हैं, तथा वे गुरुरूप में शक्तिपात के द्वारा साधना में प्रवृत्त कर देते हैं । शनैः शनैः उसके सांसारिक राग द्वेषादि दोष दूर हो जाते हैं और शेष में वह स्वरूप साक्षात्कार से कृतकृत्य हो जाता है । इस साधना से भोग और योग दोनों प्राप्त होते हैं । "**श्रीसुन्दरी सेवनतत्पराणां भोगश्च योगश्च करस्थ एव ।**" अतः अपने जीवन का कुछ समय देकर साधना में प्रवृत्त होना चाहिये।

भुक्तिमुक्ति प्रदायक श्रीयन्त्र

'श्रीविद्या' अर्थात् राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी देवी के यन्त्र को 'श्रीयन्त्र' या 'श्रीचक्र' कहते हैं । इसमें जो 'श्री' शब्द है वह 'श्रीविद्या' का वाचक है और 'चक्र' शब्द, चक्रस्वरूप यन्त्र का । केवल यही एक ऐसा यन्त्र है (चक्र है) जो समस्त ब्रह्माण्ड का प्रतीक है । यह श्रीविद्यारूप महात्रिपुरसुन्दरी का आराधनास्थल है । यह उनका दिव्य धाम है, दिव्य रथ है । इसमें सभी वर्णों के, सभी आश्रमों के, सभी सम्प्रदायों के और सभी प्रकार के अधिकारी, उपासक रूप में प्रविष्ट हो सकते हैं । श्रीयन्त्र का रेखांकन देशी-विदेशी सभी रेखा गणितज्ञों को आश्चर्यचकित किये हुए है । "श्रीयन्त्र" शिव और शिवा दोनों का एक शरीर है । दोनों सर्वथा अभिन्न हैं "श्रीचक्रंशिवयोर्वपुः"। श्रीचक्र में ४ त्रिकोण ऊर्ध्वमुख (ऊपर) और ५ त्रिकोण साधक की ओर अधोमुख (नीचे) होते हैं। इनको मिलाकर शिव-शक्तिमय नव त्रिकोण बनते हैं। अंकशास्त्र के अनुसार ९ अंक पूर्णांक माना गया है। ९ का किसी भी संख्या के साथ गुणनफल करने पर संयुक्तांक ९ ही रहता है । अतः यह पूर्णता का द्योतक है । श्रीचक्र में ९ आवरण होते हैं

जिनका 'आवरण पूजन' होता है । उन ९ आवरणों में -

प्रथम आवरण - इसे 'त्रैलोक्य मोहन' कहा जाता है । इसमें ४ द्वार और तीन रेखाएँ हैं । तीनों रेखाओं में प्रथम रेखा में - १० देवियों का निवास, द्वितीय रेखा में - अष्टमातृकाओं का निवास एवं तृतीय रेखा में - १० शक्तियों का निवास रहता है ।

द्वितीय आवरण - इस आवरण का नाम 'सर्वाशापरिपूरक चक्र' है। इसमें षोडशदल होते हैं, और इन षोडश दलों में षोडश नित्य कलाओं की पूजा होती है ।

तृतीय आवरण - इसका नाम 'सर्वसंक्षोभण चक्र' है । इसमें अष्टदल कमल हैं और आठ देवियों की पूजा की जाती है ।

चतुर्थ आवरण - इस आवरण को 'सर्वसौभाग्यदायक' कहा जाता है । इसमें १४ कोण होते हैं, और १४ शक्तियों का निवास रहता है ।

पञ्चमावरण - इस चक्र का नाम 'सर्वार्थसाधक' है । इसमें १० कोण बाहर होते हैं । इसे 'बहिर्दशार चक्र' भी कहते हैं । इसमें १० देवियों का निवास रहता है एवं उनकी पूजा होती है।

षष्ठावरण - इस आवरण का नाम 'सर्वरक्षाकर चक्र' है । इसके भीतर १० कोण होते हैं । इसे 'अन्तर्दशार चक्र' भी कहते हैं । इसमें १० देवियों का निवास रहता है ।

सप्तमावरण - इस आवरण को 'सर्वरोगहर' कहा जाता है । इसमें आठ कोण होते हैं और आठ देवियों की पूजा की जाती है।

अष्टमावरण - यह चक्र 'सर्वसिद्धिप्रद' नाम से जाना जाता है। यह त्रिकोणात्मक होता है इसमें चार आयुध देवियाँ - वाणिनी, चापिनी, पाशिनी और अङ्कुशिणी का निवास रहता है । तीन देवी तीन कोणों पर रहती हैं और एक त्रिकोण के बीच में केन्द्र स्थान

होता है, जिसे बिन्दु कहा जाता है। इन आयुध देवियों के साथ बिन्दु स्थान में - कामेश्वरी, वज्रेश्वरी तथा भगमालिनी इन तीन शक्तियों की भी पूजा की जाती है ।

नवम आवरण - इसे 'सर्वानन्दमय' कहा जाता है । सभी शक्तियों में प्रधान ललिता महात्रिपुरसुन्दरी इसी में वास करती हैं। उनकी पूजा यहीं की जाती है । इस प्रकार ये 'श्रीचक्र' की शक्तियाँ हैं ।

भगवती के पादपद्मों में निष्ठा रखने वाले हम सभी शिष्यों की वर्षों से चली आ रही प्रार्थना को करुण हृदय परमूज्य गुरुदेव ने स्वीकार कर भगवती की अर्चना में आने वाली दुरुहताओं के अपहरणार्थ **श्रीविद्या-सपर्या** (खड्गमाला सहित) नामक ग्रन्थ प्रसाद स्वरूप उपलब्ध करवाकर कृपा की है ।

स्वामी सदानन्द सरस्वती
श्रीशारदापीठम्, द्वारका

विषयानुक्रमणिका:

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः

श्रीमहागणपतये नमः

ॐ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः

श्रीविद्या-सपर्या

।। प्रथमखण्डः ।।

यागमन्दिरप्रवेशादिचक्रपूजान्तम् ।

निर्वर्तितनित्यक्रियः पूजामारभेत्

आचमन, प्राणायाम

ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।

ॐ गोविन्दाय नमः। हस्तप्रक्षालनम् ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरःशुचिः।।

ब्रह्मविद्यासम्प्रदायगुरुस्तोत्रम् ।

आब्रह्मलोकादाशेषादालोकालोकपर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम् ।।

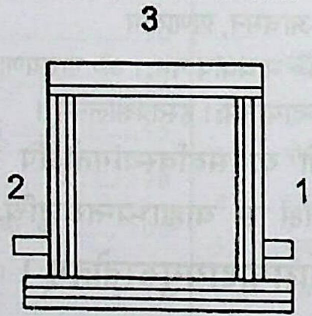
ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः। सर्वोपप्लवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो ब्रह्माहमस्मि, सोऽहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि ।

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीयपञ्चकं
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ॥
नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिञ्च तत्पुत्रपराशरञ्च ।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्॥
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादञ्च हस्तामलकञ्च शिष्यम् ।
तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् संततमानतोऽस्मि ॥

।। यागमन्दिर प्रवेशः ।।



ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं भद्रकाल्यै नमः ।
(द्वारस्य दक्षशाखायां) दाहिने भाग में ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं भैरवाय नमः ।
(द्वारस्य वामशाखायां) वाम भाग में ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं लम्बोदराय नमः ।
(द्वारस्य उर्ध्वशाखायां) ऊर्ध्वभाग में ।
इति द्वारदेवताः सम्पूज्य ।

।। तत्त्वाचमनम् ।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसकहलह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः सकलह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ।

।। गुरुपादुकामन्त्रः ।।

(गुरु पादुका मन्त्र के उच्चारण के साथ मृगी मुद्रा द्वारा सिर पर गुरु, परमगुरु और परमेष्ठिगुरु का पूजन करना है । अमुकानन्दनाथ के स्थान पर नाम लेना चाहिए ।)



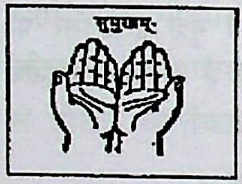
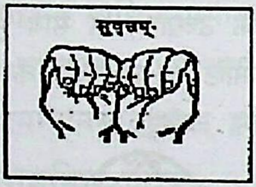
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोऽहं स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

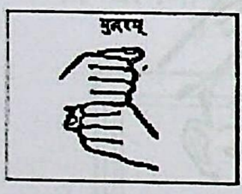
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, सोऽहं हंसः शिवः, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोऽहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः, अमुका-नन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

इति मृगीमुद्रया गुरुपादुकामुच्चार्य, सुमुख-सुवृत्त-चतुरश्रमुद्गर-योन्याख्याभिः पञ्चभिर्मुद्राभिः श्रीगुरून् वामभुजे प्रणम्य, गणपतिमूलेन "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणतपये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा" स्वदक्षभुजे योनिमुद्रया महागणपतिं प्रणमेत् ।

(इसके बाद पञ्च मुद्रा सुमुख, सुवृत्त, चतुरश्र, मुद्गर और योनि मुद्रा दिखाकर श्रीगुरु देवों को अपनी वाम भुजा में और महागणपति को गणपति के मूलमन्त्र से दायी भुजा में योनिमुद्रा से प्रणाम करें।)




।। घण्टापूजा ।।

(बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त और चतुरश्र मण्डल बनाकर उसकी पूजन करें। तदनन्तर उसके ऊपर घण्टा रखें। गन्धाक्षतपुष्पों द्वारा घण्टा की पूजन करें।)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जगध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा :

मन्त्र से घण्टा पूजन कर घण्टानाद करते हुए निम्न मन्त्र पढ़ें -

हे घण्टे सुस्वरे रम्ये घण्टाध्वनिविभूषिते ।
वादयन्ति परानन्दे घण्टादेवं प्रपूजयेत् ॥
आगमार्थञ्च देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम् ।
कुर्यात् घण्टारवं तत्र देवताह्वानलाञ्छनम् ॥
इति घण्टानादं कृत्वा ।

सर्वप्रथम भगवान् विष्णु का ध्यान करना चाहिए -

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

मूलेन प्राणानायम्य । देशकालौ संकीर्त्य -

एकवारं मूलमन्त्रेणेडया (वामनासया) वायुमापूर्य कुम्भके चतुर्वारं मूलं पठित्वा द्विवारं मूलमुच्चरन् पिंगलया (दक्षनासया) रेचयेत् इति ।

सर्वप्रथम एक बार मूलमन्त्र बोलते हुए वाम नासिका में श्वास भरें, फिर कुम्भक में चार बार मूलमन्त्र का उच्चारण करके दो बार मन्त्र बोलकर दाहिनी नासिका से छोड़ें ।

इसके बाद मूलमन्त्र से प्राणायाम करके देशकाल और नाम का उच्चारण करते हुए संकल्प करें -

।। सङ्कल्पः ।।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे अमुकक्षेत्रे शालिवाहनशके- संवत्सरे- अयने- ऋतौ- मासे- पक्षे- तिथौ- वासरे- नक्षत्रे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे/सूर्ये अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं तत्तद्राशिस्थानस्थितेषु सत्सु ।

।। देव्यष्टाङ्गमानसङ्कल्पः ।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वस्ति श्रीमदादिगुरोः परशिवस्याज्ञया प्रवर्तमान-शाक्तमानेन षट्त्रिंशत्तत्वात्मकसकलप्रपञ्चसृष्टिस्थितिसंहारतिरोधानानुग्रह-कारिण्याः उर्ध्वभ्रूविभ्रमे नं प्राणतत्त्वमहाकल्पे दं चक्षुस्तत्वकल्पे थं त्वक्तत्त्वमहायुगे खं सदाशिवतत्त्वयुगे दं चक्षुस्तत्त्वपरिवृतौ- शक्तितत्त्व-संवत्सरे- ऋतौ- नित्यमासे- तिथिनित्यायां- दिने कालनित्यायां- तत्त्वदिने नक्षत्रे-योगे- करणे- नाथवासरे उदयघटिकायां पर्वयोगविद्यायां एवाङ्गुणगण-विशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ मम श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीराजराजेश्वरी-पराभट्टारिकाम्बाप्रीत्यर्थं यथासंभवद्रव्यैः यथाशक्ति सपर्याक्रमं निर्वर्तयिष्ये । तेन परमेश्वरं प्रीणयामि ।

आत्मानम् अलङ्कृत्य ताम्बूलेन सुरभिलवदनः सन् प्रमुदितचित्तः

शिवोऽहं इति भावयेत् ।आत्मानं गन्धपुष्पाक्षतैरलङ्कृत्य-

ॐ आत्मने नमः । ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ जीवात्मने नमः । ॐ ज्ञानात्मने नमः । ॐ परमात्मने नमः । पुष्पं शिरषि धारयेत् -

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवस्सनसतनः

त्यजेद् ज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन् पूजयेत्।

संकल्प करके ताम्बूल या पञ्चतिक्त (जातीपत्र, जातीफल, लौंग, इलायची और कर्पूर) से अपने मुख को सुगन्धित कर चन्दन धारण करके प्रमुदित मन से ''शिवोऽहं'' की भावना दृढ़ करें ।

।। आसनपूजा ।।

आसनमास्तीर्य दक्षिणहस्ते जलमादाय ''सौः'' इति द्वादशवारमभिमन्त्र्य तज्जलेन मूलमन्त्रेण आसनं प्रोक्षयेत् ।।

आसन शुद्धि के लिये दाहिने हाथ में जल लेकर बारह बार ''सौः'' का जप कर उस जल को मूलमन्त्र पढ़कर आसन पर छोड़ें। इसके बाद विनियोग करें -

अस्य श्रीआसनमहामन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः ।

ओं पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

ॐ योगासनाय नमः, ॐ वीरासनाय नमः, ॐ शरासनाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ।।

इति पुष्पाक्षतैः आसनमभ्यर्च्य आसने उपविशेत् ।

इससे फूल-अक्षत से आसन की पूजा कर उस पर बैठ जायें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय द्वीपनाथाय नमः ।

इति भूमौ पुष्पाञ्जलिं विकिरेत्

इससे भूमि पर पुष्पाञ्जलि डाल दें ।

।। देहरक्षा ।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष ।

इति देहे त्रिः व्यापकं कृत्वा - (तीन बार व्यापक न्यास करके)

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः - दक्षबाहौ (दक्षिण बाहु में)

ॐ गं गणपतये नमः - वामबाहौ (वाम बाहु में)

ॐ दुं दुर्गायै नमः - दक्षोरौ (दक्षिण जांघ में)

ॐ वं वटुकाय नमः - वामोरौ (वाम जांघ में)

ॐ यां योगिनीभ्यो नमः - पादयोः (पैरों में)

ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः - नाभौ (नाभि में)

ॐ पं परमात्मने नमः - हृदये (हृदय में)

(निम्न मन्त्रों से अपने चारो ओर वह्नि प्राकार की भावना करें)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुः श्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके ।
मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा ।

इति परितो वह्निप्राकारं विभाव्य भूर्भुवस्सुवरों इति दिग्बन्धः ।
(इससे दिग्बन्धन करें)

परमामृतवर्षेण प्लावयन्तं चराचरम् ।
संचिन्त्य परमद्वैतभावनाऽमृतसेवया ॥
मोदमानो विस्मृतान्यविकल्पविभवभ्रमः ।
चिदम्बुधिमहाभङ्गच्छिन्नसंकोचसङ्कटः ॥
समुल्लसन्महानादलोकनोऽन्तर्मुखायनः ।
मन्त्रमय्या मनोवृत्त्या परमाद्वैतमीहते ॥

सपर्या सर्वभावेषु सा परा परिकीर्तिता ।
अपरा तु बहिर्वक्ष्यमाणचक्रार्चनाविधिः ॥
परापरास्य बाह्यस्य चिद्व्योम्नि विलयः स्मृता।
इत्थं त्रिधा समुद्दिष्टा बाह्याभ्यन्तरभेदतः ॥

एवं भावयित्वा (इस प्रकार की भावना करके -)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसंप्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भ-रहस्यातिरहस्यपरापरातिरहस्ययोगिनीदेवताभ्यो नमः ।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा (इस प्रकार पुष्पाञ्जलि अर्पित करके -)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रः अस्त्राय फट् - इति अस्त्रमन्त्रेण मुहुरावृत्तेन अङ्गुष्ठादिकनिष्ठिकान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे च व्यापकं कुर्यात् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रः अस्त्राय फट् - इस मन्त्र से अंगुष्ठसे कनिष्ठा तक करतल एवं करपृष्ठ में केहुनी सहित देह में व्यापक न्यास आठ बार पहले आगे ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर तक फिर दांये ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर तक फिर पीछे ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर तक फिर बांये भी ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर तक व्यापक न्यास करके श्रीचक्रपूजन के लिए निम्नाङ्कित प्रार्थना करें -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक ।
अनुज्ञां देहि भगवन् श्रीचक्रयजनाय मे ॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

।। लघुप्राणप्रतिष्ठा ।।

श्रीयन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा करके । पुष्प अर्पित करें ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ओं हंसः सोऽहं, सोऽहं हंसः शिवः, श्रीचक्रस्य प्राणा इह प्राणाः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं आं ह्रीं क्रों श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः ।

सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणा इहैवागत्य अस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं असुनीते पुरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम् । ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नस्स्वस्ति ।

।। मन्दिरपूजा ।।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः ।
२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्नद्वीपाय नमः ।
३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नानावृक्षमहोद्यानाय नमः ।
४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कल्पवाटिकायै नमः ।
५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं संतानवाटिकायै नमः ।
६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हरिचन्दनवाटिकायै नमः ।
७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मन्दारवाटिकायै नमः ।
८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पारिजातवाटिकायै नमः ।
९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कदम्बवाटिकायै नमः ।
१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पुष्परागरत्नप्राकाराय नमः ।
११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मरागरत्नप्राकाराय नमः ।
१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गोमेधकरत्नप्राकाराय नमः ।
१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वज्ररत्नप्राकाराय नमः ।
१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वैडूर्यरत्नप्राकाराय नमः ।
१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्रनीलरत्नप्राकाराय नमः ।
१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मुक्तारत्नप्राकाराय नमः ।
१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मरकतरत्नप्राकाराय नमः ।
१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विद्रुमरत्नप्राकाराय नमः ।
१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं माणिक्यमण्टपाय नमः ।
२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सहस्रस्तम्भमण्टपाय नमः ।
२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमृतवापिकायै नमः ।

२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आनन्दवापिकायै नमः ।

२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विमर्शवापिकायै नमः ।

२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बालातपोद्गाराय नमः ।

२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चन्द्रिकोद्गाराय नमः ।

२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महाशृङ्गारपरिघायै नमः ।

२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महापद्माटव्यै नमः ।

२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चिन्तामणिमयग्रहराजाय नमः ।

२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय नमः ।

३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दक्षिणाम्नायमयदक्षिणद्वाराय नमः ।

३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पश्चिमाम्नायमयपश्चिमद्वाराय नमः ।

३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उत्तराम्नायमयोत्तरद्वाराय नमः ।

३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रत्नप्रदीपवलयाय नमः ।

३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मणिमयमहासिंहासनाय नमः ।

३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्ममयैकमञ्चपादाय नमः ।

३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुमयैकमञ्चपादाय नमः ।

३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रुद्रमयैकमञ्चपादाय नमः ।

३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईश्वरमयैकमञ्चपादाय नमः ।

३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सदाशिवमयैकमञ्चफलकाय नमः ।

४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसतूलिकातल्पाय नमः ।

४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसतूलिकामहोपधानाय नमः ।

४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कौसुम्भास्तरणाय नमः ।

४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महावितानकाय नमः ।

४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महामायावनिकायै नमः ।

इति चतुश्चत्वारिंशन्मन्दिरमन्त्रैः तत्तदखिलं भावयन्कुसुमाक्षतैरभ्यर्चयेत् ।

(इन चौवालिस मन्त्रों से फूल अक्षत द्वारा भावनापूर्वक मन्दिर पूजन करें)

।। दीपपूजा ।।

स्वदक्षभागे गन्धपुष्पाक्षतादीन्निधाय दीपानभितः प्रज्वाल्य ।
घृतदीपो दक्षिणे स्यात्तैलदीपस्तु वामतः ।
सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः ॥
(दक्षवामभागौ देव्या एव)

घी का सफेद वर्तिका वाला दीपक देवी के दक्षिण भाग में और तेल का लाल वर्तिका वाला दीपक देवी के वाम भाग में जलाना चाहिये । फूल, अक्षत, चन्दन आदि उस स्थान पर रखकर दीप जलाना चाहिये । और निम्न मन्त्र से पुष्पाञ्जलि दें -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा ।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावत्प्रज्वल सुस्थिरा ॥
इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

मूलेन चक्रमध्ये पुष्पाञ्जलिं विकीर्य, मूलत्रिखण्डेन स्वाग्रवामदक्षकोणेषु पुष्पाञ्जलीन्दद्यात् ।

(दीप पूजन के पश्चात् मूलमन्त्र से श्रीचक्र में पुष्पाञ्जलि देकर मूलमन्त्र के तीनों खण्डों से क्रमशः अपने आगे, बांये और दाहिने कोणों में पुष्पाञ्जलि अर्पित करें)

***

।। द्वितीयखण्डः ।।

।। भूतशुद्ध्यादि विघ्नोत्सारणान्तम् ।।

।। भूतशुद्धिः ।।

दाहिनी नासिका से श्वांस खींचते हुए यह भावना करें कि मूलाधार में स्थित जीवात्मा सुषुम्नामार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश कर परमशिव के साथ एकाकार हो गया है, और बायीं नासिका से श्वांस छोड़ें । यह कार्य नीचे लिखे हुए मन्त्र का जप करते हुए करें -

श्वाससमीरं पिङ्गलया अन्तराकृष्य -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलशृङ्गाटकात् सुषुम्नापथेन जीवशिवं परमशिवपदे योजयामि स्वाहा - इति मन्त्रेण मूलाधारस्थितं जीवात्मानं सुषुम्नावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा परमशिवेन एकीभूतं विभाव्य इडया वायुं रेचयेत् ।

अब निम्न मन्त्र से वायीं नासिका से श्वांस खींचते हुए अपने शरीर के शोषित होने की भावना के साथ दाहिनी नासिका से श्वांस छोड़ें ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं १६ (इडया पूरयित्वा) सङ्कोचशरीरं शोषय शोषय स्वाहा - इति निजशरीरं शोषितं विभाव्य पिङ्गलया रेचयेत् ।

अब निम्न मन्त्र से दाहिनी नासिका से श्वांस खींचते हुए शरीर से भस्मीभूत होने की भावना के साथ वायीं नासिका से श्वांस छोड़ें ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं १६ (पिङ्गलया पूरयित्वा) सङ्कोचशरीरं दह दह पच पच स्वाहा - इति प्लुष्टं भस्मीकृतं च विभाव्य इडया रेचयेत् ।

निम्न मन्त्र से बायीं नासिका से श्वांस खींचते हुए सहस्त्रार स्थित चन्द्रमण्डल से निस्सृत अमृतरस से उस भस्म के सिक्त होने की भावना करते हुए दक्षिण नासिका से श्वांस छोड़े ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं १६ (इडया पूरयित्वा) परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा - इति तद्भस्म सहस्त्रारेन्दुमण्डलविगलमृतरसेन सिक्तं च

विभाव्य पिङ्गलया रेचयेत् ।

निम्न मन्त्र से दक्षिण नासिका से श्वांस खींचते हुए उस भस्म से दिव्यशरीर के उत्पन्न होने की भावना के साथ वाम नासिका से श्वांस छोड़ें ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं १६ (पिङ्गलया पूरयित्वा) शाम्भवशरीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा - इति तद्भस्मनो दिव्यशरीरमुत्पन्नं विभाव्य इडया रेचयेत् ।

परमशिव के साथ जीव का एकाकार होकर सुषुम्ना मार्ग से पुनः मूलाधार में स्थित होने की भावना के साथ वाम नासिका से श्वांस खींचकर दक्ष नासिका से छोड़ें । मन्त्र -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः सोऽहं (इडया पूरयित्वा) अवतर अवतर शिवपदात् जीव सुषुम्नापथेन प्रविश मूलश्रृङ्गाटकं उल्लसोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोऽहं स्वाहा ।

इति परमशिवेनैकीकृतं जीवं पुनः सुषुम्नावर्त्मना मूलाधारे स्थापितं चिन्तयेत् ।

।। आत्मप्राणप्रतिष्ठा ।।

हृदि दक्षकरतलं निधाय-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं सोऽहं-इति त्रिः पठेत् ।

अथ मूलेन षोडशधा दशधा त्रिधा वा प्राणानायम्य ।

हृदय पर दाहिना हाथ रखकर आं सोऽहं - मन्त्र तीन बार पढ़ें। इसके बाद मूलमन्त्र से सोलह बार, दस बार या तीन बार प्राणायाम करें ।

।। विघ्नोत्सारणम् ।।

प्राणायाम के बाद हाथ में सरसों,तिल और अक्षत लेकर निम्न मन्त्रों को पढते हुए उक्त वस्तुओं को चारों दिशाओ में बिखेरते हुए विघ्नोत्सारण करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
ॐ अपक्रामन्तु भूतानिपिशाचास्सर्वतोदिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

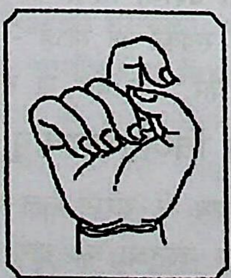
इति मन्त्रमुच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलाघातत्रयकरास्फोटनत्रयक्रूर-दृष्ट्यवलोकनपूर्वकतालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत् ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर बायें पैर से पृथ्वी पर तीन बार आघात करें, तीन बार ताली बजाकर क्रूर दृष्टि से हर ओर देखते हुए दाहिनी तर्जनी और मध्यमा से बायें हाथ पर तीन सशब्द आघात करें ।

अथ नमः इति अङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चारयन् अङ्कुशमुद्रया शिखां बन्धीयात् ।

अङ्कुश मुद्रा दो प्रकार से बनायी जा सकती है - पहले अङ्गुष्ठ को ऊपर मोड़ते हुये मुट्ठी बांध ले फिर तर्जनी को सीधा कर मोड़ ले तो अङ्कुश मुद्रा बन जायेगी और इसी के साथ यदि मध्यमा को सीधा रखें तो भी अङ्कुश मुद्रा बनती है ।

इसके बाद नमः मन्त्र से अङ्कुश मुद्रा से शिखा बन्धन करें ।



11. अङ्कुश मुद्रा

।। तृतीयः खण्डः ।।

न्यासः

मातृकान्यासः

विनियोगः

अस्य श्रीमातृकासरस्वतीन्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्रीछन्दः, श्रीमातृकासरस्वती देवता । हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, बिन्दवः कीलकानि, मम श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः - शिरसि ।

ॐ गायत्री छन्दसे नमो - मुखे ।

ॐ ॐ मातृका सरस्वती देवतायै नमो - हृदि ।

ॐ हल्भ्यो बीजेभ्यो नमो - गुह्ये ।

ॐ स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः - पादयोः ।

ॐ बिन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमो - नाभौ ।

ॐ विनियोगाय नमः - सर्वाङ्गे ।

सर्वमातृकया सर्वाङ्गे अञ्जलिना त्रिर्व्यापकं कुर्यात् ।

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं (त्रिः) ।

करन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

।। हृदयादिन्यासः ।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अःअस्त्राय फट्।

भूर्भुवस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः ।

।। ध्यानम् ।।

पञ्चाशद्वर्णभैदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षोदेशां
भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ।
अक्षस्त्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणामब्जसंस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ॥

लमित्यादि पञ्चपूजां कृत्वा ।

ॐ लं पृथिवीतत्त्वात्मिकायै श्रीमातृकादेव्यै गन्धं परिकल्पयामि- अङ्गुष्ठ कनिष्ठा से

ॐ हं आकाशतत्त्वात्मिकायै श्रीमातृकादेव्यै पुष्पं परिकल्पयामि - अङ्गुष्ठ तर्जनी से

ॐ यं वायुतत्त्वात्मिकायै श्रीमातृकादेव्यै धूपं परिकल्पयामि - अङ्गुष्ठ तर्जनीमूल से

ॐ रं वह्नितत्त्वात्मिकायै श्रीमातृकादेव्यै दीपं परिकल्पयामि - अङ्गुष्ठ मध्यमा से

ॐ वं अमृततत्त्वात्मिकायै श्रीमातृकादेव्यै अमृतनैवेद्यं परिकल्पयामि - अङ्गुष्ठ अनामिका से

ॐ सं सर्वतत्त्वात्मिकायै श्रीमातृकादेव्यै ताम्बूलादिसर्वोपचारान् परिकल्पयामि - सभी अङ्गुलियों से

बहिर्मातृका

मातृकाः त्रितारीबालापूर्विकाः 'नमः हंसः' इत्यन्ताः स्वाङ्गेषु न्यसेत् ।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अं नमः हंसः (शिरसि)
२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः आं नमः (मुखवृत्ते)
३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः इं नमः हंसः (दक्षनेत्रे)
४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ईं नमः हंसः (वामनेत्रे)
५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः उं नमः हंसः (दक्षकर्णे)
६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऊं नमः हंसः(वामकर्णे)
७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऋं नमः हंसः (दक्षनासापुटे)
८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॠं नमः हंसः (वामनासापुटे)
९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऌं नमः हंसः (दक्षकपोले)
१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॡं नमः हंसः (वामकपोले)
११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः एं नमः हंसः (ऊर्ध्वोष्ठे)
१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं नमः हंसः (अधरोष्ठे)
१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ओं नमः हंसः (ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ)
१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः औं नमः हंसः (अधोदन्तपंक्तौ)
१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अं नमः हंसः (जिह्वाग्रे)
१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अः नमः हंसः (कण्ठे)
१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः कं नमः हंसः (दक्षबाहुमूले)
१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः खं नमः हंसः (दक्षकूर्परे)
१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः गं नमः हंसः (दक्षमणिबन्धे)
२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः घं नमः हंसः (दक्षकाराङ्गुलिमूले)

२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ङं नमः हंसः (दक्षकराङ्गुल्यग्रे)
२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः चं नमः हंसः (वामबाहुमूले)
२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः छं नमः हंसः (वामकूर्परे) वाम
२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः जं नमः हंसः (वाममणिबन्धे)
२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः झं नमः हंसः (वामकराङ्गुलिमूले)
२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ञं नमः हंसः (वामकराङ्गुल्यग्रे)
२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः टं नमः हंसः (दक्षोरुमूले)
२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ठं नमः हंसः (दक्षजानुनि)
२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः डं नमः हंसः (दक्षगुल्फे)
३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ढं नमः हंसः (दक्षपादाङ्गुलिमूले)
३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः णं नमः हंसः (दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)
३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः तं नमः हंसः (वामोरुमूले)
३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः थं नमः हंसः (वामजानुनि)
३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः दं नमः हंसः (वामगुल्फे)
३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः धं नमः हंसः (वामपादाङ्गुलिमूले)
३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः नं नमः हंसः (वामापादाङ्गुल्यग्रे)
३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः पं नमः हंसः (दक्षपार्श्वे)
३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः फं नमः हंसः (वामपार्श्वे)
३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः बं नमः हंसः (पृष्ठे)
४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः भं नमः हंसः (नाभौ)
४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः मं नमः हंसः (जठरे)
४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः यं नमः हंसः (हृदये)
४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः रं नमः हंसः (दक्षकक्षे)
४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः लं नमः हंसः (गलपृष्ठे)
४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः वं नमः हंसः (वामकक्षे)
४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः शं नमः हंसः (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं)
४७. ॐ ऐंह्रींश्रींऐंक्लींसौः षं नमः हंसः (हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं)

४८. ॐ ऐंह्रींश्रींऐंक्लीं सौः सं नमः हंसः (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं)
४९. ॐ ऐंह्रींश्रींऐंक्लीं सौः हं नमः हंसः (हृदयादिवामपादागुल्यन्तं)
५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ळं नमः हंसः (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं)
५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क्षं नमः हंसः (कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं)

।। अन्तर्मातृका ।।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अं नमः हंसः आं नमः हंसः इं नमः हंसः ईं नमः हंसः उं नमः हंसः ऊं नमः हंसः ऋं नमः हंसः ॠं नमः हंसः ऌं नमः हंसः ॡं नमः हंसः एं नमः हंसः ऐं नमः हंसः ओं नमः हंसः औं नमः हंसः अं नमः हंसः अः नमः हंसः ।
कण्ठे विशुद्धिचक्रे षोडशदलकमले ।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः कं नमः हंसः खं नमः हंसः गं नमः हंसः घं नमः हंसः ङं नमः हंसः चं नमः हंसः छं नमः हंसः जं नमः हंसः झं नमः हंसः ञं नमः हंसः टं नमः हंसः ठं नमः हंसः। हृदये अनाहते द्वादशकमले ।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः डं नमः हंसः ढं नमः हंसः णं नमः हंसः तं नमः हंस थं नमः हंस दं नमः हंसः धं नमः हंस नं नमः हंसः पं नमः हंसः फं नमः हंसः ।
नाभौ मणिपूरे दशदलकमले ।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः बं नमः हंसः भं नमः हंसः मं नमः हंसः यं नमः हंसः रं नमः हंसः लं नमः हंसः ।
लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने षड्दल कमले ।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः वं नमः हंसः शं नमः हंसः षं नमः हंसः सं नमः हंसः ।
गुदोपरि मूलाधारे चतुर्दशदलकमले ।

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हं नमः हंसः क्षं नमः हंसः ।
भ्रुवोर्मध्ये आज्ञाचक्रे द्विदले ।

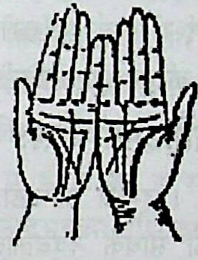
७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः अं नमः हंसः आं नमः हंसः इं नमः हंसः ई नमः हंसः उं नमः हंसः ऊं नमः हंसः ऋं नमः हंसः ॠं नमः हंसः ऌं नमः हंसः ॡं नमः हंसः एं नमः हंसः ऐं नमः हंसः ओं नमः हंसः औं नमः हंसः अं नमः हंसः अः नमः हंसः कं नमः हंसः खं नमः हंसः गं नमः हंसः घं नमः हंसः ङं नमः हंसः चं नमः हंसः छं नमः हंसः जं नमः हंसः झं नमः हंसः ञं नमः हंसः टं नमः हंसः ठं नमः हंसः डं नमः हंसः ढं नमः हंसः णं नमः हंसः तं नमः हंसः थं नमः हंसः दं नमः हंसः धं नमः हंसः नं नमः हंसः पं नमः हंसः फं नमः हंसः बं नमः हंसः भं नमः हंसः मं नमः हंसः यं नमः हंसः रं नमः हंसः लं नमः हंसः वं नमः हंसः शं नमः हंसः षं नमः हंसः सं नमः हंस; हं नमः हंसः क्षं नमः हंसः। (५० वर्णाः) मूर्ध्नि सहस्रारे ।

।। करशुद्धिन्यासः ।।

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः (दक्षकरतले)
२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं नमः (तत्पृष्ठे)
३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः (वामकरतले)
५ ॐ ऐ ह्रीं श्रीं आं नमः (तत्पृष्ठे)
६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
७ ॐ ऐं ह्रीं श्री अं नमः (मध्यमयोः)
८ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं नमः (अनामिकयोः)
९ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः (कनिष्ठिकयोः)
१० ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः (अङ्गुष्ठयोः)
११ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं नमः (तर्जन्योः)
१२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः (करतलकरपृष्ठयोः)

।। आत्मरक्षान्यासः ।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष इत्यञ्जलिं हृदये दद्यात् । (हृदय में अञ्जलि मुद्रा से)



।। बालाषडङ्गन्यासः ।।

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हृदयाय नमः ।
२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा ।
३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः शिखायै वषट् ।
४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कवचाय हुम् ।
५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः अस्त्राय फट् ।

।। चतुरासनन्यासः ।।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः देव्यात्मासनाय नमः - पादयोः
२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं हक्लीं हसौः श्रीचक्रासनाय नमः - जान्वोः
३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसैं हस्क्लीं हस्सौः सर्वमन्त्रासनाय नमः-
४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनाय नमः - मूलाधारे

।। वाग्देवतान्यासः ।।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः - शिरसि
२. ॐ ऐंह्रींश्रीं कं खं गं घं ङं क्ल्हीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः- ललाटे

३. ॐ ऐंह्रींश्रीं चं छं जं झं ञं न्क्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः- भ्रूमध्ये
४. ॐ ऐंह्रींश्रीं टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः - कण्ठे
५. ॐ ऐंह्रींश्रीं तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणवाग्देवतायै नमः - हृदये
६. ॐ ऐंह्रींश्रीं पं फं बं भं मं हस्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः-नाभौ
७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः - गुह्ये
८. ॐ ऐंह्रींश्रीं शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौळिनीवाग्देवतायै नमः- मूलाधारे

।। बहिश्चक्रन्यासः ।।

(श्रीचक्र नवचक्रों का है । इनकी अधिष्ठात्री नवचक्रेश्वरी हैं । इस न्यास द्वारा अपने शरीर को साधक नवचक्रात्मक श्रीयन्त्र बनाता है। श्रीयन्त्र के नवचक्रों का न्यास अपने शरीर के नौ अंगों पर किया जाता है)

१. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः चतुरश्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहन-चक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः**- पादयोः
२. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरक-चक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः** - जान्वोः
३. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभण-चक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुर-सुन्दरीदेव्यै नमः** - ऊरुमूलयोः
४. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं हक्लीं हसौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायक-चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसंप्रदाययोगिनी-रूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः** - नाभौ
५. **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसैं हस्क्लीं हसौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधक-चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः** - हृदये

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकर-चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहितानिगर्भयागिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः - कण्ठे

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिाहितरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः - मुखे

८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्रैं हस्क्लरीं हस्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिाहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बा देव्यै नमः - नेत्रयोः

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षड्ङ्गायुधदशशक्ति-सहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः - मूर्ध्नि

।। अन्तश्चक्रन्यासः ।।

(बहिश्चक्रन्यास में श्रीयन्त्र के नवचक्रों का न्यास शरीर के बाहर के अंगों में किया जाता है । किन्तु अन्तश्चक्रन्यास में नवचक्रों का न्यास शरीर के भीतर के चक्रों में किया जाता है ।)

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः चतुरश्रत्रयात्मकत्रैलोक्य-मोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनी-रूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः - अधः सहस्रारे

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरक-चक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः - अधःसहस्रारस्योपरि विषुसंज्ञे षड्दले

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभण-चक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरी देव्यै नमः - मूलाधारे

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हैं हक्लीं हसौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायक-चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसम्प्रदाययोगिनी-रूपायै त्रिपुरवासिनी देव्यै नमः - स्वाधिष्ठाने

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसैं हस्क्लीं हस्सौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधक-चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः- मणिपूरे

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्रा-धिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिाहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनी देव्यै नमः-अनाहते

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्ति सहितरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः- विशुद्धौ

८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्त्रैं हस्क्ल्रीं हस्त्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्रा-धिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितारिहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः-लम्बिकाग्रे

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षड्ङ्गायुधदशशक्तिसहित-परापरातिरहस्ययोगिनीरूपायैमहात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः-आज्ञायां

पुनः आज्ञाचक्रस्य एकैकाङ्गुलोपरि देशे

१ ॐ अं आं सौः नमः - बिन्दौ

२ ॐ ऐं क्लीं सौः नमः - अर्धचन्द्रे

३ ॐ ह्रीं क्लीं सौः नमः - रोधिन्यां

४ ॐ हैं हक्लीं हसौः नमः - नादे

५ ॐ हसैं हस्क्लीं हस्सौः नमः - नादान्ते

६ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लें नमः - शक्तौ

७ ॐ ह्रीं श्रीं सौः नमः - व्यापिकायां

८ ॐ हस्त्रैं हस्क्ल्रीं हस्त्रौः नमः - समनायां

९ ॐ क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं - उन्मनायां

१० ॐ क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं श्रीं

ब्रह्मरन्ध्रे महाबिन्दौ ।। पूर्णाभिषिक्तानां ।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ओं ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं - महाबिन्दौ

।। कामेश्वर्यादिन्यासः ।।

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथनवयोनिचक्रात्मकआत्मतत्त्वसृष्टिकृत्यजाग्रद्दशाधिष्ठायकेच्छाशक्ति वाग्भवात्मकवागीश्वरीस्वरूपमहाकामेश्वरीब्रह्मात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः - मूलाधारे

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथदशारद्वयचतुर्दशारचक्रात्मकविद्यातत्त्वस्थितिकृत्यस्वप्नदशाधिष्ठाय-कज्ञानशक्तिकामराजात्मककामकलास्वरूपमहावज्रेश्वरीविष्णवात्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः - अनाहते

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः सकलह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ अष्टदलषोडशदलचतुरश्रचक्रात्मकशिवतत्त्वसंहारकृत्य सुषुप्तिदशा-धिष्ठायकक्रियाशक्तिशक्तिबीजात्मकपरापरशक्तिस्वरूपमहाभगमालिनी-रुद्रात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः- आज्ञायां

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथसमस्तचक्रात्मकसपरिवार-परमतत्त्वसृष्टिस्थितिसंहारकृत्यतुरीयदशाधिष्ठायकेच्छाज्ञानक्रिया-शान्ताशक्तिवाग्भवकामराजशक्तिबीजात्मकपरमशक्तिस्वरूप-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपरब्रह्मात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः-ब्रह्मरन्ध्रे

।। मूलविद्यान्यासः ।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क नमः - शिरसि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ए नमः - मूलाधारे

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ई नमः - हृदि

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं नमः - दक्षनेत्रे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः - वामनेत्रे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं नमः - भ्रूमध्ये
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं नमः - दक्षश्रोत्रे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं नमः - वामश्रोत्रे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं नमः - मुखे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं नमः - दक्षभुजे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः - वामभुजे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं नमः - पृष्ठे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं नमः - दक्ष जानुनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं नमः - वामजानुनि
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः - नाभौ

अथ ऋष्यादिषडङ्गन्यासं यथोपदेशं कुर्यात् ।

।। श्रीपञ्चदशाक्षरीमन्त्रः ।।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीविद्यात्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्रस्य भगवान् आनन्दभैरव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीविद्या त्रिपुरसुन्दरी देवता,क ए ई ल ह्रीं बीजं, ह स क ह ल ह्रीं शक्तिः, स क ल ह्रीं कीलकम्, श्रीविद्यापरमेश्वरीप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ आनन्दभैरवाय ऋषये नमः-शिरसि। ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमो-मुखे । ॐ श्रीविद्यात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमो-हृदि। ॐ क ए ई ल ह्रीं बीजाय नमो-गुह्ये। ॐ ह स क ह ल ह्रीं शक्तये नमः-पादयोः। ॐ स क ल ह्रीं कीलकाय नमो-नाभौ । ॐ श्रीविद्यापरमेश्वरीप्रसाद-सिद्ध्यर्थे पूजाङ्गन्यासे विनियोगाय नमः-सर्वाङ्गेषु ।

करन्यासः

ॐ कएईलह्रीं-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हसकहलह्रीं-तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सकलह्रीं-मध्यमाभ्यां नमः। ॐ कएईलह्रीं-अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हसकहलह्रीं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ सकलह्रीं-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः

ॐ कएईलह्रीं-हृदयाय नमः। ॐ हसकहलह्रीं-शिरसे स्वाहा। ॐ सकलह्रीं-शिखायै वषट् । ॐ कएईलह्रीं-कवचाय हुम् । ॐ हसकहलह्रीं - नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ सकलह्रीं- अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं
नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट्च्छेखराम् ।
हस्तैरिक्षुधनुः सृणीं सुमशरं पाशं मुदा बिभ्रतीं
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां भजे ॥

पूर्णाभिषिक्तानां श्रीषोडशाक्षरीमन्त्रः

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीषोडशीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः,पंक्तिश्छन्दः, श्रीषोडशाक्षरीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवता, कएईलह्रीं बीजं, सकलह्रीं शक्तिः, हसकहलह्रीं कीलकम्, श्रीराजराजेश्वरीप्रसादसिद्ध्यर्थे पूजाङ्गन्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः-शिरसि । ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमो-मुखे। ॐ श्रीषोडशाक्षरीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमो-हृदि । ॐ कएईलह्रीं बीजाय नमो-गुह्ये । ॐ सकलह्रीं शक्तये नमः-पादयोः।

ॐ हसकहलह्रीं कीलकाय नमो-नाभौ । ॐ श्रीराजराजश्वरी-प्रसादसिद्ध्यर्थे पूजाङ्गन्यासे विनियोगाय नमः- सर्वाङ्गेषु ।

करन्यासः

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐॐ ह्रीं श्रीं-तर्जनीभ्यां नमः । ॐ कएईलह्रीं-मध्यमाभ्यां नमः । ॐ हसकहलह्रीं-अनामिकाभ्यां नमः । ॐ सकलह्रीं-कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अङ्गन्यासः

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः-हृदयाय नमः । ॐॐ ह्रीं श्रीं -शिरसे स्वाहा । ॐ कएईलह्रीं -शिखायै वषट् । ॐ हसकहल ह्रीं- कवचाय हुम्। ॐ सकलह्रीं-नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं-अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

सिद्धिसिद्धवृतरत्नभूमिकाकल्पवृक्षवनवाटिसङ्कुले
नीपवाटिमणिमण्डपेऽरुणे शङ्कराङ्कृतपीठिकामणौ।
आदिपञ्चशिवमञ्चके परे चन्द्रभानुशतकोटिभासुरे
कादिहादिमनुरूपिणीमहं भावयामि परदेवतां शिवाम् ॥

(षोडश्युपासकानां विशेषन्यासः)

।। श्रीषोडशाक्षरीन्यासः ।।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः दक्षमध्यमानामिकाभ्यां शिरसि न्यसेत् ।

तत्र तां दीपाभां स्त्रवत्सुधारसां महासौभाग्यदां ध्यात्वा-

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः ॐ महासौभाग्यं मे देहि परमसौभाग्यं दण्डयामि। सौभाग्यदण्डिन्या मुद्रया वामकर्णसंवेष्टानपूर्वकं आमस्तकचरणं वामाङ्गे न्यसेत्।

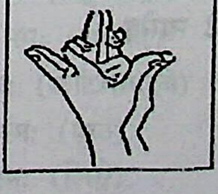
सौभाग्यदण्डिनी मुद्रा



३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- मम शत्रून्निगृहणामि । रिपुजिह्वाग्रयामुद्रया वामपादाधो न्यसेत्।



४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- त्रैलोक्यस्याहङ्कर्ता। त्रिखण्डयामुद्रयामुद्रया फाले न्यसेत् ।



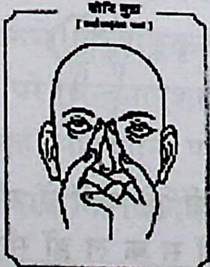
५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- त्रिखण्डयामुद्रया मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत्।

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- त्रिखण्डयामुद्रया दक्षकर्णादिवामकर्णान्तं मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत्।

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- त्रिखण्डया गलादूर्ध्वमामस्तकं न्यसेत्।

८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- त्रिखण्डयामुद्रया मस्तकात्पादपर्यन्तं पादादामस्तकं च न्यसेत् ।

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- योनिमुद्रया मुखे न्यसेत् ।



१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः-योनिमुद्रया ललाटे न्यसेत् ।

सम्मोहनन्यासः

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- मूलविद्यां स्मृत्वा तत्प्रभया जगदरुणं विभावयन् अनामिकां मूर्ध्नि त्रिः परिभ्राम्य।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- ब्रह्मरन्ध्रे- अंगुष्ठानामिके न्यसेत् ।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- मणिबन्धद्वये अङ्गुष्ठानामिके न्यसेत् ।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- फाले अङ्गुष्ठानामिके न्यसेत् ।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- शाक्ततिलकं धारयेत् ।

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः- नमस्कुर्यात् ।

संहारन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः (पादयोः)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः (जङ्घयोः)

ॐ ऐं ह्री श्रीं क्लीं नमः (जान्वोः)

ॐ ऐं ह्री श्रीं ऐं नमः (कटिभागद्वये)

ॐ ऐं ह्री श्रीं सौः नमः (पृष्ठे)

ॐ ऐं ह्री श्रीं ओं नमः (लिङ्गे)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः (नाभौ)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः (पार्श्वयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं नमः (स्तनयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं नमः (अंसयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं नमः (कर्णयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः (मूर्ध्नि)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमः (मुखे)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः (नेत्रयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः (कर्णयुगसन्निधौ)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः (कर्णवेष्टनयोः)

सृष्टिन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः (ब्रह्मरन्ध्रे)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः (फाले)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः (नेत्रयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमः (कर्णयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः (नासापुटयो)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं नमः (गण्डयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः (दंतपंक्तौ)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः (ओष्ठयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं नमः (जिह्वायाम्)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं नमः (कण्ठे)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं नमः (पृष्ठे)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः (सर्वाङ्गे)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमः (हृदि)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः (स्तनयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः (उदरे)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः (लिङ्गे)

स्थितिन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः (अङ्गुष्ठयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः (तर्जन्योः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः (मध्यमयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमः (अनामिकयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः (कनिष्ठिकयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं नमः (मूर्घ्नि)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः (मुखे)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः (हृदि) .
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं नमः (नाभेरापादद्वयम्)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं नमः (कण्ठादिनाभ्यन्तम्)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं नमः (मूर्धादिकण्ठान्तम्)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः नमः (पदाङ्गुष्ठयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमः (पादतर्जन्योः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः (पादमध्यमयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः (पादानामिकयोः)
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं नमः (पादकनिष्ठिकयोः)
न्यस्य मूलेन देहे व्यापकं कुर्यात् ।

***

।। चतुर्थः खण्डः ।।

पात्रासादनम्

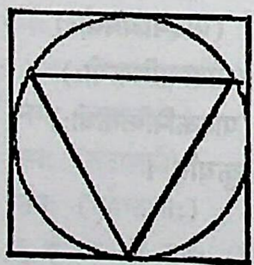
वर्धनीकलशस्थापनम्

स्वपुरतः वामभागे त्रिकोणवृत्तचतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य-



मण्डलं मूलेन समभ्यर्च्य कर्पूरादिवासितजलपूरितं कलशं गन्धपुष्पाक्षतैः अलङ्कृत्य मण्डलोपरि संस्थापयेत् -

अङ्कुश मुद्रया गङ्गादि सर्वतीर्थाणि आकृष्य



ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं वर्धनी कलशमण्डलाय नमः। से पूजन कर जलपूरित कलश को अक्षत, चन्दन, पुष्प आदि से अलंकृत कर जल में गंध, सर्वौषधियां कस्तूरि, कर्पूर डालकर उसे मण्डल पर स्थापित कर हाथ से स्पर्श करते हुए,गङ्गादि सभी तीर्थों को अङ्कुश मुद्रा द्वारा आकर्षण करके,निम्न मन्त्र पढ़ें -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं नमो भगवत्यशेषतीर्थालवाले शिवजटाधिरूढे गङ्गे गङ्गाम्बिके स्वाहा ।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागरस्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च सहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः ।

ॐ आपो वा इदँ सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः खराडापश्छन्दाँस्यापो ज्योतिंष्यापो यजूष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ॐ।

गङ्गे च यमुने कृष्णे गोदावरिसरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥
सर्वे समुद्रास्सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः ।
आयन्तु देवीपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥
सर्वानन्दकरीमशेषदुरितध्वंसीं मृगाङ्कप्रभां
त्र्यक्षीमूर्ध्वकरद्वयेन दधतीं पाशं सृणिं च क्रमात्।
दोर्भ्यां चामृतपूर्णकुम्भमपराभ्यां जां मौक्तिकाक्षसृजं
गङ्गाद्युत्तमसिन्धुसम्भृततनुं श्रीतीर्थशक्तिं भजे ॥
ॐ नमो भगवत्यशेषतीर्थालवाले
शिवजटाधिरुढे गङ्गे गङ्गाम्बिके स्वाहा ॥

मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य, धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, तज्जलेन पूजोपकरणानि आत्मानञ्च प्रोक्षयेत् ।

धेनु मुद्रा

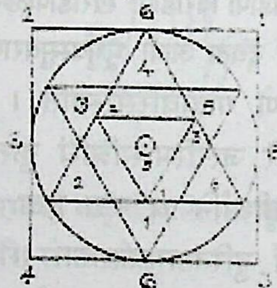


प्रोक्षणमन्त्रः

ललितार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम् ।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ॥

सामान्यार्घ्यविधिः

वर्धनीपात्रस्य दक्षिणतः वर्धनीपात्रगतेन जलेन बिन्दुत्रिकोणषट्कोण-वृत्तचतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया निर्माय ।



चतुरश्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च बालाषडङ्गैः सम्पूजयेत्

१. ॐ ऐंह्रींश्रींऐं हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः-आग्नेये

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः-ऐशान्याम्

३. ॐ ऐंह्रींश्रीं सौः शिखायै वषट् शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः-नैर्ऋत्याम्

४. ॐ ऐंह्रींश्रींऐं कवचाय हुं कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः-वायव्ये

५. ॐ ऐंह्रींश्रींक्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः-मध्ये

६. ॐ ऐंह्रींश्रींसौः अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः-दिक्षु

षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन

षट्कोण में अपने सामने से प्रदक्षिणा क्रम से षट्कोणों का पूजन करें -

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः हृदय-शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । पश्चिमे

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । वायव्य

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं शिखायै वषट् शिखाशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः । ऐशान्याम्

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं कवचाय हुम् कवचशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः। पूर्व

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः । आग्नेये

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन -

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं नमः। पश्चिम

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं नमः। आग्नेय

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं नमः। ऐशान्याम्

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नमः (बिन्दौ)

ततः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् - इति सामान्यार्घ्यपात्रस्य आधारं प्रक्षाल्य -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुर-सुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः ।

इति मण्डलस्योपरि संस्थाप्य

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।

अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।। रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः सम्पूजयेत् । तद्यथा -

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं ऊष्माकलायै नमः

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं ज्वलिनीकलायै नमः

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं ज्वालिनीकलायै नमः

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं विस्फुङ्गिनीकलायै नमः

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं सुश्रीकलायै नमः

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सुरूपाकलायै नमः

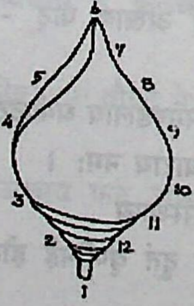
८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं कपिलायै नमः

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं हव्यवाहिनीकलायै नमः

१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं कव्यवाहिनीकलायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् - इति क्षालितं शङ्खं गृहीत्वा - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं सूर्यमण्डलायार्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहापुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राय नमः - इति संस्थाप्य

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनाविपश्यन् । हां हीं हूं हैं हौं हः । हमलवरयूम् ।सूर्यमण्डलाय नमः - इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादशसूर्यकलाः सम्पूजयेत् ।



तद्यथा

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिनीकलायै नमः

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिनीकलायै नमः

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्राकलायै नमः

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं पं मरीचीकलायै नमः

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं ज्वालिनी कलायै नमः

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं धं रुचिकलायै नमः

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं दं सुषुम्नाकलायै नमः

८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदाकलायै नमः

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वाकलायै नमः

१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं बोधिनीकलायै नमः

११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं धारिणीकलायै नमः

१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं क्षमाकलायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने महात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यामृताय नमः - इति वर्धनीसलिलमापूर्य क्षीरबिन्दुं दत्वा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णियम् । भवावाजस्य संगथे ॥ सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः - इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः सम्पूजयेत् ।

तद्यथा -

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतकलायै नमः ।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदाकलायै नमः ।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं पूषाकलायै नमः ।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं तुष्टिकलायै नमः ।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्टिकलायै नमः ।

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रतिकलायै नमः ।

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं धृतिकलायै नमः ।

८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं शशिनीकलायै नमः ।

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं चन्द्रिकाकलायै नमः ।

१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं कान्तिकलायै नमः ।

११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्स्नाकलायै नमः ।

१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीकलायै नमः ।

१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीतिकलायै नमः ।

१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं अङ्गदाकलायै नमः ।

१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णाकलायै नमः ।

१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः पूर्णामृताकलायै नमः ।

ततस्तस्मिन्शङ्खे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च क्रमेण षडङ्गैः सम्पूज्य।

षडङ्गपूजनम्

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । आग्नेये

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । ऐशान्याम्

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं कवचाय हुं । कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । वायव्ये

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । मध्ये

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । पूर्वादिदिक्षु

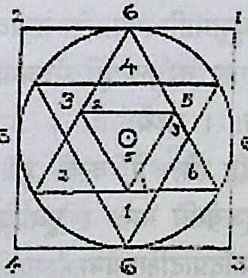
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् इति संरक्ष्य, ओं ऐं ह्रीं श्रीं कवचाय हुं इति अवकुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य,

तत्सलिलपृषतैः पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य, ॐललितार्चनकालेहि यानि यानीह साम्प्रतम् । वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै । शङ्खजलात् किञ्चित् वर्धन्यां क्षिपेत् ।

विशेषार्घ्यविधिः

सामान्यार्घ्योदकेन तद्दक्षिणतः बिन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य बिन्दौ सानुस्वारं तुरीयस्वरं विलिख्य,

चतुरश्रे प्राग्वत् षडङ्गं विन्यस्य, षट्कोणे स्वाग्रकोणादि प्रादक्षिण्येन षडङ्गैरभ्यर्च्य, त्रिकोणे मूलत्रिखण्डैः अभ्यर्च्य मूलेन बिन्दुं च अर्चयेत् ।



तद्यथा - चतुरश्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च -

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः । आग्नेये

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरः शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः। ऐशान्याम्

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं कवचाय हुम् । कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि । वायव्ये

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । मध्ये

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । पूर्वादिदिक्षु

षोडश्युपासकानां

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । आग्नेये

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । ऐशान्याम्

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं कवचाय हुम् । कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । वायव्ये

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । मध्ये

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । पूर्वादिदिक्षु

ततः षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन -

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । पश्चिमे

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । वायव्ये

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । ऐशान्याम्

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं कवचाय हुम् । कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । पूर्वस्यां

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । आग्नेये

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

षोडश्युपासकानां

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । पश्चिमे

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । वायव्ये

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । ऐशान्याम्

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं कवचाय हुम् । कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । पूर्वस्यां

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । आग्नेये

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नः । नैर्ऋत्याम्

ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन-

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं नमः । पश्चिमे

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं नमः।ऐशान्याम्

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं नमः । आग्नेये

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नमः । बिन्दौ

षोडश्युपासकानां तु षोडशीमन्त्रेण सर्वत्र पूजा विधेया ।

अथ - ओं ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् इति आधारं प्रक्षाल्य,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः । इति आधारं संस्थाप्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।। रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः- इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः

पूजयेत् । यथा -

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः ।
२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं ऊष्माकलायै नमः ।
३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं ज्वलिनिकलायै नमः ।
४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं ज्वालिनिकलायै नमः ।
५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं विस्फुरलिङ्गिनिकलायै नमः ।
६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं सुश्रीकलायै नमः ।
७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सुरूपाकलायै नमः ।
८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं कपिलाकलायै नमः ।
९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं हव्यवाहिनीकलायै नमः ।
१०.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं कव्यवाहिनीकलायै नमः ।

ततः - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् इति अस्त्रमन्त्रेण विशेषार्घ्यपात्रं प्रक्षाल्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं उं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या विशेषार्घ्यपात्राय नमः । इति आधारोपरि संस्थाप्य ।

मन्त्र पुष्पाञ्जलि अर्पित करें -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनि ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्याग्निभक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश विश पात्रं प्रतिग्रह्ण प्रतिग्रह्ण हुं फट् स्वाहा इति पुष्पाञ्जलिं विकीर्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवना विपश्यन् ।। हां हीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः ।

इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादशसूर्यकलाः पूजयेत् तद्यथा -

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिनीकलायै नमः ।
२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिनीकलायै नमः ।
३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्राकलायै नमः ।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं पं मरीचिकलायै नमः ।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं ज्वालिनीकलायै नमः ।

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं धं रुचिकलायै नमः ।

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं दं सुषुम्नाकलायै नमः ।

८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदाकलायै नमः ।

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वाकलायै नमः ।

१०.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं बोधिनीकलायै नमः ।

११.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं धारिणीकलायै नमः ।

१२.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं क्षमाकलायै नमः ।

शुद्धिसंस्कारः

ततो विशेषार्घ्यपात्रस्य दक्षिणतः सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोणवृत्त-चतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय इति मण्डलमभ्यर्च्य शुद्धिपात्रं संस्थाप्य ।

ॐ ऐं ह्रीं ओं श्लीं पशु हुं फट् इति अष्टवारमभिमन्त्र्य

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ।।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति-र्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् । इत्यभ्यर्च्य ।

ततो विशेषार्घ्यपात्रे -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं सोममण्डलाय कामप्रदषोडश-कलात्मने श्री महात्रिपुरसुन्दर्या विशेषार्घ्यामृताय नमः -

इति तत्त्वमुद्रया गृहीत नागरखण्डोपरि सबिन्दु अकारादिक्षकारान्तं क्षकाराद्यकारान्तं मातृकयाअर्पितममृतमापूर्याष्टगन्धलोलितं पुष्पं निधाय नागरखण्डः निक्षिप्यः ।

(अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं) पात्र में बाँये हाथ से गोदुग्ध, अष्टगन्ध, केशर, फूल और वह नागर (अदरक) खण्ड विशेषार्घ्य पात्र में डाल दें ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम् । भवावाजस्य संगथे । सां सीं सूं सैं सौं सः स म ल व र यूं सोममण्डलाय नमः ।

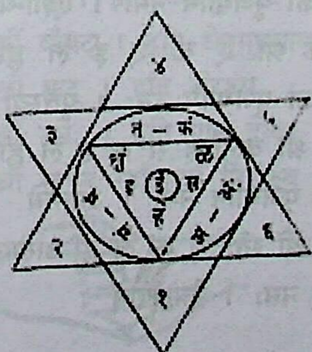
इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकला पूजयेत् ।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृताकलायै नमः ।
२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदाकलायै नमः ।
३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं पूषाकलायै नमः ।
४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं तुष्टिकलायै नमः ।
५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्टिकलायै नमः ।
६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रतिकलायै नमः ।
७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं धृतिकलायै नमः ।
८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं शशिनीकलायै नमः ।
९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऌं चन्द्रिकाकलायै नमः ।
१०.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं कान्तिकलायै नमः ।

११.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्स्नाकलायै नमः ।
१२.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीकलायै नमः ।
१३.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीतिकलायै नमः ।
१४.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं अङ्गदाकलायै नमः ।
१५.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णाकलायै नमः ।
१६.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः पूर्णामृतकलायै नमः ।

ततः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं जुंसः स्वाहा इति अष्टवारमभिमन्त्र्य । तत्रार्घ्यामृते स्वाग्राद्यप्रादक्षिण्येन अकथादि-षोडशवर्णात्मक रेखा त्रयं त्रिकोणं विलिख्य तदन्तः स्वाग्रादिकोणेषु अप्रादक्षिण्येन हलक्षान् बहिः प्रादक्षिण्येन पञ्चदशी मूल खण्डत्रयम् बिन्दौ स बिन्दुतुरीयस्वरं तद्वामदक्षयोः क्रमेण हंसः इति च विलिख्य ।

(इसके पश्चात् "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जुं सः स्वाहा" से आठ बार अभिमन्त्रित करे दें । अब विशेषार्घ्य के अमृत में एक त्रिकोण की भावना करें । अपने आगे से प्रारम्भ कर अप्रदक्षिण से उसकी बाकी रेखा में षोडश स्वरों (**अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः**) को वामावर्त से दूसरी रेखा में **क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त** तक और तीसरी रेखा में **थ द ध न प फ म य र ल व श ष स** तक के वर्ण (अक्षर) कल्पना से लिखें। इसे अकथादि त्रिकोण कहते हैं ।)



इस त्रिकोण के भीतर सामने से वामावर्त "ह ळ क्ष" इन तीन अक्षरों को प्रदक्षिणा क्रम से तीनों कोणों पर लिखें । तब त्रिकोण के बाहर अपने आगे से दक्षिणावर्त पञ्चदशी मन्त्र में तीनों कूट क्रमशः तीन रेखाओं पर (**क ए ई ल ह्रीं, ह स क ह ल ह्रीं, स क ल ह्रीं**) लिखकर त्रिकोण के मध्य बिन्दु पर 'ईं' लिखें और ईकार के वाम तथा दाहिने भाग में क्रमशः 'हं' और 'सः' लिखें । फिर ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः नमः से पूजन कर उस त्रिकोण के बाहर एक वृत्त और वृत्त के बाहर एक षट्कोण बनाकर अपने सामने के कोण से प्रारम्भ कर दक्षिणावर्त क्रम से सभी कोणों में षडङ्ग मन्त्र से पूजन करें -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः इति आराध्य, त्रिकोणस्य परितः वृत्तं, तद्बहिश्च षट्कोणं निर्माय, स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गमन्त्रैः षट्कोणमभ्यर्च्य ।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ऐं ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । पश्चिमे

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरः शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । वायव्ये

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । ऐशान्याम्

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं कवचाय हुम् । कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । पूर्वस्यां

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । आग्नये

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

षोडश्युपासकानां

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । पश्चिमे

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा ।शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । वायव्ये

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । ऐशान्यम्

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं कवचाय हुम् । कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । पूर्वस्यां

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । आग्नेये

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

तदनन्तर निम्न मन्त्र से सुधा देवी की पूजा करें -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं तां चिन्मयीं आनन्दलक्षणां अमृतकलश-पिशितहस्तद्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा इति सुधादेवीं समभ्यर्च्य तदर्घ्यात्किञ्चित् पात्रान्तरेण

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वषट् । इत्युद्धृत्य

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्वाहा । इति तत्रैव निक्षिप्य

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हुं । इति अवकुण्ठ्य

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वौषट् । इति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फट् । इति संरक्ष्य

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमः । इति पुष्पं दत्वा

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन गालिन्या निरीक्ष्य



८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं इति योनिमुद्रया नत्वा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य सुधादेवीं षोडशोपचारैः सम्पूज्य -

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेवीं आवाहयामि ।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः आसनम् परिकल्पयामि।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः पाद्यम् परिकल्पयामि ।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः अर्घ्यम् परिकल्पयामि

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः आचमनीयम् परिकल्पयामि ।

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः स्नानम् परिकल्पयामि ।

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः वस्त्रम् परिकल्पयामि ।

८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः यज्ञोपवीतम् परिकल्पयामि

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः चन्दनम् परिकल्पयामि ।

१०.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः पुष्पाणि परिकल्पयामि ।

११.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः धूपम् परिकल्पयामि ।

१२.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः दीपम् परिकल्पयामि ।

१३.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः ताम्बूलम् परिकल्पयामि

१४.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः कर्पूरार्तिक्यम् परिकल्पयामि।

१५.ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सुधादेव्यै नमः पुष्पाञ्जलिम् परिकल्पयामि

तद्बिन्दुभिःसपर्यासाधनानि प्रोक्ष्य

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ललितार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम् ।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ।।

सर्वं विद्यामयं विभावयेत् ।

ततः शुद्धिपात्रस्य अधः त्रिकोण वृत्त चतुरश्रात्मकं मण्डलद्वयं विलिख्य । प्रथममण्डले -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसाश्शिवस्सोऽहं, सोऽहं, हंसाश्शिवः, हंसश्शिवस्सोऽहं हंसः, हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं नमः । इत्यभ्यर्च्य, गुरुपात्रं निधाय। द्वितीयमण्डले -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः नमः । इत्यभ्यर्च्य, आत्मपात्रं निदध्यात् । ततो विशेषार्घ्यपात्रं करेण संस्पृश्य वक्ष्यमाणचतुर्नवतिमन्त्रैः अभिमन्त्रयेत्-

वह्निकलाः

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिषे नमः । २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं ऊष्मायै नमः । ३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं ज्वलिन्यै नमः । ४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं ज्वालिन्यै नमः । ५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं विस्फुरलिङ्गिन्यै नमः । ६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं सुश्रियै नमः । ७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सुरूपायै नमः । ८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं कपिलायै नमः । ९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ळं हव्यवाहिन्यै नमः । १०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं कव्यवाहिन्यै नमः ।।

सूर्यकलाः

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः । २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिन्यै नमः । ३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्रायै नमः । ४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं पं मरीच्यै नमः । ५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं ज्वालिन्यै नमः । ६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं धं रुच्यै नमः । ७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं दं सुषुम्नायै नमः । ८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदायै नमः । ९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वायै नमः । १०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं बोधिन्यै नमः । ११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं धारिण्यै नमः । १२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं क्षमायै नमः ।

सोमकलाः

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः । २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदायै नमः । ३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं पूषायै नमः । ४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं तुष्ट्यै नमः । ५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्ट्यै नमः । ६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रत्यै नमः । ७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं धृत्यै नमः। ८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं शशिन्यै नमः । ९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऌं चन्द्रिकायै नमः। १०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं कान्त्यै नमः । ११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं

ज्योत्स्नायै नमः । १२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रियै नमः । १३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीत्यै नमः । १४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं अङ्गदायै नमः । १५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णायै नमः । १६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः पूर्णामृतायै नमः ।

ब्रह्मकलाः

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं सृष्ट्यै नमः । २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं ऋद्ध्यै नमः । ३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं स्मृत्यै नमः । ४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं मेधायै नमः । ५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं कान्त्यै नमः । ६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं लक्ष्म्यै नमः । ७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं द्युत्यै नमः । ८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं स्थिरायै नमः । ९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं स्थित्यै नमः । १०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ञं सिद्ध्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हँसश्शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् नमः।।

विष्णुकलाः

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं जरायै नमः । २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं पालिन्यै नमः । ३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं शान्त्यै नमः । ४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढं ईश्वर्यै नमः । ५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं णं रत्यै नमः । ६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं कामिकायै नमः । ७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं थं वरदायै नमः। ८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दं ह्लादिन्यै नमः । ९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं प्रीत्यै नमः । १०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नं दीर्घायै नमः ।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याय मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ।।नमः ।।

रुद्रकलाः

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं तीक्ष्णायै नमः । २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फं रौद्र्यै नमः । ३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं भयायै नमः । ४. ॐ ऐं ह्रीं

श्रीं भं निद्रायै नमः । ५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं तन्द्रयै नमः । ६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं क्षुधायै नमः । ७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं क्रोधिन्यै नमः। ८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं क्रियायै नमः । ९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं उद्गार्यै नमः । १०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं मृत्यवे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।। नमः ।।

ईश्वरकलाः

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं पीतायै नमः । २. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं श्वेतायै नमः । ३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं अरुणायै नमः । ४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं असितायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तद्विष्णोः परमं पदँ सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाँसः समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् नमः ।

सदाशिवकलाः

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं निवृत्त्यै नमः । २ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं प्रतिष्ठायै नमः । ३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं विद्यायै नमः । ४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं शान्त्यै नमः । ५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं इन्धिकायै नमः । ६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं दीपिकायै नमः । ७ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं रेचिकायै नमः । ८ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं मोचिकायै नमः । ९ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऌं परायै नमः । १० ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं सूक्ष्मायै नमः । ११ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं सूक्ष्मामृतायै नमः । १२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ज्ञानायै नमः । १३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं ज्ञानामृतायै नमः । १४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं आप्यायिन्यै नमः । १५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं व्यापिन्यै नमः । १६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः व्योमरूपायै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु । आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ।।

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजा ।। नमः ।।

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं नमः ।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि । स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके नमः ।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे । अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि नमः ।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्स्वपिणि । भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु नमः ।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा नमः ।

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु हसौः स्हौः नमः।

एवमभिमन्त्रितविशेषार्घ्यामृतात् किञ्चित् शुद्धिपात्रे उद्धृत्य पुनः किञ्चिद् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयं यजेत् ।

गुरुः सन्निहितो यदि तस्मै निवेदयेत् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोऽहं स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सोऽहं हंसः शिवःहस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोऽहं हंसः शिवः स्वच्छप्राकाशविमर्शहितवे श्रीपरमगुरवे नमः अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ततः आत्मपात्रे किञ्चिद्विशेषार्घ्यामृतमुद्धृत्य मूलाधारे बालाग्रमात्रं अनादिवासनारूपेन्धनप्रज्वलितं कुण्डलिन्यधिष्ठितं चिदग्निमण्डलं ध्यात्वा-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः । इति मनसा सम्पूज्य

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं पुण्यं जुहोमि स्वाहा ।

२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं पापं जुहोमि स्वाहा ।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं कृत्यं जुहोमि स्वाहा ।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं अकृत्यं जुहोमि स्वाहा ।

५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सङ्कल्पं जुहोमि स्वाहा ।

६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं विकल्पं जुहोमि स्वाहा ।

७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं धर्मं जुहोमि स्वाहा ।

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं अधर्मं जुहोमि स्वाहा ।

९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं अधर्मं जुहोमि वौषट् ।

१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा - इति पूर्णाहुतिं विभाव्य ।

११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि, ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि, अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ।

इति आत्मनः कुण्डलिनीरूपे चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात् । विशेषार्घ्यपात्रात्किञ्चित्क्षीरं कारणकलशे निक्षिपेत् ।

***

पञ्चमखण्डः

अन्तर्यागादि लयाङ्गपूजान्तम्

अन्तर्यागः

एवं निरस्तनिखिलदोषस्सन् आमूलाधारादाब्रह्मबिलं बिलसन्तीं बिसतन्तुतनीयसीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशां परश्शतसुधामयूखशीतलतेजोदण्डरूपां परचितिं भावयेत् । ततस्तत्तेजसि - मूलाधारादधोगते अकुलसहस्रारे भूपुरस्थितदेवीः, तदुपरि स्थिते विषुवनाम्नि रक्तवर्णषड्दलपद्मे षोडशदलदेवीः, मूलाधारे चतुर्दले अष्टदलदेवीः, स्वाधिष्ठाने षड्दले चतुर्दशारदेवीः, मणिपूरके दशदले बहिर्दशारदेवीः, अनाहते द्वादशदले अन्तर्दशारदेवीः, विशुद्धौ षोडशदले अष्टारदेवीः, लम्बिकाग्रे आयुधदेवीः त्रिकोणदेवीश्च, आज्ञायां द्विदले बिन्दुगतदेवीं च ध्यात्वा तत्तदग्रे जीवात्मानं पुष्पपूरिताञ्जलिनिविष्टं भावयन् तत्तपूजामन्त्रैः तत्तदावरणपूजां, देव्या वामहस्ते पूजासमर्पणं च विभाव्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सचक्रावयवानि आवरणानि विलीनानि विभाव्य, मध्यत्र्यश्राग्रे (देवीपादमूले) स्थितजीवात्मनासहितां श्रीदेवीं हृदयं नीत्वा स्वाञ्जलिगतकुसुमैः तत्र तां सम्पूज्य, ततः अकुलेन्दुगलितामृतधारारूपिणीः चन्दनकुसुमधूपदीपनैवेद्यशालिकरकमलाः पीतासितश्यामरक्तशुक्लवर्णाः धरणिवियदनिलानलजललक्षणपञ्चभूतमयीः सर्वावयवसुन्दरीः पञ्चदेवताः देव्यग्रे संस्मृत्य, ताभिः चन्दनाद्युपचारान् श्रीदेव्यै समर्पितान् स्मारं स्मारं पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिता भावयेत् । ततो देव्या नासायां गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायां नैवेद्यदेवता इति क्रमेण विलीनाः विभाव्य, मूलविद्यां उच्चारयन्, जीवात्मानं श्रीदेवीपादारविन्दमूले लीनं विभाव्य, हृदयगतदेवीरूपं मध्यत्र्यश्रसहितं तत्रैव केवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन् सर्वसंक्षोभिण्यादिनवमुद्राः (षोडश्युपासकानां तु दशमुद्राः) भावयित्वा क्षणं न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ।

अथ देव्या प्रेरितमानसः सन् पुनः प्रकृतिमालम्ब्य तेजोरूपेण परिणतां परमशिवज्योतिरभिन्नप्रकाशात्मिकां वियदादिविश्वकारणां सर्वावभासिकां स्वात्माभिन्नां परचितिं सुषुम्नापथेन उद्गमय्य विनिर्भिन्न-विधिविलसदमलदशशतदलकमलात् वहन्नासापुटेन निर्गतां त्रिखण्डमुद्रा-मण्डितशिखण्डे कुसुमगर्भितेऽञ्जलौ समानीय - ओं ऐं ह्रीं श्रीं ह्लीं श्रीं सौः श्रीललिताया अमृतचैतन्यमूर्तिं कल्पयामि नमः ।

ध्यानम्

ध्यायेन्निरामयं वस्तु जगत्रयविमोहिनीम् ।
अशेषव्यवहाराणां स्वामिनीं संविदं पराम् ॥1॥
उद्यत्सूर्यसहस्राभां दाडिमीकुसुमप्रभाम् ।
जपाकुसुमसंकाशां पद्मरागमणिप्रभाम् ॥2॥
स्फुरत्पद्मनिभां तप्तकाञ्चनाभां सुरेश्वरीम् ।
रक्तोत्पलदलाकारपादपल्लवराजिताम् ॥3॥
अनर्घरत्नखचितमञ्जीरचरणद्वयाम् ।
पादाङ्गुलीयकक्षिप्तरत्नतेजोविराजिताम् ॥4॥
कदलीललितस्तम्भसुकुमारोरुकोमलाम् ।
नितम्बबिम्बविलसद्रक्तवस्त्रपरिष्कृताम् ॥5॥
मेखलाबद्धमाणिक्यकिङ्कणीनादविभ्रमाम् ।
अलक्ष्यमध्यमां निम्ननाभिं शातोदरीं पराम् ॥6॥
रोमराजिलतोद्भूतमहाकुचफलान्विताम् ।
सुवृत्तनिबिडोत्तुङ्गकुचमण्डलराजिताम् ॥7॥
अनर्घमौक्तिकस्फारहारभारविराजिताम् ।
नवरत्नप्रभाराजद्ग्रैवेयकविभूषणाम् ॥8॥
श्रुतिभूषामनोरम्यकपोलस्थलमञ्जुलाम् ।
उद्यदादित्यसंकाशताटङ्कसुमुखप्रभाम् ॥9॥

पूर्णचन्द्रमुखीं पद्मवदनां वरनासिकाम् ।
स्फुरन्मदनकोदण्डसुभ्रुवं पद्मलोचनाम् ॥10॥
ललाटपट्टसंराजद्रत्नाढ्यतिलकाङ्कितम् ।
मुक्तामाणिक्यघटितमुकुटस्थलकिङ्किणीम् ॥11॥
स्फुरच्चन्द्रकलाराजन्मुकुटां च त्रिलोचनाम् ।
प्रवालवल्लीविलसद्बाहुवल्लीचतुष्टयाम् ॥12॥
इक्षुकोदण्डपुष्पेषुपाशाङ्कुशचतुर्भुजाम् ।
सर्वदेवमयीमम्बां सर्वसौभाग्यसुन्दरीम् ॥13॥
सर्वतीर्थमयीं दिव्यां सर्वकामप्रपूरिणीम् ।
सर्वमन्त्रमयीं नित्यां सर्वागमविशारदाम् ॥14॥
सर्वक्षेत्रमयीं देवीं सर्वविद्यामयीं शिवाम् ।
सर्वयागमयीं विद्यां सर्वदेवस्वरूपिणीम् ॥15॥
सर्वशास्त्रमयीं नित्यां सर्वागमनमस्कृताम् ।
सर्वाम्नायमयीं देवीं सर्वायतनसेविताम् ॥16॥
सर्वानन्दमयीं ज्ञानगह्वरां संविदं पराम् ।
एवं ध्यायेत्परामम्बां सच्चिदानन्दरूपिणीम् ॥17॥
इति निजलीलाङ्गीकृतललितवपुषं विचिन्त्य ।

आवाहनम्

ओं ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्त्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्त्रौः
महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे ।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि ॥
ऐह्येहि देवदेवेशि त्रिपुरे देवपूजिते ।
परामृतप्रिये शीघ्रं सान्निध्यं कुरु सिद्धिदे ॥
देवेशि भक्तसुलभे सर्वावरणसंवृते ।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव ॥

बिन्दुपीठगतनिर्विशेषब्रह्मात्मकश्रीमत्कामेश्वराङ्के श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकामावाहयामि नमः ॥

नित्यादिकमणिमान्तं श्रीकामेश्वराङ्कोपवेशनं विना श्रीदेवीसमानाकृति वेशभूषणायुधशक्तिचक्रं ओघत्रयगुरुमण्डलं च वक्ष्यमाणेषु आवरणेषु निजस्वामिन्यभिमुखोपविष्टमवमृश्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं आवाहिता भव ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं संस्थापिता भव ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सन्निधापिता भव ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सन्निरुद्धा भव ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सम्मुखी भव ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं अवकुण्ठिता भव ।

इति मन्त्रैरावाहनादिषण्मुद्राः प्रदर्श्य, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत् । अथ हृदयादिषडङ्गमुद्राः बाणाद्यायुधमुद्राश्च तत्तन्मन्त्रपूर्वकं प्रदर्शयेत् ।

षडङ्ग मुद्रा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं हृदयाय नमः हृदय मुद्रां प्रदर्शयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं शिरसे स्वाहा शिरोमुद्रां प्रदर्शयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं शिखायै वषट् शिखामुद्रां प्रदर्शयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं कवचाय हुम् कवचमुद्रां प्रदर्शयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रमुद्रां प्रदर्शयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं अस्त्राय फट् अस्त्रमुद्रां प्रदर्शयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यः कामेश्वरी कामेश्वर बाणेभ्यो नमः, बाणमुद्रां प्रदर्शयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं थं सर्वमोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्यां नमः, (चाप) धर्नुमुद्रां प्रदर्शयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां नमः पाशमुद्रां प्रदर्शयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रों क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां नमः अङ्कुशमुद्रां प्रदर्शयामि ।

चतुःषष्ट्युपचारपूजा

अथ श्रीपरदेवतायाः चतुष्षष्ट्युपचारानाचरेत् । तेष्वशक्तो भावनया सामान्यार्घ्योदकात् किञ्चिदम्बाचरणम्बुजेऽर्पणबुद्ध्या पात्रान्तरे निक्षिपेत् । पुष्पाक्षतान्वाऽर्पयेत् ।

ॐ दूर्वया सरसिजान्वितविष्णुक्रान्तया च सहितं कुसुमाढ्यम् ।
पद्मयुग्मसदृशे पदयुग्मे पाद्यमेतदुररीकुरु मातः ।।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ललिताम्बिकायै पादारविन्दयोः पाद्यम् कल्पयामि नमः ।

ॐ गन्धपुष्पयवसर्षपदूर्वासम्मितं तिलकुशाक्षतमिश्रम् ।
हेमपात्र निहितं सह रत्नैरर्घ्यमेतदुररीकुरु मातः ।।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ललिताम्बिकायै हस्तारविन्दयोः अर्घ्यं कल्पयामि नमः।

ॐ जलजद्युतिना करेण जातीफलकङ्कोललवङ्गगन्धयुक्तैः ।
अमृतैरमृतैरिवाहृतैर्भगवत्याचमनं विधीयताम् ।।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ललिताम्बिकायै मुखारविन्दे आचमनीयं कल्पयामि नमः।

ॐ निहितः कनकस्य सम्पुटे पिहितो रत्नपिधानकेन सः ।
तदयं भवतीकरेऽर्पितो मधुपर्को जननि प्रगृह्यताम् ।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ललिताम्बिकायै मधुपर्कं कल्पयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै आभरणावरोपणं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै सुगन्धितैलाभ्याङ्गं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै मज्जनशालाप्रवेशनं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै मज्जनशालामणिपीठोपवेशनं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै दिव्यस्नानीयोद्वर्तनं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै ऊष्णोदकस्नानं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कनककलशच्युतसकलतीर्थाभिषेकं कल्पयामि नमः ।

इह त्रिपुरादेवीभावनाबह्वृचोपनिषद्भिः श्रीसूक्त, पुरुषसूक्त दुर्गासूक्तादिभिश्च अभिषेकः कार्यः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै धौतवस्त्रपरिमार्जनं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अरुणदुकूलपरिधानं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अरुणकुचोत्तरीयं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै आलेपमण्टपप्रवेशनं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै आलेपमण्टपमणिपीठोपवेशनं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै चन्द्रनागरुकुङ्कुममृगमदकर्पूरकस्तूरीगोरोचनादिदिव्यगन्धसर्वाङ्गीणविलेपनं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै केशरभारस्य कालागरुधूपं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै मल्लिकामालतीजातीचम्पकाशोकशतपत्रपूगकुहळीपुन्नागकल्हारमुख्यसर्वर्तुकुसुममालाः कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै भूषणमण्डपप्रवेशनं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै भूषणमण्डपमणिपीठोपवेशनं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै नवमणिमुकुटं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै चन्द्रशकलं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै सीमान्तसिन्दूरं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै तिलकरत्नं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कालाञ्जनं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै वाळीयुगलं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै मणिकुण्डलयुगलं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै नासाभरणं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अधरयावकं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै प्रथमभूषणं (माङ्गल्यसूत्र) कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कनकचिन्ताकं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै पदकं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै महापदकं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै मुक्तावलिं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै एकावलिं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै छन्नवीरं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै केयूरयुगलचतुष्टयं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै वलयावलिं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै ऊर्मिकावलिं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै काञ्चीदाम कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कटिसूत्रं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै सौभाग्याभरणं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै पादकटकं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै रत्ननूपुरं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै पादाङ्गुलीयकं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै एककरे पाशं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अन्यकरेऽङ्कुशं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै इतरकरे पुण्ड्रेक्षुचापं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अपरकरे पुष्पबाणान् कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै श्रीमन्माणिक्यपादुके कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै स्वसमानवेषाभिरावरणदेवताभिःसह महाचक्राधिरोहणं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कामेश्वराङ्कपर्यङ्कोपवेशनं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अमृतासवचषकं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै आचमनीयं कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै कर्पूरवीटिकां कल्पयामि नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै आनन्दोल्लासविलासहासं कल्पयामि नमः

अथ मङ्गलारार्तिकमकलधौतादिभाजने कुङ्कुमचन्दनादिलिखितस्याष्ट षट्चतुर्दलाद्यन्यतमस्य कमलस्य चन्द्राकारचारुगोलकवत्यां चणकमुद्गजुषि

वा कर्णिकायां दलेषु च पयःशर्करापिण्डीकृतयवगोधूमादिपिष्टोपादानकानि त्रिकोणशिरस्कडमर्वाकृतीनि चतुरङ्गुलोत्सेधानि घृतपाचितानि नवसप्त-पञ्चान्यतमसंख्यानि दीपपात्राणि निधाय तेषु गोघृतं प्रत्येकं कर्षप्रमितं आपूर्य कर्पूरगर्भितां वर्तिकां हल्लेखया प्रज्वाल्य -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं - इति नवाक्षरी रत्नेश्वरीविद्यया अभिमन्त्र्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाभ्यर्च्य -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहाः - इति मन्त्रपूर्वकं गन्धाक्षतादिना घण्टां सम्पूज्य तां वादयन् जानुचुम्बितभूतलः तत्पात्रं आमस्तकमुद्धृत्य -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै मङ्गलारार्तिकं कल्पयामि नमः ।

समस्तचक्रचक्रकेशीयुते देवि नवात्मिके ।

आरार्तिकमिदं तुभ्यं गृहाण मम सिद्धये ॥

इति नववारं श्रीदेव्या आचूडं आचरणाब्जं परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै छत्रं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै चामरयुगलं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै दर्पणं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै तालवृन्तं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै गन्धं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै पुष्पं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै धूपं कल्पयामि नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै दीपं कल्पयामि नमः

अथ नैवेद्यम् - देव्याः पुरतः स्वदक्षिणे चतुरश्रमण्डलं निर्माय तत्र आधारोपरि नैवेद्यं निधाय मूलेन प्रोक्ष्य वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य मूलेन त्रिवारं अभिमन्त्र्य आपोशनं दत्वा -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः

अथ श्रीललितायै पानीयं उत्तरापोशनं हस्तप्रक्षालनं गण्डूपं आचमनीयं ताम्बूलं च कल्पयेत् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्रों हस्ख्फ्रें हसौः ऐं - इति सर्वसंक्षोभिण्यादिनवमुद्राः प्रदर्शयेत् ।

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।

५ ॐऐं ह्रीं श्रीं सः सर्वोन्मादिनीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।

६ ॐऐं ह्रीं श्रीं क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।

७ ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।

८ ॐऐं ह्रीं श्रीं हसौः सर्वबीजमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।

९ ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं सर्वयोनिमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।

षोडश्युपासकास्तु हस्रैः हस्क्ल्रीं हस्रौः इति त्रिखण्डामपि प्रदर्शयेयुः।

चतुरायतनपूजा

नैर्ऋते च गणेशानं सूर्यं वायव्य एव च ।
ऐशान्याम् विष्णुमाग्नये शिवं चैव प्रपूजयेत् ॥

गणपतिपूजा

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजाचक्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥

श्रीमहागणपतिं ध्यायामि ।

श्रीमहागणपति आवाहयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः, आसनं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः, पाद्यं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः, अर्घ्यं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः, आचमनीयं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः, मधुपर्कं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः, स्नानं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः, आचमनीयं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः, वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः, गन्धान् समर्पयामि ।

१ ॐ सुमुखाय नमः । २ ॐ एकदन्ताय नमः । ३ ॐ कपिलाय नमः । ४ ॐ गजकर्णकाय नमः । ५ ॐ लम्बोदराय नमः । ६ ॐ विकटाय नमः । ७ ॐ विघ्नराजाय नमः । ८ ॐ विनायकाय नमः । ९ ॐ धूमकेतवे नमः । १० ॐ गणाध्यक्षाय नमः । ११ ॐ भालचन्द्राय नमः । १२ ॐ गजाननाय नमः । १३ ॐ वक्रतुण्डाय नमः । १४ ॐ शूर्पकर्णाय नमः । १५ ॐ हेरम्बाय नमः । १६ ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः ।

श्रीमहागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा । महागणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः संतर्पयेत् ।

श्रीमहागणपतये नमः । धूपमाघ्रापयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । दीपं दर्शयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । नैवेद्यं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । उत्तरापोशनं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । पादप्रक्षालनं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । आचमनीयं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । ताम्बूलं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । कर्पूरनीराजनं दर्शयामि ।

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ।

श्रीमहागणतपये नमः । महागणपतये नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि ।

श्रीमहागणपतये नमः । समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि।

अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहागणपतिः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ।

सूर्यपूजा

अध्यारूढं रथेन्द्रे वसुदलसहिते वृत्तषट्कोणमध्ये
भास्वन्तं भास्करं तं शुभदमसिगदाशङ्खचक्राब्जयुग्मम् ।
वेदाकारं त्रिमूर्तिं त्रिविधनयनगुणं विश्वरूपं पुराणं
ह्रांह्रींह्रूंकाररूपं सुरनुतमनिशं भावयेद्हृत्सरोजे ॥

आदित्यं ध्यायामि । आदित्यं आवाहयामि ।

आदित्याय नमः । आसनं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । पाद्यं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । आचमनीयं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । मधुपर्कं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । स्नानं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । आचमनीयं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । गन्धान् धारयामि ।

१ ॐ मित्राय नमः । २ ॐ रवये नमः । ३ ॐ सूर्याय नमः। ४ ॐ भानवे नमः । ५ ॐ खगाय नमः । ६ ॐ पूष्णे नमः । ७ ॐ हिरण्यगर्भाय नमः । ८ ॐ मरीचये नमः । ९ ॐ आदित्याय नमः । १० ॐ सवित्रे नमः । ११ ॐ अर्काय नमः। १२ ॐ भास्कराय नमः ।

आदित्याय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं घृणिस्सूर्य आदित्योम् आदित्य श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिः संतर्पयेत् ।

आदित्याय नमः । धूपमाघ्रापयामि ।

आदित्याय नमः । दीपं दर्शयामि ।

आदित्याय नमः । नैवेद्यं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । उत्तरापोशनं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । पादप्रक्षालनं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । आचमनीयं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । ताम्बूलं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । कर्पूरनीराजनं दर्शयामि ।

ॐ भास्कराय विद्महे महाद्युतिकराय धीमहि ।

तन्नो आदित्यः प्रचोदयात् ।

आदित्याय नमः । मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि ।

आदित्याय नमः । समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि ।

अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः आदित्यः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ।

विष्णुपूजा

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

श्री महाविष्णुं ध्यायामि । श्री महाविष्णुं आवाहयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । आसनं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । पाद्यं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । आचमनीयं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । मधुपर्कं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । स्नानं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । आचमनीयं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । गन्धान् धारयामि ।

१ ॐ केशवाय नमः । २ ॐ नारायणाय नमः । ३ ॐ माधवाय नमः । ४ ॐ गोविन्दाय नमः । ५ ॐ विष्णवे नमः। ६ ॐ मधुसूदनाय नमः । ७ ॐ त्रिविक्रमाय नमः । ८ ॐ वामनाय नमः । ९ ॐ श्रीधराय नमः । १० ॐ हृषीकेशाय नमः। ११ ॐ पद्मनाभाय नमः । १२ ॐ दामोदराय नमः ।

श्रीमहाविष्णवे नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं नमो नारायणाय महाविष्णु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः संतर्पयेत्-तीन बार तर्पण करें -

श्रीमहाविष्णवे नमः । धूपमाघ्रापयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । दीपं दर्शयामि ।

श्रीमहाविष्णवे नमः । नैवेद्यं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । उत्तरापोशनं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । पादप्रक्षालनं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । आचमनीयं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । ताम्बूलं समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । कर्पूरनीराजनं दर्शयामि ।
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि ।
श्रीमहाविष्णवे नमः । समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि ।
अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहाविष्णुः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ।

शिवपूजा

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारुपद्मासनस्थं
वामाङ्कारूढगौरीनिबिडकुचभराभोगगाढोपगूढम् ।
सर्वालङ्कारकान्तं वरपरशुमृगाभीतिहस्तं त्रिनेत्रं
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदनगुहाश्लिष्टपार्श्वं महेशम् ॥
साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि । साम्बपरमेश्वरं आवाहयामि ।
साम्बपरमेश्वराय नमः । आसनं समर्पयामि ।
साम्बपरमेश्वराय नमः । पाद्यं समर्पयामि ।
साम्बपरमेश्वराय नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ।
साम्बपरमेश्वराय नमः । आचमनीयं समर्पयामि ।
साम्बपरमेश्वराय नमः । मधुपर्कं समर्पयामि ।
साम्बपरमेश्वराय नमः । स्नानं समर्पयामि ।
साम्बपरमेश्वराय नमः । आचमनीयं समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । गन्धान् धारयामि ।

१ ॐ भवाय नमः । २ ॐ शर्वाय नमः । ३ ॐ ईशानाय नमः । ४ ॐ पशुपतये नमः । ५ ॐ रुद्राय देवाय नमः । ६ ॐ उग्राय देवाय नमः । ७ ॐ भीमाय देवाय नमः । ८ ॐ महते देवाय नमः ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । नानापरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं नमश्शिवाय साम्बपरमेश्वर श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः संतर्पयेत्-

साम्बपरमेश्वराय नमः । धूपमाघ्रापयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । दीपं दर्शयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । नैवेद्यं समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । उत्तरापोशनं समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । पादप्रक्षालनं समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । आचमनीयं समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । ताम्बूलं समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । कर्पूरनीराजनं दर्शयामि ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ।

साम्बपरेश्वराय नमः । प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि ।

साम्बपरमेश्वराय नमः । समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि ।

अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः साम्बपरमेश्वरः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुरायतनार्चनम् ॥
इति सामान्यार्घ्योदकेन देव्या वामहस्ते पूजां समर्पयेत् ।

लयाङ्गपूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी (पराभट्टारिका) श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति बिन्दौ देवीं त्रिः संतर्पयेत् ।

अत्रेष्टदेवताअपि तर्पयेत् -

षडङ्ग तर्पणम्

देव्यङ्गे (बिन्दौ) अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । आग्नेये

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ऐशान्याम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं कवचाय हुम् । कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । वायव्यै

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । मध्ये

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । पूर्वादिदिक्षु

षोडश्युपासकानां तु -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । आग्नेये

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ऐशान्याम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं कवचाय हुम् । कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । वायव्ये

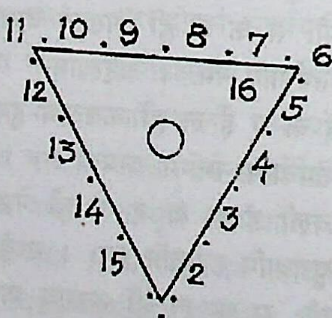
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । मध्ये

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । पूर्वादिदिक्षु

नित्यादेवीयजनम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः पञ्चदशी अः श्रीललितामहानित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति बिन्दौ महानित्यां त्रिर्यजेत् । अथ तत्तत्तिथिनित्यामन्त्रेण तत्तत्तिथिनित्यां बिन्दौ त्रिर्यजेत् ।

ततः पूर्ववत् महानित्यां त्रिर्यजेत् ।



ततो मध्यत्रिकोणस्य दक्षिणरेखायां वारुण्याद्याग्नेयान्तं क्रमेण अं आं इं ईं उं इति, पूर्वरेखायां आग्नेयादीशानान्तं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं इति, उत्तररेखायं ईशानादिवारुण्यन्तं एं ऐं ओं औं अं इति पञ्चपञ्चस्वरान् विभाव्य तेषु वामावर्तेन कामेश्वर्यादिनित्या यजेत् । बिन्दौ षोडशं स्वरं (अः) विचिन्त्य महानित्यां यजेत् । यथा -

शुक्लपक्षप्रतिपदा अमावस्या

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षद्वितीया कृष्णपक्ष चतुर्दशी

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लू जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षतृतीया कृष्णपक्षत्रयोदशी

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं ओं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्ना नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षचतुर्थी कृष्णपक्षद्वादशी

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं ओं क्रों भ्रों क्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षपञ्चमी कृष्णपक्षएकादशी

५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनी-नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षषष्ठी कृष्णपक्षदशमी

६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षसप्तमी कृष्णपक्षनवमी

७ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षअष्टमी कृष्णपक्षअष्टमी

८ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं ओं ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं

फट् ॠं त्वरितानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षनवमी कृष्णपक्षसप्तमी

९ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऌं ऐं क्लीं सौः ऌं कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षदशमी कृष्णपक्षषष्ठी

१० ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं हस्क्ल्र्डैं हस्क्ल्र्डीं हस्क्ल्र्डौः ॡं नित्यानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षएकादशी कृष्णपक्षपञ्चमी

११ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ह्रीं फ्रें स्त्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षद्वादशी कृष्णपक्षचतुर्थी

१२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं भ्म्र्यूं ऐं विजयानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षत्रयोदशी कृष्णपक्षतृतीया

१३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं स्वौं ओं सर्वमंगलानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

शुक्लपक्षचतुर्दशी कृष्णपक्षद्वितीया

१४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं ओं नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनी-नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

पूर्णिमा कृष्णपक्षप्रतिपदा

१५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं च्क्रौं अं चित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः पञ्चदशी अः ललितामहानित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । एवं शुक्लपक्षे । कृष्णपक्षे तु चित्राद्याः कामेश्वर्यन्ताः स्वस्वमन्त्रेण तथैव सम्पूज्य बिन्दौ महानित्यां यजेत् ।

गुरुमण्डलार्चनम् तर्पणम्

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परौघेभ्यो नमः । इति बिन्दु त्रिकोणयोः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा बिन्दौ महापादुकां यजेत् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौ हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्दनाथात्मक-चर्यानन्दनाथ श्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

त्रिकोणे वामकोणादारभ्य पूर्वरेखायां-

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं उड्डीशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं प्रकाशनन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं विमर्शानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं आनन्दानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

दक्षकोणादारभ्य दक्षरेखायां -

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं षष्ठीशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सत्यानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पूर्णानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

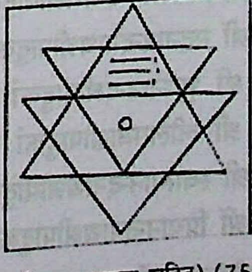
स्वाग्रकोणादारभ्य वामरेखायां -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मित्रेशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं स्वभावानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं प्रतिभानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं सुभगानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।



ततो देव्याः पश्चात् मूलत्रिकोणपूर्वरेखायाः तदव्यवहितप्रागग्रत्रिकोण-पश्चिमरेखायाश्चान्तरे विमलाजयिन्योर्मध्ये अरुणावाग्देवता सन्निधौ दक्षिणोत्तरायतं रेखात्रयं विभाव्य दक्षिणसंस्थाक्रमेण दिव्यसिद्ध-मानवाख्यमोघत्रयं मुनिवेदवसुसङ्ख्यं समर्चयेत् । यथा -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यौघसिद्धौघमानवौघेभ्यो नमः ।

इति पुष्पाञ्जलिः । दिव्यौघः । प्रथम रेखायां -

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं परप्रकाशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२ ॐऐं ह्रीं श्रीं परशिवानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ॐऐं ह्रीं श्रीं परशक्त्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
४ ॐऐं ह्रीं श्रीं कौलेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
५ ॐऐं ह्रीं श्रीं शुक्लदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
६ ॐऐं ह्रीं श्रीं कुलेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
७ ॐऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

सिद्धौघः । द्वितीयरेखायां -

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं भोगानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
२ ॐऐं ह्रीं श्रीं क्लिन्नानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ॐऐं ह्रीं श्रीं समयानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ ॐऐं ह्रीं श्रीं सहजानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

मानवौघः । तृतीयरेखायां -

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं गगनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२ ॐऐं ह्रीं श्रीं विश्वानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
३ ॐऐं ह्रीं श्रीं विमलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ ॐऐं ह्रीं श्रीं मदनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
५ ॐऐं ह्रीं श्रीं भुवनानन्दश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
६ ॐऐं ह्रीं श्रीं लीलाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
७ ॐऐं ह्रीं श्रीं स्वात्मानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
८ ॐऐं ह्रीं श्रीं प्रियानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ततः प्रथमरेखायां परमेष्ठिगुरुमन्त्रेण परमेष्ठिगुरुं, द्वितीयरेखायां परमगुरुमन्त्रेण, परमगुरु, तृतीयरेखायां स्वगुरुमन्त्रेण स्वगुरुं च यजेत् ।

परमेष्ठिगुरुमन्त्रः

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः हसख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौ, हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

परमगुरुमन्त्रः

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सोऽहं हंसः शिवः हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौ सोऽहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

श्रीगुरुमन्त्रः

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसोः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोऽहं स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

***

षष्ठः खण्डः

आवरणपूजा

ॐ ऐं ह्रीं श्री संचिन्मये परे देवि परामृतरुचिप्रिये ।
अनुज्ञां त्रिपुरे देहि परिवारार्चनाय मे ॥

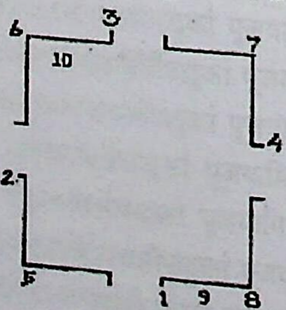
प्रथमावरणम्

त्रैलोक्यमोहने चक्रे पञ्चाशद्वर्णविग्रहे ।
प्रकटास्तत्र सम्पूज्यास्सिद्धयो दश सुन्दरि ॥
सद्यस्सन्तप्तहेमाभाः पाशाङ्कुशधराः प्रिये ।
महाभाण्डाररत्नानि ससुवर्णानि वै निधीम् ॥
प्रयच्छन्त्यस्साधकेभ्यः पद्महस्तास्सुपूजयेत् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं त्रैलोक्यमोहनचक्राय चतुरश्ररेखात्रयाय नमः। रेखां प्रथमायां तु पश्चिमाद्यासु दिक्षु च । वायव्यादि विदिक्षूर्ध्वमधश्चक्रमतो यजेत् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः । इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

क्रमेण शुक्लारुणपीतवर्णरेखात्रयस्य लकारप्रकृतिकपृथिव्यात्मकस्य चतुरश्रस्य प्रवेशरीत्या प्रथमरेखायां पश्चिमादिद्वारचतुष्टयदक्षिणभागेषु वाय्वादिकोणेषु च पश्चिमनैर्ऋतयोः पूर्वेशानयोश्च मध्ये क्रमेण -



१ ॐऐं ह्रीं श्रीं अं अणिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२ ॐऐं ह्रीं श्रीं लं लघिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ॐऐं ह्रीं श्रीं मं महिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ ॐऐं ह्रीं श्रीं ईं ईशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
५ ॐऐं ह्रीं श्रीं वं वशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
६ ॐऐं ह्रीं श्रीं पं प्राकाम्यसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
७ ॐऐं ह्रीं श्रीं भुं भुक्तिसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
८ ॐऐं ह्रीं श्रीं इं इच्छासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
९ ॐऐं ह्रीं श्रीं पं प्राप्तिसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१० ॐऐं ह्रीं श्रीं सं सर्वकामसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

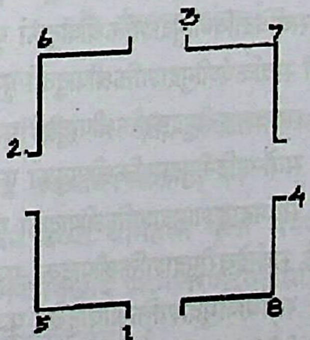
इति स्वस्य तत्तदाभिमुख्यं भावयन् पूजयेत् । एवमुत्तरत्रापि ।

रेखायां तु द्वितीयायां पश्चिमादिक्रमाद्यजेत् ।

एता वंश दलश्यामाः कपालोत्पलपाणयः ॥

बन्धूकाभास्स्मितास्यास्ता ध्येया ब्राह्मयादिमातरः ।

अथ चतुरश्रमध्यरेखायां प्रागुक्तद्वारवामभागेषु कोणेषु च क्रमेण -



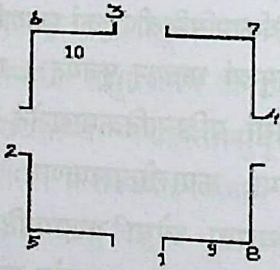
१ ॐऐं ह्रीं श्रीं आं ब्राह्मीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
२ ॐऐं ह्रीं श्रीं ईं माहेश्वरीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
३ ॐऐं ह्रीं श्रीं ऊं कौमारीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं ॠं वैष्णवीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
५ ॐऐं ह्रीं श्रीं लृं वाराहीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
६ ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं माहेन्द्रीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
७ ॐऐं ह्रीं श्रीं औं चामुण्डामातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
८ ॐऐं ह्रीं श्रीं अः महालक्ष्मीमातृश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

रेखायां तु तृतीयस्यां प्रथमायामिवार्चयेत् ।

एता रक्ता वराभीति पाशाङ्कुशकराञ्चिताः ।
त्रिनेत्राश्चन्द्रकोटीरास्सङ्क्षोभिण्यादिशक्तयः ।

ततः चतुरश्रान्त्यरेखायां प्रथमरेखोक्त क्रमेण -



१ ॐऐं ह्रीं श्रीं द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२ ॐऐं ह्रीं श्रीं द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ॐऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वाकर्षणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
४ ॐऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
५ ॐऐं ह्रीं श्रीं सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
६ ॐऐं ह्रीं श्रीं क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
७ ॐऐंह्रींश्रीं हस्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
८ ॐऐंह्रींश्रीं हसौः सर्वबीजमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
९ ॐऐंह्रींश्रीं ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१० ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्रैं हस्क्ल्रीं हस्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः

ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः संतर्पिताः संतुष्टाः सन्तु नमः । पुष्पाञ्जलिः

अणिमासिद्धि पुरतश्चक्रेशीं त्रिपुरां यजेत् ।

सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां तद्बीजेन प्रदर्शयेत् -



अणिमासिद्धेः पुरतः - चक्रेश्वर्या दक्षे सिद्धिर्वामे मुद्रा

ॐऐंह्रींश्रीं अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं अं अणिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं द्रां इति सर्वसंक्षोभिणी मुद्रां प्रदर्श्य -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिवारं संतर्प्य - धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

इति सामान्यार्घ्योदकेन देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं प्रकटयोगिनीमयूखायै प्रथमावरणदेवतासहितायै श्रीललिता-महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

प्रथमावरणे देवी शृङ्गाररसरूपिणी ।

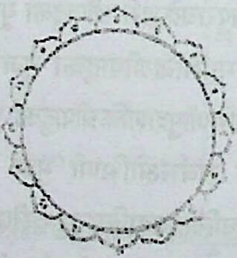
सर्वाशापरिपूरकचक्रार्चनम् (द्वितीयावरणम्)

सर्वाशापूरके चक्रे कलास्स्तवरविजृम्भिते ।
पश्चिमादिविलोमेन गुप्तास्सम्पूजयेत् क्रमात् ।
एतानित्या कलादेवि चन्द्रमण्डल मध्यगाः।
स्वरलग्नाः स्मरेन्नित्याः स्रवत्पीयूषवर्षिणीः ।
पाशाङ्कुशसुधापूर्णाः काश्मीर घटदानदाः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वाशापरिपूरकचक्राय षोडशदलाय नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः । पुष्पाञ्जलिः

श्वेतवर्णे सकारप्रकृतिकषोडशकलात्मके चन्द्रस्वरूपे स्रवदमृतरसे षोडशदलकमले देव्यग्रदलमारभ्य वामावर्तेन -



१ ॐऐं ह्रीं श्रीं अं कामाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२ ॐऐंह्रीं श्रीं आं बुद्ध्याकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ॐऐंह्रींश्रीं इं अहंकारकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
४ ॐऐंह्रीं श्रीं ईं शब्दाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
५ ॐऐंह्रीं श्रीं उं स्पर्शाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
६ ॐऐंह्रीं श्रीं ऊं रूपाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
७ ॐऐं ह्रीं श्रीं ऋं रसाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
८ ॐऐंह्रीं श्रीं ॠं गन्धाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
९ ॐऐंह्रीं श्रीं लृं चित्ताकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
१०ॐऐंह्रीं श्रीं लॄं धैर्याकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
११ ॐऐं ह्रींश्रीं एं स्मृत्याकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

१२ ॐऐंह्रींश्रीं ऐं नामाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
१३ ॐऐंह्रींश्रीं ओं बीजाकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१४ ॐऐंह्रींश्रीं औं आत्माकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१५ ॐऐंह्रीं श्रीं अं अमृताकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१६ ॐऐंह्रींश्रीं अः शरीराकर्षिणीनित्याकलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । पुष्पाञ्जलिः

चक्रेशीं त्रिपुरेशीं च कामाकर्षणिकाग्रताः ।

कामाकर्षिण्याः पुरतः -

ॐऐंह्रींश्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं लं लघिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐंह्रींश्रीं द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं द्रीं इति सर्वविद्राविणी मुद्रां प्रदर्श्य -

सर्वविद्राविणी मुद्रा का प्रदर्शन करें -



मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिवारं संतर्प्य -

धूपं दीपं नैवद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ।।

इति पूजां समर्प्य ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं गुप्तयोगिनीमयूखायै द्वितीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

द्वितीयावरणे ध्येया देवी वीर रसात्मिका

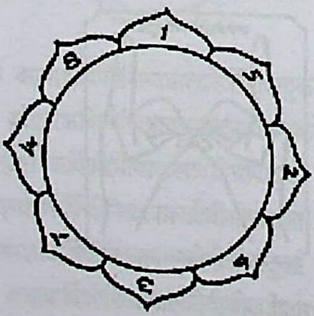
सर्वसंक्षोभणचक्रार्चनम् (तृतीयावरणम्)

सर्वसंक्षोभणे चक्रे कादि ळक्षान्तवर्णनि ।
देव्यो गुप्ततराः पूज्या बन्धूककुसुमप्रभाः ॥
पाशाङ्कुशस्फुरन्नीलोत्पलकराः स्मरेत् ।
पूर्वादिषु चतुर्दिक्षु कोणेष्वग्न्यादिषुक्रमात् ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभणचक्रायाष्टदलपद्माय नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः । पुष्पाञ्जलिः

हकारप्रकृतिकअष्टमूर्त्यात्मकशिवाभिन्ने जपाकुसुममित्रे अष्टपत्रे श्रीदेव्याः पृष्ठदलमारभ्य पूर्वादिदिक्षु आग्नेयादिविदिक्षु च क्रमेण -



१ ॐऐंह्रींश्रीं कंखंगंघं ङं अनङ्गकुसुमादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
२ ॐऐंह्रींश्रीं चंछंजंझं ञं अनङ्गमेखलादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
३ ॐऐंह्रींश्रीं टंठंडं ढं णं अनङ्गमदनादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
४ ॐऐंह्रींश्रीं तंथंदं धं नं अनङ्गमदनातुरादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
५ ॐऐंह्रींश्रीं पंफबं भं मं अनङ्गरेखादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

६ ॐऐंह्रींश्रीं यं रं लं वं अनङ्गवेगिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
७ ॐऐंह्रींश्रीं शं षं सं हं अनङ्गाङ्कुशादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
८ ॐऐंह्रींश्रीं ळं क्षं अनङ्गमालिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । पुष्पाञ्जलिः

अनङ्गकुसुमाग्रे तु यजेत्त्रिपुरसुन्दरीम् ।

अनङ्गकुसुमायाः पुरतः - (अनङ्गकुसुम के सामने चक्रेश्वरी तथा दक्षिण में सिद्धि और बाँये में मुद्रा का पूजन तर्पण करें।)

ॐऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं मं महिमासिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐंह्रींश्रींक्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इति सर्वाकर्षिणी मुद्रां प्रदर्श्य -



मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिवारं संतर्प्य ।

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ।।

इति पूजां समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं गुप्ततरयोगिनीमयूखायै तृतीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

तृतीयावरणे ध्येया करूणारसरूपिणी ।

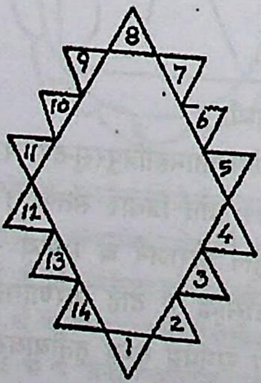
सर्वसौभाग्यदायकचक्रार्चनम् (तुरीयावरणम्)

महासौभाग्यदे चक्रे कढवर्णविराजिते ।
सम्प्रदाख्ययोगिन्यस्सर्वाभरणभूषिताः ॥
इन्द्रनीलनिभास्सर्वास्सगर्वोन्मित्तयौवनाः ।
पाशाङ्कुशौ दर्पणं च पानपात्रं सुधामयम् ॥
बिभ्रत्यस्सर्वसुभगाः पश्चिमादि विलोमतः ।
शक्तीस्सम्पूजयेद्देवीस्सम्प्रदाया हि सिद्धये ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं सर्वसौभाग्यदायक चक्राय चतुर्दशाराय नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं हैं हक्लीं हसौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः । पुष्पाञ्जलिः

ईकारप्रकृतिकचतुर्दशभुवनात्मकमहामायारूपे दाडिमीप्रसूनसहोदरे चतुर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन -



१ ॐऐं ह्रीं श्रीं कं सर्वसंक्षोभिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
२ ॐऐं ह्रीं श्रीं खं सर्वविद्राविणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
३ ॐऐं ह्रीं श्रीं गं सर्वाकर्षिणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
४ ॐऐं ह्रीं श्रीं घं सर्वाह्लादिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
५ ॐऐं ह्रीं श्रीं ङं सर्वसंमोहिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
६ ॐऐं ह्रीं श्रीं चं सर्वस्तम्भिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
७ ॐऐं ह्रीं श्रीं छं सर्वजृम्भणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
८ ॐऐं ह्रीं श्रीं जं सर्ववशङ्करीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
९ ॐऐं ह्रीं श्रीं झं सर्वरञ्जिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
१० ॐऐं ह्रीं श्रीं ञं सर्वोन्मादिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
११ ॐऐं ह्रीं श्रीं टं सर्वार्थसाधिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
१२ ॐऐं ह्रीं श्रीं ठं सर्वसम्पत्तिपूरणीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
१३ ॐऐं ह्रीं श्रीं डं सर्वमन्त्रमयीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
१४ ॐऐं ह्रीं श्रीं ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । पुष्पाञ्जलिः ।

संक्षोभिण्या अग्रभागे यजे त्रिपुरवासनीम् ।

सर्वसंक्षोभिण्याः पुरतः

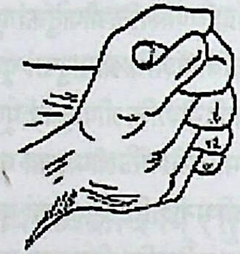
ॐऐं ह्रीं श्रीं हैं हक्लीं हसौः त्रिपुरवासिनी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ई ईशित्वसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं इति सर्ववशङ्करीमुद्रां प्रदर्श्य मूलेन देवी त्रिः सन्तर्प्य -

सर्ववशङ्करीमुद्रा का प्रदर्शन करके मूलमन्त्र से तीन बार तर्पण करें।



ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिवारं संतर्प्य -

धूपं दीपं नैवद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम् ।।

इति पूजां समर्प्य - ॐऐं ह्रीं श्रीं सम्प्रदाययोगिनीमयूखायै तुरीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

तुरीयावरणे देवी भयानकरसात्मिका ।

सर्वार्थसाधकचक्रार्चनम् (पञ्चमावरणम्)

सर्वार्थसाधके चक्रे भवार्णवाभिशोभिते ।

जपाकुसुमसङ्काशाः स्फुरन्मणिविभूषिताः ।।

महासौभाग्यगम्भीराः पीनवृत्तघनस्तनीः ।

रत्नपेटीविनिक्षिप्तान्दिव्यालङ्कारभूषणान् ।।

नानारत्नमयान्दिव्यान्दधतीर्हसितानना: ।

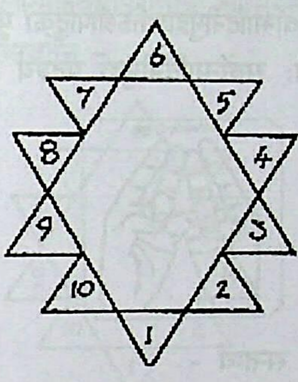
पश्चिमादिविलोमेन पूजयेत्सर्वसिद्धिदाः ।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वार्थसाधक चक्राय बहिर्दशाराय नमः ।

ॐऐंह्रींश्रीं हसैंहस्क्लीं हस्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः । पुष्पाञ्जलिः

एकार प्रकृतिकदशावतारात्मकविष्णुस्वरूपे प्रभापराभूतसिन्दूरे बहिर्दशारे

देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन -



१ ॐऐं ह्रीं श्रीं णं सर्वसिद्धिप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
२ ॐऐं ह्रीं श्रीं तं सर्वसम्पत्प्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ॐऐं ह्रीं श्रीं थं सर्वप्रियङ्करीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ ॐऐं ह्रीं श्रीं दं सर्वमङ्गलकारिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
५ ॐऐं ह्रीं श्रीं धं सर्वकामप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
६ ॐऐं ह्रीं श्रीं नं सर्वदुःखविमोचिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
७ ॐऐं ह्रीं श्रीं पं सर्वमृत्युप्रशमनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
८ ॐऐं ह्रीं श्रीं फं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
९ ॐऐं ह्रीं श्रीं बं सर्वाङ्गसुन्दरीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१० ॐऐं ह्रीं श्रीं भं सर्वसौभाग्यदायिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । पुष्पाञ्जलिः

सर्वसिद्धिप्रदाग्रे तु पूजयेत्त्रिपुरां श्रियम् ।

सर्वसिद्धिप्रदायाः पुरतः -

ॐऐं ह्रीं श्रीं हसैं हस्क्लीं हस्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं वं वशित्वसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐऐंह्रींश्रीं सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐऐं ह्रीं श्रीं सः सर्वोन्मादिनीमुद्रां प्रदर्श्य -



मूलेन देवीं. त्रिः सन्तर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिवारं संतर्प्य -

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलम् नीराजनम् च समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ।।

इति पूजां समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं कुलोत्तीर्णयोगिनीमयूखायै पञ्चमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

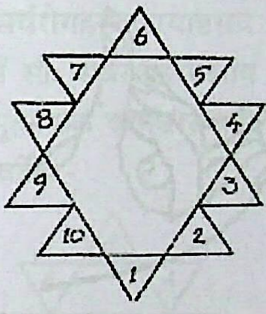
पञ्चमावरणे देवी बीभत्सरसशालिनी ।

सर्वरक्षाकरचक्रार्चनम् (षष्ठावरणम्)

सर्वरक्षाकरे चक्रे मक्षवर्णविभूषिते ।
पश्चिमादिविलोमेननिगर्भायोगिनी भवेत् ॥
उद्यद्भास्वत्सहस्राभामुक्तालङ्कारभूषिताः ।
पाशटङ्कायुधज्ञानमुद्रावरलसत्कराः ॥
देवीः प्रपूजयेन्नित्यं सर्वेप्सित फलप्रदाः ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं सर्वरक्षाकरचक्रायान्तर्दशाराय नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नमः । पुष्पाञ्जलिः

रेफप्रकृतिक दशकलात्मकवैश्वानराभिन्ने जपासुमनः सहचरे अन्तर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन -



१ ॐऐं ह्रीं श्रीं मं सर्वज्ञादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
२ ॐऐं ह्रीं श्रीं यं सर्वशक्तिमयीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ ॐऐं ह्रीं श्रीं रं सर्वैश्वर्यप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
४ ॐऐं ह्रीं श्रीं लं सर्वज्ञानमयीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
५ ॐऐं ह्रीं श्रीं वं सर्वव्याधिविनाशिनीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
६ ॐऐं ह्रीं श्रीं शं सर्वाधारस्वरूपाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
७ ॐऐं ह्रीं श्रीं षं सर्वपापहरादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
८ ॐऐं ह्रीं श्रीं सं सर्वानन्दमयीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
९ ॐऐं ह्रीं श्रीं हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
१० ॐऐं ह्रीं श्रीं क्षं सर्वेप्सितफलप्रदादेवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

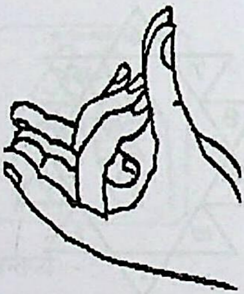
ॐऐं ह्रीं श्रीं एताः निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । पुष्पाञ्जलिः

सर्वज्ञाग्रे तु चक्रेशीं यजेत्त्रिपुरमालिनीम् ।

सर्वज्ञायाः पुरतः -

ॐऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरामालिनी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं पं प्राकाम्यसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐऐंह्रींश्रीं क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐऐं ह्रीं श्रीं क्रों इति सर्वमहाङ्कुशामुद्रां प्रदर्श्य -



मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्प्य-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिवारं सन्तर्प्य -

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठाख्यावरणार्चनम् ॥

इति पूजां समर्प्य-

ॐऐं ह्रीं श्रीं निगर्भयोगिनीमयूखायै षष्ठावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

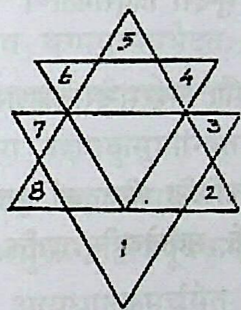
देवीं रौद्ररसाम् ध्यायेत् षष्ठे ह्यावरणे शुभे ।

सर्वरोगहरचक्रार्चनम् (सप्तमावरणम्)

सर्वरोगहरेचक्रे वर्गाष्टक विजृम्भिते ।
पश्चिमादिविलोमेन रहस्या योगिनीर्यजेत् ॥
श्रीपीठपुरुतोऽधस्ताद्दाडिमी कुसुमप्रभाः ।
रक्तवस्त्रपरीधानारक्तगन्धानुलेपनाः ॥

रक्तपुष्पाक्षतैस्सम्यक्पूजयेत् सर्वसिद्धिदाः ।
नानाभरणगम्भीराः पञ्चबाण धनुर्धराः
पुस्तकं वरदानं च दधतीर्वर्णसंस्थिताः ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं कं सर्वरोगहरचक्रायाष्टराय नमः ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः । पुष्पाञ्जलिः

ककारप्रकृतिक अष्टमूर्त्यात्मक कामेश्वरस्वरूपे पद्मरागरुचिरे अष्टारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन -



१ ॐऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूं वशिनी वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं क्लह्रीं कामेश्वरी वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनी वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं य्लूं विमला वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

५ ॐऐं ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणा वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

६ ॐऐं ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं हस्ल्व्यूं जयिनी वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

७ ॐऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

८ ॐऐं ह्रीं श्रीं शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एताः रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । पुष्पाञ्जलिः

वशिन्यग्रे तु चक्रेशी सुन्दरी त्रिपुरामता ।

वशिन्याः पुरतः-

ॐऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं भुं भुक्तिसिद्धि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें इति सर्वखेचरीमुद्रां प्रदर्श्य -

मूलेन देवीं त्रिः संतर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिवारं संतर्प्य -

धूपं दीपं नैवद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ।।



इति पूजां समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं रहस्ययोगिनीमयूखायै सप्तमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

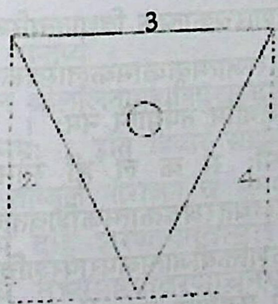
इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

सप्तमावरणे देवी ध्येया हास्यरसात्मिका ।

सर्वसिद्धिप्रदचक्रार्चनम् (अष्टमावरणम्)

सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे ह्यायुधानां च शक्तयः ।
पश्चिमादि क्रमेणैव युग्मयुग्मप्रभेदतः ॥
चतुर्दिक्षु च शोभाढ्या यौवनोन्मत्तविग्रहाः ।
रक्तविद्युत्कृताकारा उद्दामकुसुमान्विताः ॥
नवरत्नविशोभाढ्याः स्वास्वायुधपराः क्रमात्
जृम्भमोहवशस्तम्भयुक्तं तद्बीजपूर्वकम्
अङ्गावरणबाह्येतु आयुधाष्टकमर्चयेत्

मध्यत्र्यश्रस्य बहिः पश्चिमादिदिक्षु प्रादक्षिण्येन -



१ ॐऐं ह्रीं श्रीं यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यः कामेश्वरीकामेश्वरबाणेभ्यो नमः बाणशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं थं धं सर्वसम्मोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्यां नमः धनुःशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां नमः पाशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । प्राच्याम्

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं क्रों क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां नमः अङ्कुशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । दक्षिणस्याम्

इत्यायुधार्चनं विदध्यात् । ततः - इन आयुधों के पूजन के बाद पुष्पाञ्जलि दें -

ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्त्रैं हस्क्ल्रीं हस्त्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः । पुष्पाञ्जलिः

नादप्रकृतिकगुणत्रयप्रधानत्रिशक्तिरूपरेखात्रयात्मके बन्धूकपुष्पबन्धु-किरणे त्रिकोणे अग्रदक्षवामकोणेषु बिन्दौ च क्रमेण-

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथनवयोनिचक्रात्मकात्मतत्वसृष्टिकृत्यजाग्रद्दशाधिष्ठायकेच्छाशक्ति वाग्भवात्मकवागीश्वरीस्वरूप ब्रह्मात्मशक्तिमहाकामेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथदशारद्वयचतुर्दशारचक्रात्मक विद्यातत्वस्थितिकृत्यस्वप्नदशा-धिष्ठायकज्ञानशक्तिकामराजात्मककामकलास्वरूपविष्णवात्मशक्ति-महावज्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं सौः स क ल ह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथाष्टदलषोडशदलचतुरश्रचक्रात्मकशिवतत्वसंहारकृत्यसुषुप्ति दशाधिष्ठायकक्रियाशक्तिशक्तिबीजात्मकपरापरशक्तिस्वरूपरुद्रात्मशक्ति महाभगमालिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथ समस्तचक्रात्मकसपरिवारपरमतत्वसृष्टिस्थितिसंहारकृत्यतुरीयदशाधिष्ठायक इच्छाज्ञानक्रियाशान्ताशक्तिवाग्भवकामराजशक्तिबीजात्मकपरमशक्तिस्वरूपपरब्रह्मात्मशक्ति श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं एताः अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्राः ससिद्धियः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । पुष्पाञ्जलिः

चक्रेशीं त्रिपुराम्बां तु कामेश्वर्यग्रतोयजेत् ।

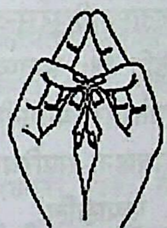
महाकामेश्वर्याः पुरतः -

ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्रैं हस्क्ल्रीं हस्रौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं इं इच्छासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं हसौः सर्वबीजमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं हसौः इति सर्वबीजमुद्रां प्रदर्श्य -



मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिवारं संतर्प्य -

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य -

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ॥

इति पूजां समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं अतिरहस्ययोगिनीमयूखायै अष्टमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी परभट्टारिकायै नमः ।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अष्टमावरणे चात्र देव्यद्भुतरसात्मिका ।

सर्वानन्दमयचक्रार्चनम् (नवमावरणम्)

सर्वानन्दमये नादमये शब्दाद्यगोचरे ।
परापररहस्याभ्यां योगिनीमतिपूर्विकाम् ॥
त्रिकूटया तु सम्पूज्य महात्रिपुरसुन्दरीम् ।
श्रीविद्यां पूजयेद्देवीं चिन्मयीं ब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥

ओं ऐं ह्रीं श्रीं अं सर्वानन्दमयबैन्दव चक्राय नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सर्वानन्दमयचक्राय नमः । पुष्पाञ्जलिः

बिन्दुभिन्नपरब्रह्मात्मके बिन्दुचक्रे -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः सन्तर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं एषा परापरातिरहस्ययोगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सर्वोपचारैः सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टास्तु नमः । पुष्पाञ्जलिः

महात्रिपुरसुन्दर्याः पुरतः -

ॐऐं ह्रीं श्रीं पञ्चदशी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं पं प्राप्तिसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं इति सर्वयोनिमुद्रां प्रदर्श्य



षोडश्युपासकानामेव विशेष :-

ॐऐं ह्रीं श्रीं हसकल हसकहल सकल ह्रीं तुरीयाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः संतर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं एषा सर्वानन्दमये चक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्द-नाथात्मकतुरीयातीतदशाधिष्ठायकशान्त्यतीतकलात्मकप्रकाशविमर्श सामरस्यात्मकपरब्रह्मस्वरूपिणी परामृतशक्तिः सर्वमन्त्रेश्वरी सर्वपीठेश्वरी सर्वयोगेश्वरी सर्ववागीश्वरी सर्वसिद्धेश्वरी सर्ववीरेश्वरी सकलजगदुत्पत्ति-मातृका सचक्रा सदेवता सासना सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सचक्रेशिका परया अपरया परापरया सपर्यया सर्वोपचारैः सम्पूजिता संतर्पिता संतुष्टास्तु नमः । इति समष्ट्यञ्जलिं विधाय ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं सं सर्वकामसिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्त्रैं हस्क्ल्रीं हस्त्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्त्रैं हस्क्ल्रीं हस्त्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्रां प्रदर्श्य ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्प्य -



ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिवारं संतर्प्य -

धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं नीराजनं च समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ।।

इति पूजां समर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं परापराविरहस्ययोगिनीमयूखायै नवमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

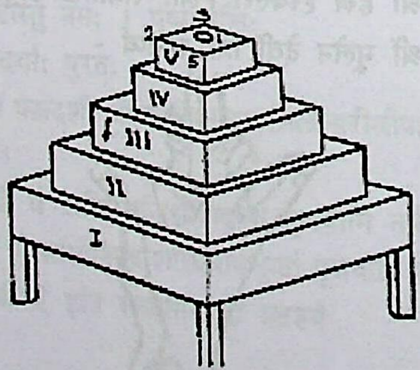
इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अन्तिमावरणे ध्येया देवी शान्तरसात्मिका ।

पञ्चपञ्चिकापूजा

बिन्दुचक्रोपरि सिंहासनाकारेण पीठभावनां कृत्वा मध्ये वाय्वीशानाग्नि नैर्ऋतिकोणेषु च क्रमेण यजेत् ।

बिन्दुचक्र के ऊपर सिंहासन के आकार की पीठ की कल्पना करके उसके मध्य, वायव्य, ईशान, आग्नेय और नैऋत्यकोणों में क्रमशः यजन करें ।



१ पञ्चलक्ष्म्यम्बाः

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं । श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्यालक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (मध्ये) मध्ये में -

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं श्रीं । श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी लक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । वायव्ये

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ओं महालक्ष्म्यै नमः । श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासन-संस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी महालक्ष्मीलक्ष्म्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ऐशान्याम्

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीमहालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डिता-सनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी त्रिशक्तिलक्ष्म्यम्बा-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । आग्नेयाम्

५ ॐऐं ह्रीं श्रीं श्रीं सहकलह्रीं श्रीं महालक्ष्मीश्वरीवृन्दमण्डितासन-संस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी सर्वसाम्राज्यलक्ष्म्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

२ पञ्चकोशाम्बाः

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं । महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्याकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (मध्ये) मध्ये में -

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं हंसस्सोऽहं स्वहा । महाकोशेश्वरीवृन्द-मण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी परंज्योतिः कोशाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । वायव्ये

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं हंसः । महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी परानिष्कलाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ऐशान्याम्

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं हंसः । महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी अजपाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । आग्नेयाम्

५ ॐऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं । महाकोशेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी मातृकाकोशाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

३ पञ्च कल्पलताः

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं । महाकल्पलतेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्याकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (मध्ये)

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं । महाकल्पलतेश्वरी-वृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । (पञ्चकामेश्वरी) त्वरिताकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । वायव्ये

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं ह्रां हसकलह्रीं ओं सरस्वत्यै नमः । महाकल्पलतेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पारिजातेश्वरीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ऐशान्याम्

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः । महाकल्पलतेश्वरीवृन्द-मण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी (कुमारी) त्रिपुटाकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । आग्नेयाम्

५ ॐऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः । महाकल्पलतेश्वरीवृन्द-मण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी महात्रिपुरसुन्दरी पञ्चबाणेश्वरी-कल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

४ पञ्चकामदुघाः

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं । महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्याकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । मध्ये

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं हंसः जुं संजीवनि जीवं प्राणग्रन्थिस्थं

कुरु कुरु स्वाहा । महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्य-जननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी अमृतपीठेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । वायव्ये

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं वद वद वाग्वादिनि हस्त्रैं क्लीं क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु कुरु ह्स्क्ल्रीं सौः ओं मोक्षं कुरु कुरु हस्त्रौः । महाकामदुघेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरी सुधाकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ऐशान्याम्

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरी अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा । महाकामदुघेश्वरीवृन्द-मण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी अमृतेश्वरीकाम-दुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । आग्नेयाम्

५ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ओं नमो भगवति महोश्वरी अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा । महाकामदुघेश्वरीवृन्द-मण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी । अन्नपूर्णा-कामदुघाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

५ पञ्चरत्नाम्बाः

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं । महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्यारत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । मध्ये

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं ज्झ्रीं महाचण्डे तेजःसंकर्षिणि कालमन्थाने हः । महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरी सिद्धलक्ष्मीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । वायव्ये

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ओं नमो भगवति राजमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखरञ्जनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराज-वशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वमृत्युवशङ्करि सर्वसत्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि त्रैलोक्यं मे वशमानय स्वाहा सौः

क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं । महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी राजमातङ्गीश्वरी रत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ऐशान्याम्

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं । महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी भुवनेश्वरीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । आग्नेयाम्

५ ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनी नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं अस्त्राय फट् स्वाहा । महारत्नेश्वरीवृन्दमण्डितासनसंस्थिता सर्वसौभाग्यजननी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी वाराहीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । नैर्ऋत्याम्

षड्दर्शनविद्याः

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा । तारादेवताधिष्ठित-बौद्धदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं भुर्भूस्सुवः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । परोजसेऽसावदोम् । ब्रह्मदेवताधिष्ठित-वैदिकदर्शन श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं नमश्शिवाय । रुद्रदेवताधिष्ठितशैवदर्शन श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं घृणिस्सूर्य आदित्योम् । सूर्यदेवता-धिष्ठितसौरदर्शनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

५ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं नमो नारायणाय । विष्णुदेवताधिष्ठित-वैष्णवदर्शन श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

६ ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं श्रीं ह्रीं श्रीं भुवनेश्वरीदेवताधिष्ठितशाक्तदर्शन श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

षडाधारपूजा

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं सां हंसः मूलाधाराधिष्ठानदेवतायै साकिनीसहित गणनाथस्वरूपिण्यै नमः । गणनाथस्वरूपिण्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं कां सोऽहं स्वाधिष्ठानाधिष्ठानदेवतायै काकिनीसहित-ब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः। ब्रह्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं लां हंसस्सोऽहं मणिपूरकाधिष्ठानदेवतायै लाकिनी-सहितविष्णुस्वरूपिण्यै नमः । विष्णुस्वरूपिण्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं रां हंसश्शिवस्सोऽहं अनाहताधिष्ठानदेवतायै राकिणीसहितसदाशिवस्वरूपिण्यै नमः । सदाशिवस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

५ ॐऐं ह्रीं श्रीं डां सोऽहं हंसश्शिवः । विशुद्ध्यधिष्ठानदेवतायै डाकिनीसहितजीवेश्वरस्वरूपिण्यै नमः । जीवेश्वरस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

६ ॐऐं ह्रीं श्रीं हां हंसश्शिवस्सोऽहं सोऽहं हंसश्शिवः आज्ञाधिष्ठानदेवतायै हाकिनीसहितपरमात्मस्वरूपिण्यै नमः । परमात्मस्वरूपिण्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

आम्नायसमष्टिपूजा

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्रैं हस्क्लरीं हस्रौः । पूर्वाम्नायसमयविद्येश्वर्युन्मोदिनी देव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं गुरुत्रयगणपतिपीठत्रयसहितायै शुद्धविद्यादि-समयविद्येश्वरीपर्यन्तचतुर्विंशतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै कामगिरिपीठस्थितायै पूर्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुनदरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३ ॐऐं ह्रीं श्रीं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले हसौः दक्षिणाम्नाय

समयविद्येश्वरीभोगिनीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४ ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं भैरवाष्टकनवसिद्धौघवटुकत्रयपदयुगसहितायै सौभाग्यविद्यादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तत्रिंशत्सहस्त्रदेवतापरिसेवितायै पूर्णगिरि-पीठस्थितायै दक्षिणाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

५ ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्त्रैं हस्त्रीं हस्त्रौः हस्ख्फ्रे भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं हस्ख्फ्रे अघोरमुखि छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे हस्त्रौः हस्ख्फ्रे हस्त्रौः। पश्चिमाम्नायसमयविद्येश्वरीकुब्जिकादेव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

६ ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं दशदूतीमण्डलत्रयदशवीरचतुःषष्टिसिद्धनाथ सहितायै लोपामुद्रादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्त्रदेवतापरिसेवितायै जालन्धरपीठस्थितायै पश्चिमाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

७ ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें महाचण्डयोगीश्वरि कालिके फट् । उत्तराम्नायसमयविद्येश्वरीकालिकादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

८ ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं नवमुद्रापञ्चवीरावलीसहितायै तुर्याम्बादिसमय-विद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्त्रदेवतापरिसेवितायै ओड्याणपीठस्थितायै उत्तराम्नाय-समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

षोडश्युपासकानाम्

९ ॐऐं ह्रीं श्रीं मखपरयघच् महिचनडयङ्गंशफर् ऊर्ध्वाम्नायसमय-विद्येश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

१० ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजगुरुमण्डलसहितायै पराम्बादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्ताशीतिसहस्त्रदेवतापरिसेवितायै शाम्भव-पीठस्थितायै ऊर्ध्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

११ ॐऐं ह्रीं श्रीं भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि हस्ख्फ्रें हस्ख्फ्रें हस्त्रौः । अनुत्तरशाङ्कर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं परिपूर्णानन्दनाथदिनवनाथसहितायै चतुर्दशमूल-विद्यादिश्रीपूर्तिविद्यान्तानन्तदेवतापरिसेवितायै अनुत्तराम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ततः अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गदेवतार्चनं कृत्वा, मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्पयेत् ।

अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गदेवता यजनम्

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं ऐं क्लीं सौः श्रीदेव्यङ्गभूताबालाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ओं नमो भगवती अन्नपूर्णे ममाभिलषितं अन्नं देहि स्वाहा । श्रीदेव्या उपाङ्गभूतान्नपूर्णाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा । श्रीदेवीप्रत्यङ्गभूता अश्वारूढाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमः उच्छिष्टचाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्रीश्यामाङ्गभूत लघुश्यामलाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा । श्रीश्यामोपाङ्गभूतवाग्देव्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृतापविः । सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत् ।। श्रीश्यामाप्रत्यङ्गभूत नकुलीविद्याम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ओं नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखरञ्जनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि

सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्व सत्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि त्रैलोक्यं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं । श्रीराजश्यामलाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं लं वाराहि लं उन्मत्तभैरवि पादुकाभ्यां नमः । श्रीवाराह्यङ्गभूत लघुवार्तालयम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा । श्रीवाराह्या उपाङ्गभूत स्वप्नवाराह्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं नमो भगवति तिरस्कारिणि महामाये सकल-पशुजनमनश्चक्षुस्तिरस्करणं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा । श्रीवाराहीप्रत्यङ्गभूत तिरस्करण्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमो । रुन्धे रुन्धिनि नमो । जम्भे जम्भिनि नमो । मोहे मोहिनि नमः । स्तम्भे स्तम्भिनि नमः । सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं अस्त्राय फट् । श्री महावाराह्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

मूलेन देवीं त्रिःसतर्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

अर्चनान्ते स्वेष्ट देवतास्तर्पयेत् । अग्रे सिंहादिरूढ़ा निजपरिसरयोः मन्त्रिणी दण्डनाथे: ।

पश्चात् प्रत्यङ्गिराद्या असुरदिशमुपक्रम्म ब्रह्मास्त्र देवीम् ।
गायत्री सम्पदम्बा तुरगपरिवृढ़ा सर्वतश्चक्रदेव्यः ।
श्रीपीठेऽङ्केऽस्थ बालां परशिवनिलयां ब्रह्मविद्यां नमामि ।।
शोण प्रभं सोमकलावतंसं पाणिस्फुरत्पञ्च शरेक्षुचापम् ।
प्राणप्रियं नौमि पिनाकपाणेः कोणादिसंस्थं कुलदैवतं नः ।।

दण्डनाथानामानि

१ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं पञ्चम्यै नमः ।
२ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं दण्डनाथायै नमः ।
३ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं सङ्केतायै नमः ।
४ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं समयेश्वर्यै नमः ।
५ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं समयसङ्केतायै नमः ।
६ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं वाराह्यै नमः ।
७ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं पोत्रिण्यै नमः ।
८ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं शिवायै नमः ।
९ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं वार्ताल्यै नमः ।
१० ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं महासेनायै नमः ।
११ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं आज्ञाचक्रेश्वर्यै नमः ।
१२ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं अरिघ्न्यै नमः ।

मन्त्रिणीनामानि

१ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं संगीतयोगिन्यै नमः ।
२ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं श्यामायै नमः ।
३ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं श्यामळायै नमः ।
४ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं मन्त्रनायिकायै नमः ।
५ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं मन्त्रिण्यै नमः ।
६ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं सचिवेशान्यै नमः ।
७ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं प्रधानेश्यै नमः ।
८ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं शुकप्रियायै नमः ।
९ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं वीणावत्यै नमः ।
१० ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं वैणिक्यै नमः ।
११ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं मुद्रिण्यै नमः ।
१२ ॐ ऐं ह्लीं श्रीं ओं प्रियकप्रियायै नमः ।

१३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं नीपप्रियायै नमः ।
१४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं कदम्बेश्यै नमः ।
१५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं कदम्बवनवासिन्यै नमः ।
१६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं सदामदायै नमः ।

ललितानामानि

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं सिंहासनेश्यै नमः ।
२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं ललितायै नमः ।
३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं महाराज्ञ्यै नमः ।
४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं वराङ्कुशायै नमः ।
५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं चापिन्यै नमः ।
६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं त्रिपुरायै नमः ।
७ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।
८ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं सुन्दर्यै नमः ।
९ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं चक्रनाथायै नमः ।
१० ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं सम्राज्ञ्यै नमः ।
११ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं चक्रिण्यै नमः ।
१२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं चक्रेश्वर्यै नमः ।
१३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं महादेव्यै नमः ।
१४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं कामेश्यै नमः ।
१५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं परमेश्वर्यै नमः ।
१६ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं कामकोटिराजप्रियायै नमः ।
१७ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं कामकोटिकायै नमः ।
१८ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं चक्रवर्तिन्यै नमः ।
१९ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं महाविद्यायै नमः ।
२० ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं शिवानङ्गवल्लभायै नमः ।
२१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं सर्वपाटलायै नमः ।

२२ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं कुलनाथायै नमः ।
२३ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं आम्नायनाथायै नमः ।
२४ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं सर्वाम्नायनिवासिन्यै नमः ।
२५ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं श्रृङ्गारनायिकायै नमः ।
अथ यथावकाशं सहस्रनामावल्यादिना अर्चनं कुर्यात् ।

धूपः

ॐऐं ह्रीं श्रीं धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामस्त्वं देवानामसि सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं वह्नितमं देवहूतमम् अह्रुतमसि हविर्धानं दृꣳहस्व माह्वार्मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रेक्षे माभेर्मा संविक्था मा त्वा हिꣳसिषम् ।

लाक्षासम्मिलितैः शिलारसयुतैः श्रीवाससम्मिश्रितैः
कर्पूराकलितैः सितामधुयुतैर्गोसर्पिषालोडितैः ।
श्रीखण्डागुरुगुग्गुलुप्रभृतिभिर्नानाविधैर्वस्तुभिः
धूपं ते परिकल्पियामि जननि! त्वं धूपमङ्गीकुरु ॥

ॐ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः धूपमाघ्रापयामि। धूपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ।

दीपः

ॐऐं ह्रीं श्रीं उद्दीप्यस्व जातवेदोपघ्नन्निर्ऋतिं मम । पशूꣳश्च मह्यमावह जीवनं च दिशो दिश । मा नो हिꣳसीर्जातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत् । अविभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय ।

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ।
सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः दीपं दर्शयामि । दीपानन्तर आचमनीयं समर्पयामि ।

ततः सर्वसंक्षोभिण्यादिमुद्राः प्रदर्शयेत् ।

१ ॐऐं ह्रीं श्रीं द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।
२ ॐऐं ह्रीं श्रीं द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।
३ ॐऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।
४ ॐऐं ह्रीं श्रीं ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।
५ ॐऐं ह्रीं श्रीं सः सर्वोन्मादिनीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।
६ ॐऐं ह्रीं श्रीं क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।
७ ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्खफ्रें सर्वखेचरीमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।
८ ॐऐं ह्रीं श्रीं हसौः सर्वबीजमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।
९ ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं सर्वयोनिमुद्रां प्रदर्शयामि नमः ।
षोडश्युपासकानां तु
१० ॐऐं ह्रीं श्रीं हस्रैं हस्क्लरीं हस्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्रां प्रदर्शयामि नमः।

नैवेद्यम्

श्रीदेव्यग्रे चतुरश्रमण्डलं सामान्यार्घ्योदकेन विधाय तत्र आधारोपरि स्थापितं सौवर्णरौप्यकांस्यादिस्थालीचषकभरितम् । भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्य-पेयात्मकं रसवद्व्यञ्जनमञ्जुलं प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमुग्धं यथासम्भवं वा नैवेद्यं विधाय मूलेन निरीक्ष्य -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं निरीक्ष्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्ः इति अस्त्रेण प्रोक्ष्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं जुं सः वौषट् इति सप्तवारमभिमन्त्रितजलेन प्रोक्ष्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्य -



ॐऐं ह्रीं श्रीं यं इति वायुबीजेनाधोमुखवामकरेण सप्तवारं जपन् तद्गतदोषान् संशोष्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं रं इति वह्निबीजेन अधोमुखदक्षकरेण संदह्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलेन विशेषार्घ्यबिन्दुभिः प्रोक्ष्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं क्लीं कामदुघे अमोघे वरदे विच्चे स्फुर स्फुर श्रीं परश्रीं । इति कामधेनुविद्यया धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य -

दैव्यै पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं दत्त्वा -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्प्य -

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

पात्रान्तरे विशेषार्घ्यं किञ्चिद्गृहीत्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन् ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः- इति नैवेद्यपरिसरे संस्थाप्य । कृताञ्जलिः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि ॥
शर्करापायसापूपघृतव्यञ्जनसंयुतम् ।
विचित्ररुचि नैवेद्यं हृद्यमावेदयाम्यहम् ॥ इति निवेद्य

ॐ भुर्भूस्सुवः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि (इति दिवा), ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि (इति रात्रौ) । अमृतोपस्तरणमसि इति देव्यै आपोशनं दत्त्वा वामकरेण ग्रासमुद्रां दर्शयन्, दक्षकरेण प्राणादिपञ्चमुद्रा-प्रदर्शनपूर्वकं पञ्च प्राणाहुतीः कल्पयेत् । यथा -

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्राणाय स्वाहा ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अपानाय स्वाहा ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं सौः व्यानाय स्वाहा ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं उदानाय स्वाहा ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः समानाय स्वाहा ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे स्वाहा ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ए ई ल ह्रीं आत्मतत्त्वव्यापिका श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।
ॐऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह स क ह ल ह्रीं विद्यातत्त्वव्यापिका श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु ।
ॐऐंह्रींश्रींसौः सकल ह्रीं शिवतत्त्वव्यापिका श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।
ॐऐंह्रींश्रींऐं क्लींसौः मूलं सर्वतत्त्वव्यापिका श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु ।
इति किञ्चित्किञ्चित् सामान्यार्घ्योदकं दद्यात् ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं चित्पात्रे सद्धविस्सौख्यं विविधानेकभक्षणम् ।
निवेदयामि ते देवि सानुगायै जुषाण तत् ॥
मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसि मधुमत्पार्थिवꣳरजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः । इति पुष्पाञ्जलिं विन्यस्य नैवेद्यजातं तादात्म्येन समर्पयेत् ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं परम् ।
अन्यानिवेदितं शुद्धं प्रकृतिस्थं सुशीलतम् ॥
अमृतानन्दसम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम् ।
अतिशीतमुशीरवासितं तव पाणौ च मया निवेदितम् ॥
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गङ्गामृतमम्ब! पीयताम् ॥
ॐऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै अमृतपानीयं समर्पयामि ।
भुञ्जानां परदेवतां ध्यायेत् -
घण्टानाद कुर्वन्,

ॐऐं ह्रीं श्रीं ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्ता-
द्दिव्याकल्पैर्ललितरमणीवीज्यमाना सखीभिः ।
नर्मक्रीडाप्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान्
भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते षड्रसान् लोकधात्री ॥
कलिङ्ग कोषातक संयुतानि जम्बीर नारङ्ग समन्वितानि ।
सनारिकेलानि सदाडिमानि फलानि ते देवि समर्पयामि ॥
देवीं भुक्तवतीं सुतृप्तां ध्यात्वा -
ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं अमृतापिधानमसि । इत्युत्तरापोशनं दत्वा -
ॐऐं ह्रीं श्रीं श्रीललितायै हस्तप्रक्षालनं गण्डूषं पादप्रक्षालनं आचमनीयं कल्पयामि नमः ।
उष्णोदकैः पणियुगं मुखञ्च प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रे ।
कर्पूरमिश्रेण सकुङ्कुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन ॥
श्रीललितायै गण्डूषाद्युपचारान्कल्पयामि ।
ताम्रबलिपात्रे निवेदनसामग्रीः किञ्चित्किञ्चिदादाय निवेदनपात्राणि निर्गमय्य तत्स्थलं अस्त्रेण शोधयेत् ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्

ताम्बूलम्

ॐऐं ह्रीं श्रीं वनस्पतिदेवत्याय ताम्बूलाय नमः। इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य - इससे सामान्यार्घ्य के जल से ताम्बूल का प्रोक्षण कर निम्न मन्त्र से भगवती को अर्पित करें ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं तमालदलकर्पूरपूगभगसमन्वितम् ।
एलापत्रसुसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

कुलदीपः

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम् ।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये ।।

कर्पूरनीराजनम्

ॐऐं ह्रीं श्रीं सोमो वा एतस्य राज्यमादत्ते । यो राजा सन्नाज्यो वा सोमेन यजते । देवसुवामेतानि हवीꣳषि भवन्ति । एतावन्तो वै देवानाँ सवाः । त एवास्मै सवान् प्रयच्छन्ति । त एनं पुनः सुवन्ते राज्याय । देवसू राजा भवति ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठिकं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यम् । न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः । तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति । राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । समे कामान्कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।

मन्त्रपुष्पम्

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति । चन्द्रमा वा अपां पुष्पम् । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । अग्निर्वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । योऽग्नेरायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वा अग्नेरायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । वायुर्वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यो वायोरायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै वायोरायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । असौ वै तपन्नपामायतनम् । आयतनवान् भवति । योऽमुष्य तपत आयतनं वेद । आयतनवान् भवति। आपो वाअमुष्य तपत आयतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद। योऽपामायतनम् वेद । आयतनवान् भवति । चन्द्रमा वा अपामायतनम् ।

आयतनवान् भवति । यश्चन्द्रमस आयतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै चन्द्रमस आयतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनम् वेद । आयतनवान् भवति । नक्षत्राणि वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यो नक्षत्राणामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै नक्षत्राणामायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । पर्जन्यो वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यः पर्जन्यस्यायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै पर्जन्यस्यायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति । संवत्सरो वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवति । यस्संवत्सरस्यायतनं वेद । आयतनवान् भवति । आपो वै संवत्सरस्यायतनम् । आयतनवान् भवति । य एवं वेद । योऽप्सु नावं प्रतिष्ठितां वेद । प्रत्येव तिष्ठति ।।

***

सप्तमः खण्डः

कामकलाध्यानम्

स्थूलं बिन्दुना मुखं बिन्दुद्वयेन कुचौ सपरार्धेन योनिः इति कामकलां ध्यायेत् ।

मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो
हरार्धं ध्यायेद्यो हरमहिषि ते मन्मथकलाम् ।
स सद्यः संक्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु
त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगम् ॥

कामेश्वरी और कामेश्वर के अभेदयोग का सामरस्य ही कामकला है । कामकला ध्यान के दो भेद हैं - स्थूल और सूक्ष्म । ईकार में मिश्र, रक्तबिन्दु की भावना करके उन बिन्दुओं में मुख, स्तन-मण्डल और योनि का चिन्तन करें और इन सबका आत्मा के साथ ऐक्य स्थापित कर आत्मातत्त्व-भावना से परमानन्द का अनुभव होता है । यह स्थूल-ध्यान है ।

महामन्त्रराजान्तबीजं पराख्यं स्वतो न्यस्तबिन्दु स्वयं न्यस्तहार्दम् ।
भवद्वक्त्रवक्षोजगुह्याभिधानं स्वरूपं सकृत्द्भावयेत्स त्वमेव ॥
तथान्ये विकल्पेषु निर्विण्णचित्तास्तदेकं समाधाय बिन्दुत्रयं ते।
परानन्दसन्धानसिन्धौ निमग्नाः पुनर्गर्भरन्ध्रं न पश्यन्ति धीराः ॥

सूक्ष्मं - कामकला = क्+अ+अ, म्+अ; क्+अ, ल्+अ+अ ।

कामशब्दविमर्शः

क्=माया, अ=तदवच्छिन्नं चैतन्यमीश्वरः,. अ=शुद्धचैतन्यं; म्=अविद्या, अ=तदवच्छिन्नं चैतन्यं जीवः । मायावच्छिन्नचैतन्यं अविद्यावच्छिन्नचैतन्यं च शुद्धचैतन्यमेव । उपाधिनिरसनेन जीवेश्वरौ शुद्धब्रह्मणोऽभिन्नौ । सामानाधिकरण्येन जीव एव ईश्वरः । भागत्याग-

लक्षणयाऽयमर्थः पर्यवसन्नः । अहं सः=हंसः, सः अहं=सोऽहम्।

क=मायाः, अ=उससे अवच्छिन्न चैतन्य ईश्वर; अ-शुद्ध चैतन्य, म्-अविद्या, अ उससे अवच्छिन्न चैतन्य जीव । माया से अवच्छिन्न चैतन्य और अविद्या से अवच्छिन्न चैतन्य शुद्ध चैतन्य है । उपाधिरहित जीवेश्वर ही शुद्ध ब्रह्म है । सामानाधिकरण्य से जीव ही ईश्वर है और भागत्यागलक्षणा से इसका ऐक्य पर्यवसान होता है ।

कलाशब्दविमर्शः

क्=आकाशं, अ=तदुपहितचैतन्यं, ल्=पृथिवी, अ=तदुपहितचैतन्यं, अ=शुद्धचैतन्यम् । पृथिव्याद्याकाशान्तं परिदृश्यमानः सर्वः प्रपञ्चो ब्रह्मैव । 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' इति हि श्रुतिः ।

शिवाद्यवनिपर्यन्तपरिदृश्यमानसर्वप्रपञ्चाधिष्ठाननिर्विशेषब्रह्मैवाहमित्य-खण्डार्थानुसन्धानं कामकलाविमर्शः ।

शिव से पृथिवी पर्यन्त सभी दृश्यमान प्रपञ्च के अधिष्ठान निर्विशेष ब्रह्म ही है, इस अर्थ का अनुसन्धान ही कामकलाविमर्श है ।

सौभाग्यहृदयम्

सौः इति शक्तिबीजं श्रीदेव्या हृदयत्वेन भावयेत् । सकार विसर्ग-औकारसमुदायः-सौः इति । सकारः तच्छब्दपर्यायः । विसर्गेण हकारो लक्षितः । स च अहंशब्दपर्यायः । औकारः तयोः सामरस्यबोधकः। ब्रह्मैवाहमिति ।

कामकला ध्यातैव सौभाग्यहृदयमामृष्टं भवति ।

प्रकाश (अ), विमर्श (ह), विषयक अहन्ता का ध्यान 'कामकला' का सूक्ष्म ध्यान है । इसमें यह ध्यान करें कि यह 'आत्मा' 'ब्रह्म' है तथा समस्त विश्व इस 'ब्रह्माभिन्न आत्मा' से ही उत्पन्न हुआ है और इसमें ही 'अवस्थित' है तथा इसमें ही 'लय' हो जाता है ।

***

अष्टमः खण्डः

होमः

होमस्य इतिकर्तव्यता ग्रन्थान्तरे द्रष्टव्या । होमः कृताकृतः । अकरणे न प्रत्यवायः । करणे तु श्रेय एव ।

होम नहीं करने पर पाप नहीं होता है और होम करने से तो अभ्युदय ही होता है । करने वालों के लिए इसका विधान अनेक ग्रन्थों में दिया गया है ।

नवमः खण्डः

बलिदानि हविः प्रतिपत्त्यन्तम् ।

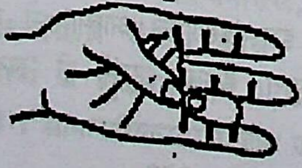
बलिदानम्

देव्या दक्षभागे सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोणवृत्तचतुरश्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं व्यापकमण्डलाय नमः - इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य- अर्धभक्तपूरितोदकं सक्षीरादित्रयं बलिपात्रं तत्र विन्यस्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा-इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा दक्षकरार्पितं वामकरतत्त्वमुद्रास्पृष्टं सलिलं बल्युपरि दत्त्वा वामपार्ष्णिघातकरास्फोटौ कुर्वाणः समुदञ्चितवक्त्रो बाणमुद्रया बलिं भूतैर्ग्रासितं विभाव्य योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर दांयें हाथ को उसपर रखकर कर बांये हाथ से तत्त्व मुद्रा से स्पर्श करें -



और बलि के ऊपर जल देकर बांये जांघ से आघात कर, हाथ से स्फोट करके प्रसन्न मन से बाण मुद्रा से यह भावना करें कि भूतों ने बलि ग्रहण कर ली है ।



ततः पादौ प्रक्षाल्य, आचम्य, प्रदक्षिणनमस्कारं कृत्वा यथाशक्ति जपमाचरेत् ।

अजेशशक्तिगणपभास्कराणां क्रमादिमाः ।
वेदार्धचन्द्रवह्नयादिसंख्याः स्युः सर्वसिद्धये ।
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति ।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥
रक्तोत्पलारक्ततलप्रभाभ्यां ध्वजोर्ध्वरेखाकुलिशाङ्किताभ्याम् ।
अशेषवृन्दारकवन्दिताभ्यां नमो भवानी पदपङ्कजाभ्याम् ॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहिमां कृपया देवि शरणागत वत्सले ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं शिवे ।
तस्मात् कारुण्यभावेन रक्षरक्षाखिलेश्वरि ॥
याचेऽहं याचेऽहं तवचरणपद्मयोर्भक्तिम् ।
याचेऽहं याचेऽहं पुनरपि तामेव तामेव ॥
आपादि किं करणीयम् स्मरणीयं चरणयुगलमम्बायाः ।
तत्स्मरणं किं कुरुते ब्रह्मादीश्चापि किङ्करीकुरुते ॥

पातय वा पाताले स्थापय वा सकललोक साम्राज्ये ।
मातस्तवपदयुगलं नाहं मुञ्चामि नैव मुञ्चामि ।।
क्षमा प्रार्थनां समर्पयामि ।

जपः विधिः

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पञ्चदशाक्षरी महामन्त्रस्य भगवान् आनन्दभैरवऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, क ए ई ल ह्रीं बीजं, ह स क ह ल ह्रीं शक्तिः, स क ल ह्रीं कीलकं, श्रीविद्यापरमेश्वरीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आनन्दभैरवर्षये नमः - शिरसि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पङ्क्तयै छन्दसे नमो - मुखे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमो - हृदये ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं बीजाय नमः - गुह्ये ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं शक्तये नमः - पादयोः ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं कीलकाय नमः - नाभौ ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महात्रिपुरसुन्दरी प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः कर सम्पुटे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलविद्यया सर्वाङ्गे त्रिर्व्यापकम् ।

करन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं - अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकहलह्रीं - तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलह्रीं - मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं - अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकहलह्रीं - कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलह्रीं - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं - हृदयाय नमः ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकहलह्रीं - शिरसे स्वाहा ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलह्रीं - शिखायै वषट् ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईलह्रीं - कवचाय हुम् ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसकहलह्रीं - नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलह्रीं - अस्त्राय फट् ।
भूर्भुवः सुवरोमिति दिग्बन्धः ।

ध्यानम्

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं
नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट्च्छेखराम् ।
हस्तैरिक्षुधनुः सृणीं सुमशरं पाशं मुदा बिभ्रतीं
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां भजे ॥

मन्त्रः

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं।

गायत्री

ॐ क ए ई ल ह्रीं वागीश्वर्यै च विद्महे ॐ ह स क ह ल ह्रीं कामेश्वर्यै च धीमहि । ॐ स क ल ह्रीं तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

पञ्चदशीमूलविद्यान्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं नमः शिरसि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं नमः मूलाधारे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं नमः हृदि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	लं नमः	दक्षनेत्रे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	ह्रीं नमः	वामनेत्रे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	हं नमः	भ्रूमध्ये।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	सं नमः	दक्षश्रोत्रे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	कं नमः	वामश्रोत्रे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	हं नमः	मुखे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	लं नमः	दक्षभुजे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	ह्रीं नमः	वामभुजे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	सं नमः	पृष्ठे।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	कं नमः	दक्षजानुनि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	लं नमः	वामजानुनि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	ह्रीं नमः	नाभौ।

।। इति श्रीपञ्चदशाक्षरीमन्त्रः ।।

श्रीषोडशाक्षरीमन्त्रः

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीषोडशीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्री षोडशाक्षरी महात्रिपुरसुन्दरीदेवता कएईलह्रीं बीजं सकलह्रीं शक्तिः हसकहलह्रीं कीलकम् श्रीराजराजेश्वरीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः-शिरसि।

ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः-मुखे ।

ॐ श्री षोडशाक्षरीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमो-हृदि ।

ॐ कएईलह्रीं बीजाय नमो-गुह्ये ।

ॐ सकलह्रीं शक्तये नमः-पादयोः।

ॐ हसकहलह्रीं कीलकाय नमो-नाभौ ।

ॐ श्रीराजराजश्वरीप्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः- सर्वाङ्गेषु ।

करन्यासः

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐॐ ह्रीं श्रीं-तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ क ए ई ल ह्रीं-मध्यमाभ्यां ।

ॐ ह स क ह ल ह्रीं-अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ स क ल ह्रीं-कनिष्ठकाभ्यां नमः।

ॐ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अङ्गन्यासः

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः - हृदयाय नमः ।

ॐॐ ह्रीं श्रीं - शिरसे स्वाहा ।

ॐ क ए ई ल ह्रीं - शिखायै वषट् ।

ॐ ह स क ह ल ह्रीं - कवचाय हुम् ।

ॐ स क ल ह्रीं - नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं - अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

सिद्धिसिद्धवृतरत्नभूमिकाकल्पवृक्षवनवाटिसङ्कुले
नीपवाटिमणिमण्डपेऽरुणे शङ्कराङ्ककृतपीठिकामणौ।
आदिपञ्चशिवमञ्चके परे चन्द्रभानुशतकोटिभासुरे
कादिहादिमनुरूपिणीमहं भावयामि परदेवतां शिवाम् ॥

मूलमन्त्रः

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ओं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं
ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥

इति जपं समर्पयेत् ।

स्तोत्रम्

ॐऐं ह्रीं श्रीं गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम् ।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम् ॥1॥
प्रणमामि महादेवीं मातृकां परमेश्वरीम् ।
कालहल्लोहलोल्लोलकलनाशमकारिणीम् ॥2॥
यदक्षरैकमात्रेऽपि संसिद्धे स्पर्धते नरः ।
रविताक्ष्र्येन्दुकन्दर्पशङ्करानलविष्णुभिः ॥3॥
यदक्षरशशिज्योत्स्नामण्डितं भुवनत्रयम् ।
वन्दे सर्वेश्वरीं देवीं महाश्रीसिद्धमातृकाम् ॥4॥
यदक्षरमहासूत्रप्रोतमेतज्जगत्त्रयम् ।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं तां वन्दे सिद्धमातृकाम् ॥5॥
यदेकादशमाधारं बीजं कोणत्रयोद्भवम् ।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं जगदद्यापि दृश्यते ॥6॥
अकचादिटतोन्नद्धपयशाक्षरवर्गिणीम् ।
ज्येष्ठाङ्गबाहुपादाग्रमध्यस्वान्तनिवासिनीम् ॥7॥
तामीकाराक्षरोद्धारां सारात्सारां परात्पराम् ।
प्रणमामि महादेवीं परमानन्दरूपिणीम् ॥8॥
अद्यापि यस्या जानन्ति न मनागपि देवताः ।
केयं कस्मात् क्व केनेति सरूपारूपभावनाम् ॥9॥
वन्दे तामहमक्षय्यां क्षकाराक्षररूपिणीम् ।
देवीं कुलकलोल्लासप्रोल्लसन्तीं परां शिवाम् ॥10॥

वर्गानुक्रमयोगेण यस्यां मात्रष्टकं स्थितम् ।
वन्दे तामष्टवर्गोत्थमहासिद्ध्यष्टकेश्वरीम् ॥11॥
कामपूर्णजकाराख्यश्रीपीठान्तर्निवासिनीम् ।
चतुराज्ञाकोशभूतां नौमि श्रीत्रिपुरामहम् ॥12॥
इति द्वादशभिः श्लोकैः स्तवनं सर्वसिद्धिकृत् ।
देव्यास्त्वखण्डरूपायाः स्तवनं तव तद्यतः ॥
भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे ॥
जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥
पिता माता भ्राता गुरुरथ सुहृद् बान्धवजनः
प्रभुस्तीर्थं कर्माविकलमिह चामुत्र च हितम् ।
विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे
त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः ॥
दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥
हे सद्रूपिणि हे चिदर्चिरुदये हे कामराजप्रिये
हे भण्डासुरहन्त्रि हेऽद्भुतनिधे हेऽनङ्गसंजीविनि ।
हे विश्वप्रसवित्रि हे सकरुणे हे दीनरक्षामणे
हे श्रीमल्ललिताम्ब हे परशिवे मां पाहि डिम्भं निजम् ॥

नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते
नमः पद्माटव्यां कुतुकिनि नमो रत्नगृहगे ।
नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमयि नमो बिन्दुनिलये
नमः कामेशाङ्कस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते ॥
जय जय जगदम्ब भक्तवश्ये,
जय जय सान्द्रकृपावशान्तरङ्गे।
जय जय निखिलार्थदानशौण्डे
जय जय हे ललिताम्ब चित्सुखाब्धे॥
षडङ्गदेवता नित्या दिव्याद्योघत्रयीगुरून् ।
नमाम्यायुधदेवीश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः ॥
अमुकानन्दनाथाय मम श्रीगुरवे नमः ।
अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे ।
अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमेष्ठिने ॥
यदिदं श्रीगुरुस्तोत्रं स्वस्वरूपोपलक्षणम् ।
बालभावानुसारेण ममेदं हि विचेष्टितम् ।
मातृवात्सल्यसदृशं त्वया देवि विधीयताम् ॥
एवमादिभिः स्तुतिभिर्देवीं स्तुयात् ।

सुवासिनीपूजा

प्राङ्निमन्त्रितां सुवासिनीमाहूय तां देवीरूपां विभाव्य -
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिनीपरमेश्वरीं ध्यायामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिनीपरमेश्वरीं आवाहयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै आसनं समर्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै पाद्यं समर्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै अर्घ्यं कल्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै आचमनीयं जलं कल्पयामि।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै स्नानीयं जलं कल्पयामि।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै गन्धं कल्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै हरिद्राकुङ्कुमं कल्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै पुष्पं कल्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै धूपं कल्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै दीपं कल्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै नैवेद्यं कल्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै ताम्बूलं कल्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै दक्षिणाम् कल्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै नीराजनं कल्पयामि ।
ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै मंत्रपुष्पाञ्जलिं कल्पयामि ।

सा च दीक्षिता चेत् मूलेन समस्तप्रकटेत्यादिसमष्टिमन्त्रेण च क्रमेण श्रीदेव्यै आवरणदेवताभ्यश्च पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । ततस्तस्याः करे क्षीरपात्रं नागरखण्डं च समर्पयेत् । सा च उत्थाय शिरसि श्रीगुरुपादुकामनुना त्रिरिष्ट्वा, हृदये आत्मचतुष्टयं संतर्प्य, चक्रे देवीं त्रिः संतर्प्य, मूलेन पात्रं वामकरे धृत्वा दक्षकरेणाच्छाद्योपविश्य तत्त्वानि शोधयेत् । कर्ता पुनः पात्रान्तरमादाय वक्ष्यमाणमन्त्रेण तस्यै समर्पयेत् । अदीक्षिता चेदलिपात्रदानमेव ।

यथा -

ॐऐं ह्रीं श्रीं अलिपात्रमिदं तुभ्यं दीयते पिशितान्वितम् ।
स्वीकृत्य सुभगे देवि यशो देहि रिपून् जहि ॥

इति मन्त्रेण सुवासिन्यै अथवा श्रीदेव्यै समर्पयेत् ।

सापि तत् सावशेषं स्वीकृत्य -

ॐऐं ह्रीं श्रीं वत्स तुभ्यं मया दत्तं पीतशेषं कुलामृतम् ।
त्वच्छत्रून् संहरिष्यामि तवाभीष्टं ददाम्यहम् ।।

इति मन्त्रेण प्रतिदद्यात् । ततः साधकः सुवासिनीं भोजयित्वा संतर्प्य ताम्बूलाद्यैः संतोषयेत् ।

सामयिकपूजा

ततः संनिहिते गुरौ गुरुं नत्वा, गन्धकुङ्कुमादिभिरुपचर्य गुरुपादुकामन्त्रेण अभिपूज्य पात्राणि समर्पयेत् । असंनिहिते गुरौ स्वशिरसि गुरुत्रयं यजेत् । संनिहितान् सामयिकानाहूय गन्धकुङ्कुमादिभिरुपचर्य पात्राणि दद्यात् । पश्चात् तत्त्वशोधनं कुर्यात् । सामयिकश्च पात्रमादाय समस्त-प्रकटेत्यादिसमष्टिमन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा स्वशिरसि गुरुत्रयं, हृदये आत्मचतुष्टयं च इष्ट्वा देवीं त्रिः संतर्प्य तत्त्वशोधनं यथोपदिष्टं कुर्यात् ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरह-स्यातिरहस्यपरापरातिरहस्ययोगिनीदेवताभ्यो नमः ।

गुरुत्रयम्

ॐऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोऽहं, हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं स्वरूपनिरूपण हेतवे श्रीगुरवे नमः अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः सोहं हंसः शिवः हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोऽहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोहं हंसः, हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजनसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

आत्मचतुष्टयं हृदये

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आत्मने नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्तरात्मने नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमात्मने नमः ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जीवात्मने नमः ।
मूलेन देवीं त्रिस्सन्तर्प्य

तत्त्वशोधनम्

तत्त्वशोधन शुद्धिपात्र से करना चाहिए ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्र-जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिल-भूम्यात्मना अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः क ए ई ल ह्रीं आत्मतत्त्वेन आणवमलशोधनार्थं स्थूलदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । आत्मा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासँ स्वाहा ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं मायाकलाऽविद्यारागकालनियति-पुरुषात्मना कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं ह स क ह ल ह्रीं विद्यातत्त्वेन मायिकमलशोधनार्थं सूक्ष्मदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । अन्तरात्मा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासँ स्वाहा ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं स क ल ह्रीं शिवतत्त्वेन कार्मिकमलशोधनार्थं कारणदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । परमात्मा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासँ स्वाहा ।

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं प्रकृत्यहंकारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राण-वाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूमिमाया-कलाऽविद्याराग कालनियतिपुरुषशिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मूलं सर्वतत्त्वेन सर्वदेहं सर्वदेहाभिमानिनं

जीवात्मानं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । ज्ञानात्मा मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरिहं विरजा विपाप्मा भूयासँ स्वाहा ।

षोडश्युपासकानां पञ्चमपात्रेण -

ॐऐं ह्रीं श्रीं मूलं पूर्णमदः पूणमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्गमेवावशिष्यते ॥

ॐऐं ह्रीं श्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ।

इति (गुरौ संनिहिते होष्यामि इति सम्प्रार्थ्य गुरोरनुज्ञां लब्ध्वा) चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात् ।

ततः पात्रं प्रक्षाल्य तत्र सुवर्णपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य

ॐऐं ह्रीं श्रीं देवानाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पात्रं पूर्णतरं कुरु ॥

इति गुरवे समर्पयेत् । असन्निहिते गुरौ स्वशिरसि पात्रं निधाय आत्मपात्रमण्डले निक्षिपेत् ।

***

दशमः खण्डः

पूजासमर्पण-देवतोद्वासने

साधुवाऽसाधुवा कर्म यद्यदाचरितं मया ।
तत्सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम ॥
देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ॥

इति देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य, शङ्खमुद्धृत्य, देव्युपरि त्रिः परिभ्राम्य, तज्जलं हस्ते समादाय, सामयिकानात्मानं च मूलेन प्रोक्ष्य, शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात् ।

ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य -

कदा काले मातः कथय कलितालक्तकरसं
पिबेयं विद्यार्थी तव चरणनिर्णेजनजलम् ।
प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारणतया
कदा धत्ते वाणी मुखकमलताम्बूलरसताम् ॥

ॐऐं ह्रीं श्रीं ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मयाचरितं शिवे ।
तव कृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥

इति क्षमाप्य सर्वासामावरणदेवतानां श्रीदेव्यङ्गे विलयं विभाव्य खेचरीं बद्ध्वा -

ॐऐं ह्रीं श्रीं हृत्पद्मकर्णिकामध्ये शिवेन सह शङ्करि ।
प्रविश त्वं महादेवि सर्वैरावरणैः सह ॥



ललिते श्रीजगन्मातः यावदाऽवाहनं पुनः ।

तावद् त्वं प्रीतिभावेन् हृदये सुस्थिरा भव ।

इति निर्वाण मुद्रया श्रीचक्रोपरिस्थितपुष्पं गृहीत्वा स्वात्मनि प्रवेशयम् भावयन् तमाघ्राय नाशारन्ध्रमार्गेण श्रीपरदेवतां हृदयकमले प्रविष्टां विभाव्य निर्माल्यं शिरसि धारयेत् ।

इति तेजोरूपेण परिणतां श्रीदेवीं पूर्ववत् हृदयं नीत्वा, तत्र च मूर्तिं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, पुनः आत्माभिन्नसंविद्रूपेण भावयेत् ।

अनया पूजया बिन्दुतर्पणसहितया भगवती सर्वात्मिका श्रीराजराजेश्वरी ललिता पराभट्टारिका ब्रह्मविद्या त्रिपुरसुन्दरी देवता प्रीयताम् । तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

***

एकादशः खण्डः

शान्तिस्तव-विशेषार्घ्योद्वासने

शान्तिस्तव

ॐऐं ह्रीं श्रीं सम्पूजकानां परिपालकानां
यतेन्द्रियाणां च तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां
करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः॥
नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादिसिद्धाः
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम् ।
सा शाम्भवी स्फुरतु कापि ममाप्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम् ।
कालाग्न्यादि शिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥

विशेषार्घ्योद्वासनम्

मूलेन विशेषार्घ्यपात्रं आमस्तकमुद्धृत्य तत्क्षीरं पात्रान्तरेणादाय ''ॐऐं ह्रीं श्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ।'' इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा -

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेःस्वभावात्।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥

ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोजयित्वा स्वयमपि भुक्त्वा यथासुखं विहरेत्।

मूलमन्त्र से विशेषार्घ्यपात्र को मस्तक तक उठाकर उस क्षीर को

दूसरे पात्र में लेकर "**ॐऐं ह्रीं श्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ।**" मन्त्र से अपनी कुण्डलिनी की अग्नि में हवन कर दें ।

अब श्रीयन्त्र के अभिषेक तर्पण आदि के जल से अपने शरीर का मार्जन करके पूजन-शेष चन्दन से अपने ललाट पर तिलक करके अपने को श्रीचक्र से अभिन्न (श्रीचक्रमय) होने की भावना करें । आचमन करके भगवती को प्रणाम करें ।

अब ब्राह्मण और सुवासिनी को भोजन कराकर स्वयं भी भोजन कर यथासुख विहार करें ।

।। इति शिवम् ।।

***

परिशिष्टम्

श्रीविद्या-सपर्या (खड्गमाला सहित) (137)

श्रीविद्या-सपर्या (खड्गमाला सहित) (138)

तन्त्रराजोक्तं नित्याकवचम्

ममस्तापद्विमुक्त्यर्थं सर्वसम्पदवाप्तये ।
भूतप्रेतपिशाचादिपीडाशान्त्यै सुखाप्तये ॥1॥
समस्तरोगनाशाय समरे विजयाय च ।
चोरसिंहद्वीपिगजगवयादिभयानके ॥2॥
अरण्ये शैलगहने मार्गे दुर्भिक्षके तथा ।
सलिलाग्निमरुत्पीडास्वब्धौ पोतादिसङ्कटे ॥3॥
प्रजप्य नित्याकवचं सकृत्सर्वं तरत्यसौ ।
सुखी जीवति निर्द्वन्द्वौ निःसपत्नो जितेन्द्रियः ॥4॥
शृणु तत्कवचं देवि वक्ष्ये तव तदात्मकम् ।
येनाहमपि युद्धेषु देवासुरजयी सदा ॥5॥
सर्वतस्सर्वदाऽऽत्मानं ललिता पातु सर्वदा ।
कामेशी पुरतः पातु भगमालात्वनन्तरम् ॥6॥
दिशं पातु तथा दक्षपार्श्वं मे पातु सर्वदा ।
नित्यक्लिन्न्रा तु भेरुण्डा दिशं पातु सदा मम ॥7॥
तथैव पश्चिमं भागं रक्षेत्सा वह्निवासिनी ।
महावज्रेश्वरी रक्षेदनन्तरदिशं सदा ॥8॥
वामपार्श्वं सदा पातु दूती मे त्वरिता ततः ।
पालयेत्तु दिशं वात्यां रक्षेन्मां कुलसुन्दरी ॥9॥
नित्या मामूर्ध्वतः पातु साऽधो मे पातु सर्वदा ।
नित्या नीलपताकाख्या विजया सर्वतश्च माम् ॥10॥
करोतु मे मङ्गलानि सर्वदा सर्वमङ्गला ।
देहेन्द्रियमनः प्राणान् ज्वालामालिनि विग्रहा ॥11॥
पालयेदनिशं चित्रा चित्तं मे पातु सर्वदा ।
कामात् क्रोधात् तथालोभान्मोहान्मानान्मदादपि ॥12॥

पापान्मत्सरतः शोकात्संशयात्सर्वतः सदा ।
स्तैमित्याच्च समुद्योगादशुभेषु तु कर्मसु ॥13॥
अमत्यात्क्रूरचिन्तातो हिंसातश्चोरतस्तथा ।
रक्षन्तु मां सर्वदा ताःकुर्वन्त्विच्छां शुभेषु च ॥14॥
नित्याः षोडश मां पान्तु गजारुढाः स्वशक्तिभिः ।
तथा हयसमारूढाः पान्तु मां सर्वतः सदा ॥15॥
सिंहारुढास्तथा पान्तु मां तरक्षुगता अपि ।
रथारुढाश्च मां पान्तु सर्वतः सर्वदा रणे ॥16॥
तार्क्ष्यारुढाश्च मां पान्तु तथा व्योमगतास्तु ताः ।
भूगताः सर्वदा पान्तु मां सर्वत्र च सर्वदा ॥17॥
भूतप्रेतपिशाचापस्मारकृत्यादिकान् गदान् ।
द्रावयन्तु स्वशक्तीनां भीषणैरायुधैर्मम ॥18॥
गजाश्वद्वीपिपञ्चास्यतार्क्ष्यारुढाखिलायुधाः ।
असंख्याः शक्तयो देव्याः पान्तु मां सर्वतः सदा ॥19॥
सायं प्रातर्जपेन्नित्याकवचं सर्वरत्नकम् ।
कदाचिन्नाशुभं पश्येन्न श्रृणोति च तत्समः ॥20॥

॥ इति नित्याकवचं सम्पूर्णम् ॥

***

॥श्रीः॥

॥ श्रीविद्याखड्गमाला ॥

१ शुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमाला।

क

श्री कामेश्वरी नित्या

आरक्ताभां त्रिनेत्रां मणिमुकुटवतीं रत्नताटङ्करम्यां,
हस्ताम्भोजैः सपांशांकुशमदनधनुः सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोतुङ्गवक्षोरुहयुगविलुठत्तारहारोज्ज्वलाङ्गीं,
ध्यायेदम्भोरुहस्थामरुणसुवसनामीश्वरीमीश्वराणाम् ॥

शुक्लप्रतिपदि अमावस्यायाम्

अस्यश्रीशुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रस्य, उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायिवरूणादित्य-ऋषये नमः। गायत्रीछन्दसे नमः। सात्त्विककककारभट्टारकपीठस्थितशिव-कामेश्वराङ्कनिलयायै कामेश्वरीललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः। ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, खड्गसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करन्यासः

(१) ह्रां-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
(२) ह्रीं-तर्जनीभ्यां नमः।
(३) ह्रूं-मध्यमाभ्यां नमः।
(४) ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
(५) ह्रौं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
(६) ह्रः-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ह्रां इत्यादि हृदयादिन्यासः

(७) ह्रां - हृदयाय नमः।
(८) ह्रीं - शिरसे स्वाहा।
(९) ह्रूं - शिखायै वषट्।
(१०) ह्रैं - कवचाय हुम्
(११) ह्रौं- नेत्रत्रयाय वौषट्।
(१२) ह्रः - अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

पद्मरागप्रतीकाशां त्रिनेत्रां चन्द्रशेखराम् ।
नवरत्नलसद्भूषां भूषितां पादमस्तकम् ॥

पाशाङ्कुशौ पुष्पशरान्दधतीं पुण्ड्रचापकम् ।
पूर्णतारुण्यलावण्यतरङ्गितकलेवराम् ॥
तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै ।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राड्भोक्ता भविष्यति ॥

गायत्री

कामेश्वर्यै विद्महे नित्यक्लिन्नायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि ।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि ।
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि ।
ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं परिकल्पयामि ।
ॐ वं अमृतात्मकं अमृतं परिकल्पयामि ।
ॐ सं सर्वात्मकं ताम्बूलादि सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि (१२) हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्रदेवि (३७) कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डे वह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिव(शिवा)दूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये (१०२) परमेश्वरपरमेश्वरि मित्रीशमयि षष्ठीशमय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रा-मय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचारमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकला-नाथमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकरदेवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि (२१७) श्रीरामानन्दमय्यणिमा-सिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे (२७१) ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मीः(२९६) सर्वसंक्षोभिणि

सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहाङ्कुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि प्रकटयोगिनि (३६५) कामाकर्षणि बुद्ध्याकर्षण्यहङ्काराकर्षणि शब्दाकर्षणि स्पर्शाकर्षणि रूपाकर्षणि रसाकर्षणि गन्धाकर्षणि चित्ताकर्षणि धैर्याकर्षणि स्मृत्याकर्षणि नामाकर्षणि बीजाकर्षण्यात्माकर्षण्यमृताकर्षणि शरीराकर्षणि सर्वाशापरिपूरकचक्र स्वामिनि (४८९) गुप्तयोगिन्यनङ्गकुसुमेऽनमेखलेऽनङ्गमदनेऽनङ्गमदनातुरेऽनङ्ग-रेखेऽनङ्गवेगिन्यनङ्गाङ्कुशेऽनङ्गमालिनि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि गुप्ततर-योगिनि (५२२) सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसम्पत्तिपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वसौभाग्यदायक-चक्रस्वामिनि सम्प्रदाययोगिनि (६२४) सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्न-निवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि कुलोत्तीर्ण-योगिनि (७१२) सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि निगर्भयोगिनि (७८९) वशिनि कामेश्वरि मोदिनि विमलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि रहस्य-योगिनि (८३१) बाणिनि चापिनि पाशिन्यङ्कुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यतिरहस्ययोगिनि (८८६) श्रीश्रीमहाभट्टारिके सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि परापररहस्ययोगिनि (९१५) त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दरि (९६१) महामहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहास्पन्दे महामहाशये महामहा-श्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥१०३१।

एकत्रिंशदधिकसहस्राक्षराणि।

इति शुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमाला ॥

२ शुद्धशक्तिनमोऽन्तमाला ।

ए

श्री भगमालिनी नित्या

कुन्दकुट्मलसुश्रेणीदन्तपंङ्क्तिविराजिताम् ।
कन्दर्पकोटिलावण्यां वन्देऽहं भगमालिनीम् ॥

शुक्लद्वितीयायाम् कृष्णचतुर्दश्याम्

अस्य श्रीशुद्धशक्तिनमोऽन्तमालामहामन्त्रस्य, पाय्विन्द्रियाधिष्ठायिमित्रादित्यऋषये नमः। उष्णिक्छन्दसे नमः। भोगद-एकारभट्टारकपीठस्थित-एकवीरकामेश्वराङ्कनिलयायै एकलाललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः। एं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं । पादुकासिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

तादृशं पादुकायुग्ममाप्नोति तव भक्तिमान् ।
यदाक्रमणमात्रेण क्षणात्रिभुवनक्रमः ॥

गायत्री

भगमालिन्यै विद्महे सर्ववशङ्कर्यै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदयदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरोदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखादेव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवचदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्रदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्रदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१००)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भगमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यक्लिन्नायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव(शिवा)दूत्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरितायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नीलपताकायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्री ॐ सर्वमङ्गलायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्री ॐ ज्वालामालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्रायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानित्यायै नमः पादुकां पूजयामि । (३०८)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रामय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्यमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कालतापनमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचारमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीपकलानाथमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णुदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकरदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजोदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोजदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याणदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्नदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि । (५९५)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्दमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्वसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्वसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्यसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि । (७४६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्म्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमार्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराह्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्र्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि । (८४४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमहाङ्कुशायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वखेचर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वबीजायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वयोनये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वत्रिखण्डायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकटयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१०२४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रूपाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ बीजाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ आत्माकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ अमृताकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ शरीराकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१२४९)
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ गुप्तयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ अनङ्गमेखलायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ अनङ्गमदनायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ अनङ्गमदनातुरायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ अनङ्गरेखायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ अनङ्गवेगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ अनङ्गाङ्कुशायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ अनङ्गमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ गुप्ततरयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१४३९)
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वविद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वाह्लादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वसम्मोहिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वस्तम्भिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वजृम्भिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्ववशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वरञ्जिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ३ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्तिपूरण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमन्त्रमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१६८५)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वप्रियङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१८८४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वशक्त्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्यप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञानमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधारस्वरूपायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वपापहरायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२०७४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२२०८)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अङ्कुशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२२५६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाकामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाभगमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाश्रीसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२३५३)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापररहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२४१०)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेश्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरवासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रियै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२५४१)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाराज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशक्त्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहागुप्तायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाज्ञप्त्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहानन्दायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहास्पन्दायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशयायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (२६९६)

षण्णवत्युत्तरषट्शताधिकद्विसहस्राक्षराणि।
इति शुद्धशक्तिनमोऽन्तमाला ।

***

३ शुद्धशक्तिस्वाहान्तमाला ।

ई

श्री नित्यक्लिन्ना नित्या

सर्वाङ्गादिशुभां सदा सुचरितां सौभाग्यसौख्यप्रदां
गीर्वाणार्चितपादपद्मयुगलां गौरीं गणेशप्रियाम् ।
शर्वाणीं शरदिन्दुबिम्बवदनां निर्वाणबीजाङ्कुरां
ध्यायेत् दक्षिणकालहस्तिनिलयां दिव्याङ्गरागोज्ज्वलाम् ॥

शुक्लतृतीयायाम् कृष्णत्रयोदश्याम्

अस्य श्रीशुद्धशक्तिस्वाहान्तमालामहामन्त्रस्य, पादेन्द्रियाधिष्ठायिधात्रादित्यऋषये नमः। अनुष्टुप्छन्दसे नमः। मोक्षदईकारभट्टारकपीठस्थित-ईश्वरकामेश्वराङ्कनिलयायै ईश्वरीकामेश्वरीललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः। ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । अञ्जनसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्

सिद्धाञ्जनं समासाद्य तेनाञ्जनितलोचनः ।
निधिं पश्यति सर्वत्र भक्तस्तेन समृद्धिमान् ॥

गायत्री

नित्यक्लिन्नायै विद्महे नित्यमदद्रवायै धीमहि । तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा (१४)

हृदयदेव्यै स्वाहा
शिरोदेव्यै स्वाहा
शिखादेव्यै स्वाहा
कवचदेव्यै स्वाहा

नेत्रदेव्यै स्वाहा
अस्त्रदेव्यै स्वाहा (५१)
कामेश्वर्यै स्वाहा
भगमालिन्यै स्वाहा
नित्यक्लिन्नायै स्वाहा
भेरुण्डायै स्वाहा
वह्निवासिन्यै स्वाहा
महावज्रेश्वर्यै स्वाहा
शिव(शिवा)दूत्यै स्वाहा
त्वरितायै स्वाहा
कुलसुन्दर्यै स्वाहा
नित्यायै स्वाहा
नीलपताकायै स्वाहा
विजयायै स्वाहा
सर्वमङ्गलायै स्वाहा
ज्वालामालिन्यै स्वाहा
चित्रायै स्वाहा
महानित्यायै स्वाहा (१५७)
परमेश्वरपरमेश्वर्यै स्वाहा
मित्रीशमय्यै स्वाहा
षष्ठीशमय्यै स्वाहा
उड्डीशमय्यै स्वाहा
चर्यानाथमय्यै स्वाहा
लोपामुद्रामय्यै स्वाहा
अगस्त्यमय्यै स्वाहा
कालतापनमय्यै स्वाहा
धर्माचारमय्यै स्वाहा
मुक्तकेशीश्वरमय्यै स्वाहा
दीपकलानाथमय्यै स्वाहा
विष्णुदेवमय्यै स्वाहा
प्रभाकरदेवमय्यै स्वाहा
तेजोदेवमय्यै स्वाहा
मनोजदेवमय्यै स्वाहा
कल्याणदेवमय्यै स्वाहा
रत्नदेवमय्यै स्वाहा
वासुदेवमय्यै स्वाहा (३०८)
श्रीरामानन्दमय्यै स्वाहा
अणिमासिद्धये स्वाहा
लघिमासिद्धये स्वाहा
महिमासिद्धये स्वाहा
ईशित्वसिद्धये स्वाहा
वशित्वसिद्धये स्वाहा
प्राकाम्यसिद्धये स्वाहा
भुक्तिसिद्धये स्वाहा
इच्छासिद्धये स्वाहा
प्राप्तिसिद्धये स्वाहा
सर्वकामसिद्धये स्वाहा (३८२)
ब्राह्मयै स्वाहा
माहेश्वर्यै स्वाहा
कौमार्यै स्वाहा
वैष्णव्यै स्वाहा
वाराह्यै स्वाहा
माहेन्द्र्यै स्वाहा
चामुण्डायै स्वाहा

महालक्ष्म्यै स्वाहा (४३४)
सर्वसंक्षोभिण्यै स्वाहा
सर्वविद्राविण्यै स्वाहा
सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा
सर्ववशङ्कर्यै स्वाहा
सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा
सर्वमहाङ्कुशायै स्वाहा
सर्वखेचर्यै स्वाहा
सर्वबीजायै स्वाहा
सर्वयोन्यै स्वाहा
सर्वत्रिखण्डायै स्वाहा
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
प्रकटयोगिन्यै स्वाहा (५३१)
कामाकर्षण्यै स्वाहा
बुद्ध्याकर्षण्यै स्वाहा
अहङ्काराकर्षण्यै स्वाहा
शब्दाकर्षण्यै स्वाहा
स्पर्शाकर्षण्यै स्वाहा
रूपाकर्षण्यै स्वाहा
रसाकर्षण्यै स्वाहा
गन्धाकर्षण्यै स्वाहा
चित्ताकर्षण्यै स्वाहा
धैर्याकर्षण्यै स्वाहा
स्मृत्याकर्षण्यै स्वाहा
नामाकर्षण्यै स्वाहा
बीजाकर्षण्यै स्वाहा
आत्माकर्षण्यै स्वाहा
अमृताकर्षण्यै स्वाहा
शरीराकर्षण्यै स्वाहा
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा (६४८)
गुप्तयोगिन्यै स्वाहा
अनङ्गकुसुमायै स्वाहा
अनङ्गमेखलायै स्वाहा
अनङ्गमदनायै स्वाहा
अनङ्गमदनातुरायै स्वाहा
अनङ्गरेखायै स्वाहा
अनङ्गवेगिन्यै स्वाहा
अनङ्गाङ्कुशायै स्वाहा
अनङ्गमालिन्यै स्वाहा
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
गुप्ततरयोगिन्यै स्वाहा (७३९)
सर्वसंक्षोभिण्यै स्वाहा
सर्वविद्राविण्यै स्वाहा
सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा
सर्वाह्लादिन्यै स्वाहा
सर्वसम्मोहिन्यै स्वाहा
सर्वस्तम्भिन्यै स्वाहा
सर्वजृम्भिण्यै स्वाहा
सर्ववशङ्कर्यै स्वाहा
सर्वरञ्जिन्यै स्वाहा
सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा
सर्वार्थसाधिन्यै स्वाहा
सर्वसम्पत्तिपूरण्यै स्वाहा
सर्वमन्त्रमय्यै स्वाहा

सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सम्प्रदाययोगिन्यै स्वाहा (८७३)
सर्वसिद्धिप्रदायै स्वाहा
सर्वसम्पत्प्रदायै स्वाहा
सर्वप्रियङ्कर्यै स्वाहा
सर्वमङ्गलकारिण्यै स्वाहा
सर्वकामप्रदायै स्वाहा
सर्वदु:खविमोचिन्यै स्वाहा
सर्वमृत्युप्रशमन्यै स्वाहा
सर्वविघ्ननिवारिण्यै स्वाहा
सर्वाङ्गसुन्दर्यै स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायिन्यै स्वाहा
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
कुलोत्तीर्णयोगिन्यै स्वाहा (९८८)
सर्वज्ञायै स्वाहा
सर्वशक्तये स्वाहा
सर्वैश्वर्यप्रदायै स्वाहा
सर्वज्ञानमय्यै स्वाहा
सर्वव्याधिविनाशिन्यै स्वाहा
सर्वाधारस्वरूपायै स्वाहा
सर्वपापहरायै स्वाहा
सर्वानन्दमय्यै स्वाहा
सर्वरक्षास्वरूपिण्यै स्वाहा
सर्वेप्सितप्रदायै स्वाहा
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
निगर्भयोगिन्यै स्वाहा (१०१४)

वशिन्यै स्वाहा
कामेश्वर्यै स्वाहा
मोदिन्यै स्वाहा
विमलायै स्वाहा
अरुणायै स्वाहा
जयिन्यै स्वाहा
सर्वेश्वर्यै स्वाहा
कौलिन्यै स्वाहा
सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
रहस्ययोगिन्यै स्वाहा (११५८)
बाणिन्यै स्वाहा
चापिन्यै स्वाहा
पाशिन्यै स्वाहा
अङ्कुशिन्यै स्वाहा (११७८)
महाकामेश्वर्यै स्वाहा
महावज्रेश्वर्यै स्वाहा
महाभगमालिन्यै स्वाहा
महाश्रीसुन्दर्यै स्वाहा
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
अतिरहस्ययोगिन्यै स्वाहा (१२३३)
श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै स्वाहा
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
परापररहस्ययोगिन्यै स्वाहा (१२६९)
त्रिपुरायै स्वाहा
त्रिपुरेश्यै स्वाहा
त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा
त्रिपुरवासिन्यै स्वाहा

त्रिपुराश्रियै स्वाहा
त्रिपुरमालिन्यै स्वाहा
त्रिपुरासिद्धये स्वाहा
त्रिपुराम्बायै स्वाहा
महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा (१३३७)
महामहेश्वर्यै स्वाहा
महामहाराज्ञ्यै स्वाहा
महामहाशक्तये स्वाहा
महामहागुप्तायै स्वाहा
महामहाज्ञप्त्यै स्वाहा
महामहानन्दायै स्वाहा
महामहास्पन्दायै स्वाहा
महामहाशयायै स्वाहा
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ्यै स्वाहा
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१४२९)

एकोनत्रिंशदधिकचतुःशतोत्तरसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशक्तिस्वाहान्तमाला ।

***

४ शुद्धशक्तितर्पणान्तमाला ।

ल

श्री भेरुण्डा नित्या

नित्यानन्दां निर्मलां निष्कलङ्कां नित्यां श्रीचक्रस्थितां सार्वभौमाम् ।
वेदादितां विश्ववन्द्याभिरामां देवीं भेरुण्डां भजे दिव्यरूपाम् ॥

शुक्लचतुर्थ्याम् कृष्णद्वादश्याम्

अस्य श्रीशुद्धशक्तितर्पणान्तमालामहामन्त्रस्य, पाणीन्द्रियाधिष्ठाय्यर्यमादित्यऋषये नमः। बृहतीच्छन्दसे नमः । सात्विकलकारभट्टारकपीठस्थितललितकामेश्वराङ्कनिलयायै ललितालालितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः । ऐं बीजं,क्लीं शक्तिः,सौः कीलकं । बिलसिद्धौ विनियोगः ।

ह्लां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्-

बिलद्वारमपावृत्य पातालतलयोगिनः ।
वीक्ष्य तेभ्यो लब्धसिद्धिस्तव भक्तस्सुखी भवेत् ॥

गायत्री

भेरुण्डायै विद्महे विषहरायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा -

ऐं ह्रीं श्री ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि (१६)

हृदयदेवीं तर्पयामि
शिरोदेवीं तर्पयामि
शिखादेवीं तर्पयामि
कवचदेवीं तर्पयामि
नेत्रदेवीं तर्पयामि
अस्त्रदेवीं तर्पयामि (६५)
कामेश्वरीं तर्पयामि
भगमालिनीं तर्पयामि

नित्यक्लिन्नां तर्पयामि
भेरुण्डां तर्पयामि
वह्निवासिनीं तर्पयामि
महावज्रेश्वरीं तर्पयामि
शिव(शिवा)दूतीं तर्पयामि
त्वरितां तर्पयामि
कुलसुन्दरीं तर्पयामि
नित्यां तर्पयामि
नीलपताकां तर्पयामि
विजयां तर्पयामि
सर्वमङ्गलां तर्पयामि
ज्वालामालिनीं तर्पयामि
चित्रां तर्पयामि
महानित्यां तर्पयामि (१९४)
परमेश्वरपरमेश्वरीं तर्पयामि
मित्रीशमयीं तर्पयामि
षष्ठीशमयीं तर्पयामि
उड्डीशमयीं तर्पयामि
चर्यानाथमयीं तर्पयामि
लोपामुद्रामयीं तर्पयामि
अगस्त्यमयीं तर्पयामि
कालतापनमयीं तर्पयामि
धर्माचारमयीं तर्पयामि
मुक्तकेशीश्वरमयीं तर्पयामि
दीपकलानाथमयीं तर्पयामि
विष्णुदेवमयीं तर्पयामि
प्रभाकरदेवमयीं तर्पयामि
तेजोदेवमयीं तर्पयामि
मनोजदेवमयीं तर्पयामि
कल्याणदेवमयीं तर्पयामि
रत्नदेवमयीं तर्पयामि
वासुदेवमयीं तर्पयामि (३८१)
श्रीरामानन्दमयीं तर्पयामि
अणिमासिद्धिं तर्पयामि
लघिमासिद्धिं तर्पयामि
महिमासिद्धिं तर्पयामि
ईशित्वसिद्धिं तर्पयामि
वशित्वसिद्धिं तर्पयामि
प्राकाम्यसिद्धिं तर्पयामि
भुक्तिसिद्धिं तर्पयामि
इच्छासिद्धिं तर्पयामि
प्राप्तिसिद्धिं तर्पयामि
सर्वकामसिद्धिं तर्पयामि (४७७)
ब्राह्मीं तर्पयामि
माहेश्वरीं तर्पयामि
कौमारीं तर्पयामि
वैष्णवीं तर्पयामि
वाराहीं तर्पयामि
माहेन्द्रीं तर्पयामि
चामुण्डां तर्पयामि
महालक्ष्मीं तर्पयामि (५३४)
सर्वसंक्षोभिणीं तर्पयामि

सर्वविद्राविणीं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि
सर्ववशङ्करीं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि
सर्वमहाङ्कुशां तर्पयामि
सर्वखेचरीं तर्पयामि
सर्वबीजां तर्पयामि
सर्वयोनिं तर्पयामि
सर्वत्रिखण्डां तर्पयामि
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
प्रकटयोगिनीं तर्पयामि (६५१)
कामाकर्षणीं तर्पयामि
बुद्ध्याकर्षणीं तर्पयामि
अहङ्काराकर्षणीं तर्पयामि
शब्दाकर्षणीं तर्पयामि
स्पर्शाकर्षणीं तर्पयामि
रूपाकर्षणीं तर्पयामि
रसाकर्षणीं तर्पयामि
गन्धाकर्षणीं तर्पयामि
चित्ताकर्षणीं तर्पयामि
धैर्याकर्षणीं तर्पयामि
स्मृत्याकर्षणीं तर्पयामि
नामाकर्षणीं तर्पयामि
बीजाकर्षणीं तर्पयामि
आत्माकर्षणीं तर्पयामि
अमृताकर्षणीं तर्पयामि
शरीराकर्षणीं तर्पयामि
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि (८१३)
गुप्तयोगिनीं तर्पयामि
अनङ्गकुसुमां तर्पयामि
अनङ्गमेखलां तर्पयामि
अनङ्गमदनां तर्पयामि
अनङ्गमदनातुरां तर्पयामि
अनङ्गरेखां तर्पयामि
अनङ्गवेगिनीं तर्पयामि
अनङ्गाङ्कुशां तर्पयामि
अनङ्गमालिनीं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
गुप्ततरयोगिनीं तर्पयामि (९२०)
सर्वसंक्षोभिणीं तर्पयामि
सर्वविद्राविणीं तर्पयामि
सर्वाकर्षणीं तर्पयामि
सर्वाह्लादिनीं तर्पयामि
सर्वसम्मोहिनीं तर्पयामि
सर्वस्तम्भिनीं तर्पयामि
सर्वजृम्भिणीं तर्पयामि
सर्ववशङ्करीं तर्पयामि
सर्वरञ्जनीं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि
सर्वार्थसाधिनीं तर्पयामि
सर्वसम्पत्तिपूरणीं तर्पयामि

सर्वमन्त्रमयीं तर्पयामि
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सम्प्रदाययोगिनीं तर्पयामि (१०८६)
सर्वसिद्धिप्रदां तर्पयामि
सर्वसंपत्प्रदां तर्पयामि
सर्वप्रियङ्करीं तर्पयामि
सर्वमङ्गलकारिणीं तर्पयामि
सर्वकामप्रदां तर्पयामि
सर्वदुःखविमोचिनीं तर्पयामि
सर्वमृत्युप्रशमनीं तर्पयामि
सर्वविघ्ननिवारिणीं तर्पयामि
सर्वाङ्गसुन्दरीं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायिनीं तर्पयामि
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
कुलोत्तीर्णयोगिनीं तर्पयामि(१२२२)
सर्वज्ञां तर्पयामि
सर्वशक्तिं तर्पयामि
सर्वैश्वर्यप्रदां तर्पयामि
सर्वज्ञानमयीं तर्पयामि
सर्वव्याधिविनाशिनीं तर्पयामि
सर्वाधारस्वरूपां तर्पयामि
सर्वपापहरां तर्पयामि
सर्वानन्दमयीं तर्पयमि
सर्वरक्षास्वरूपिणीं तर्पयामि
सर्वेप्सितप्रदां तर्पयामि

सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
निगर्भयोगिनीं तर्पयामि (१३४७)
वशिनीं तर्पयामि
कामेश्वरीं तर्पयामि
मोदिनीं तर्पयामि
विमलां तर्पयामि
अरुणां तर्पयामि
जयिनीं तर्पयामि
सर्वेश्वरीं तर्पयामि
कौलिनीं तर्पयामि
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
रहस्ययोगिनीं तर्पयामि (१४२९)
बाणिनीं तर्पयामि
चापिनीं तर्पयामि
पाशिनीं तर्पयामि
अङ्कुशिनीं तर्पयामि (१४५७)
महाकामेश्वरीं तर्पयामि
महावज्रेश्वरीं तर्पयामि
महाभगमालिनीं तर्पयामि
महाश्रीसुन्दरीं तर्पयामि
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
अतिरहस्ययोगिनीं तर्पयामि (१५२४)
श्रीश्रीमहाभट्टारिकां तर्पयामि
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
परापररहस्ययोगिनीं तर्पयामि (१५६५)
त्रिपुरां तर्पयामि

त्रिपुरेशीं तर्पयामि
त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि
त्रिपुरवासिनीं तर्पयामि
त्रिपुराश्रियं तर्पयामि
त्रिपुरमालिनीं तर्पयामि
त्रिपुरासिद्धां तर्पयामि
त्रिपुराम्बां तर्पयामि
महात्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि (१६४८)
महामहेश्वरीं तर्पयामि
महामहाराज्ञीं तर्पयामि
महामहाशक्तिं तर्पयामि
महामहागुप्तां तर्पयामि
महामहाज्ञप्तिं तर्पयामि
महामहानन्दां तर्पयामि
महामहास्पन्दां तर्पयामि
महामहाशयां तर्पयामि
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञीं
तर्पयामि (१७४५)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१७५४)

चतुःपञ्चाशदधिकसप्तशतोत्तरसहस्राक्षराणि
इति शुद्धशक्तितर्पणान्तमाला ।

***

५ शुद्धशक्तिजयान्तमाला ।

ह्रीं

श्री वह्निवासिनी नित्या

कुमारविघ्नराजपूजिताङ्घ्रिदिव्यपङ्कजां
हिमांशुसन्निभाननां समस्तसौख्यदायिनीम् ।
रमेशपद्मगर्भचन्द्रशेखरादिवन्दितां
नमामि चारुहासिनीं भजामि वह्निवासिनीम् ॥

शुक्लपञ्चम्याम् कृष्णैकादश्याम्

अस्य श्रीशुद्धशक्तिजयान्तमालामहामन्त्रस्य, वागिन्द्रयाधिष्ठाय्यंशुमदादित्यऋषये नमः । पङक्तिच्छन्दसे नमः । सात्विकह्रींकारभट्टारकपीठस्थितहृदयकामेश्वराङ्कनिलयायै हृल्लेखाललिता महाभट्टारिकायै देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । वाक्सिद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्-

वाक्सिद्धिर्द्विविधा प्रोक्ता शापानुग्रहकारिणी ।
महाकवित्वरूपा च भक्तस्तेन द्वयास्पदः ॥

गायत्री

वह्निवासिन्यै विद्महे सिद्धिप्रदायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि जय जय (१६)

हृदयदेवि जय जय
शिखादेवि जय जय
शिरोदेवि जय जय
कवचदेवि जय जय

नेत्रदेवि जय जय
अस्त्रदेवि जय जय (६५)
कामेश्वरि जय जय
भगमालिनि जय जय
नित्यक्लिन्ने जय जय
भेरुण्डे जय जय
वह्निवासिनि जय जय
महावज्रेश्वरि जय जय
शिव(शिवा)दूति जय जय
त्वरिते जय जय
कुलसुन्दरि जय जय
नित्ये जय जय
नीलपताके जय जय
विजये जय जय
सर्वमङ्गले जय जय
ज्वालामालिनि जय जय
चित्रे जय जय
महानित्ये जय जय (१९४)
परमेश्वरपरमेश्वरि जय जय
मित्रीशमयि जय जय
षष्ठीशमयि जय जय
उड्डीशमयि जय जय
चर्यानाथमयि जय जय
लोपामुद्रामयि जय जय
अगस्त्यमयि जय जय
कालतापनमयि जय जय
धर्माचारमयि जय जय
मुक्तकेशीश्वरमयि जय जय
दीपकलानाथमयि जय जय
विष्णुदेवमयि जय जय
प्रभाकरदेवमयि जय जय
तेजोदेवमयि जय जय
मनोजदेवमयि जय जय
कल्याणदेवमयि जय जय
रत्नदेवमयि जय जय
वासुदेवमयि जय जय (३८१)
श्रीरामानन्दमयि जय जय
अणिमासिद्धे जय जय
लघिमासिद्धे जय जय
महिमासिद्धे जय जय
ईशित्वसिद्धे जय जय
वशित्वसिद्धे जय जय
प्राकाम्यसिद्धे जय जय
भुक्तिसिद्धे जय जय
इच्छासिद्धे जय जय
प्राप्तिसिद्धे जय जय
सर्वकामसिद्धे जय जय (४७७)
ब्राह्मि जय जय
माहेश्वरि जय जय
कौमारि जय जय
वैष्णवि जय जय
वाराहि जय जय

माहेन्द्रि जय जय
चामुण्डे जय जय
महालक्ष्मी जय जय (५३४)
सर्वसंक्षोभिणी जय जय
सर्वविद्राविणी जय जय
सर्वाकर्षिणी जय जय
सर्ववशङ्करि जय जय
सर्वोन्मादिनि जय जय
सर्वमहाङ्कुशे जय जय
सर्वखेचरि जय जय
सर्वबीजे जय जय
सर्वयोने जय जय
सर्वत्रिखण्डे जय जय
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि जय जय
प्रकटयोगिनि जय जय (६५१)
कामाकार्षणि जय जय
बुद्ध्याकर्षणि जय जय
अहङ्काराकर्षणि जय जय
शब्दाकर्षणि जय जय
स्पर्शाकर्षणि जय जय
रूपाकर्षणि जय जय
रसाकर्षणि जय जय
गन्धाकर्षणि जय जय
चित्ताकर्षणि जय जय
धैर्याकर्षणि जय जय
स्मृत्याकर्षणि जय जय
नामाकर्षणि जय जय
बीजाकर्षणि जय जय
आत्माकर्षणि जय जय
अमृताकर्षणि जय जय
शरीराकर्षणि जय जय
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि जय जय (८१३)
गुप्तयोगिनि जय जय
अनङ्गकुसुमे जय जय
अनङ्गमेखले जय जय
अनङ्गमदने जय जय
अनङ्गमदनातुरे जय जय
अनङ्गरेखे जय जय
अनङ्गवेगिनि जय जय
अनङ्गाङ्कुशे जय जय
अनङ्गमालिनि जय जय
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि जय जय
गुप्ततरयोगिनि जय जय (९२०)
सर्वसंक्षोभिणि जय जय
सर्वविद्राविणि जय जय
सर्वाकर्षिणि जय जय
सर्वाह्लादिनि जय जय
सर्वसम्मोहिनि जय जय
सर्वस्तम्भिनि जय जय
सर्वजृम्भिणि जय जय
सर्ववशङ्करि जय जय

सर्वरञ्जिनि जय जय
सर्वोन्मादिनि जय जय
सर्वार्थसाधिनि जय जय
सर्वसम्पत्तिपूरणि जय जय
सर्वमन्त्रमयि जय जय
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि जय जय
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि जय जय
सम्प्रदाययोगिनि जय जय (१०८६)
सर्वसिद्धिप्रदे जय जय
सर्वसम्पत्प्रदे जय जय
सर्वप्रियङ्करि जय जय
सर्वमङ्गलकारिणि जय जय
सर्वकामप्रदे जय जय
सर्वदु:खविमोचिनि जय जय
सर्वमृत्युप्रशमनि जय जय
सर्वविघ्ननिवारिणि जय जय
सर्वाङ्गसुन्दरि जय जय
सर्वसौभाग्यदायिनि जय जय
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि जय जय
कुलोत्तीर्णयोगिनि जय जय (१२२२)
सर्वज्ञे जय जय
सर्वशक्ते जय जय
सर्वैश्वर्यप्रदे जय जय
सर्वज्ञानमयि जय जय
सर्वव्याधिविनाशिनि जय जय
सर्वाधारस्वरूपे जय जय

सर्वपापहरे जय जय
सर्वानन्दमयि जय जय
सर्वरक्षास्वरूपिणि जय जय
सर्वेप्सितप्रदे जय जय
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि जय जय
निगर्भयोगिनि जय जय (१३४७)
वशिनि जय जय
कामेश्वरि जय जय
मोदिनि जय जय
विमले जय जय
अरुणे जय जय
जयिनि जय जय
सर्वेश्वरि जय जय
कौलिनि जय जय
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि जय जय
रहस्ययोगिनि जय जय (१४२९)
बाणिनि जय जय
चापिनि जय जय
पाशिनि जय जय
अङ्कुशिनि जय जय (१४५७)
महाकामेश्वरि जय जय
महावज्रेश्वरि जय जय
महाभगमालिनि जय जय
महाश्रीसुन्दरि जय जय
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनि जय जय
अतिरहस्ययोगिनि जय जय (१५२४)

श्रीश्रीमहाभट्टारिके जय जय	महामहेश्वरि जय जय
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि जय जय	महामहाराज्ञि जय जय
परापररहस्ययोगिनि जय जय (१५६५)	महामहाशक्ते जय जय
त्रिपुरे जय जय	महामहागुप्ते जय जय
त्रिपुरेशि जय जय	महामहाज्ञप्ते जय जय
त्रिपुरसुन्दरि जय जय	महामहानन्दे जय जय
त्रिपुरवासिनि जय जय	महामहास्पन्दे जय जय
त्रिपुराश्री जय जय	महामहाशये जय जय
त्रिपुरमालिनि जय जय	महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि
त्रिपुरासिद्धे जय जय	जय जय (१७४४)
त्रिपुराम्ब जय जय	नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
महात्रिपुरसुन्दरि जय जय (१६४७)	श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१७५३)

त्रिपञ्चाशदधिकसप्तदशशताक्षराणि ।

इति शुद्धशक्तिजयान्तमाला ।

***

६ शुद्धशिवसम्बुद्ध्यन्तमाला ।

ह

श्री महावज्रेश्वरी नित्या

भूलोकादिसमस्तलोकनमितां सिद्धेश्वरालिङ्गीतां
बालादित्यसहस्रकोटिसदृशां भक्तेष्टदानप्रदाम् ।
मालापुस्तकपाशाङ्कुशधरां मत्तेभकुम्भस्तनीं
वन्दे दक्षिणकालहस्तिनिलयां वज्रेश्वरीमम्बिकाम् ॥

शुक्लषष्ठ्याम् कृष्णदशम्याम्

अस्य श्रीशुद्धशिवसम्बुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रस्य, घ्राणेन्द्रियाधिष्ठायि-भगादित्यऋषये नमः। त्रिष्टुप्छन्दसे नमः। भोगदहकारभट्टारकपीठस्थित-हलिनीललितामण्डिताङ्काय हलिककामेश्वरमहाभट्टारकाय देवतायै नमः। ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । देहशुद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

तथा सिध्यति ते भक्तो यच्छरीरस्य पार्वति ।
तप्तकाञ्चनगौरस्य कदापि क्वापि न क्षयः ॥

गायत्री

महावज्रेश्वर्यै विद्महे वज्रनित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर (१२) हृदयदेव शिरोदेव शिखादेव कवचदेव नेत्रदेव्यस्त्रदेव (३७) कामेश्वर भगमालिन् नित्यक्लिन्न भेरुण्ड वह्निवासिन् महावज्रेश्वर शिव(शिवा)दूत त्वरित कुलसुन्दर नित्य नीलपताक

विजय सर्वमङ्गल ज्वालामालिन चित्र महानित्य (९९) परमेश्वरपरमेश्वर मित्रीशमय षष्ठीशमयोड्डीशमय चर्यानाथमय लोपामुद्रामयागस्त्यमय कालतापनमय धर्माचारमय मुक्तकेशीश्वरमय दीपकलानाथमय विष्णुदेवमय प्रभाकरदेवमय तेजोदेवमय मनोजदेवमय कल्याणदेवमय रत्नदेवमय वासुदेवमय (२१४) श्रीरामानन्दमयाणिमासिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्ध ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्ध इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे (२६८) ब्राह्म माहेश्वर कौमार वैष्णव वाराह माहेन्द्र चामुण्ड महालक्ष्मी: (२९३) सर्वसंक्षोभिन् सर्वविद्राविन् सर्वाकर्षिन् सर्ववशङ्कर सर्वोन्मादिन सर्वमहाङ्कुश सर्वखेचर सर्वबीज सर्वयोने सर्वत्रिखण्ड त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन् प्रकटयोगिन (३५६) कामाकर्षण बुद्ध्याकर्षणा-हङ्काराकर्षण शब्दाकर्षण स्पर्शाकर्षण रूपाकर्षण रसाकर्षण गन्धाकर्षण चित्ताकर्षण धैर्याकर्षण स्मृत्याकर्षण नामाकर्षण बीजाकर्षणात्मा-कर्षणामृताकर्षण शरीराकर्षण सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन (४४९) गुप्त-योगिन्ननङ्गकुसुमानङ्गमेखलानङ्गमदनानङ्गमदनातुरानङ्गरेखानङ्गवेगिन्न-नङ्गाङ्कुशानङ्गनङ्गमालिन् सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन् गुप्ततरयोगिन (५०९) सर्वसंक्षोभिन् सर्वविद्राविन सर्वाकर्षिन् सर्वाह्लादिन् सर्वसम्मोहिन सर्वस्तम्भिन सर्वजृम्भिन् सर्ववशङ्कर सर्वरञ्जिन् सर्वोमादिन् सर्वार्थसाधिन सर्वसम्पत्तिपूरण सर्वमन्त्रमय सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन् सम्प्रदाय-योगिन् (५९९) सर्वसिद्धिप्रद सर्वसम्पत्प्रद सर्वप्रियङ्कर सर्वमङ्गलाकारिन् सर्वकामप्रद सर्वदुःखविमोचिन् सर्वमृत्युप्रशमन सर्वविघ्ननिवारिन् सर्वाङ्ग-सुन्दर सर्वसौभाग्यदायिन् सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन् कुलोत्तीर्णयोगिन् (६८१) सर्वज्ञ सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रद सर्वज्ञानमय सर्वव्याधिविनाशिन् सर्वाधारस्वरूप सर्वपापहर सर्वानन्दमय सर्वरक्षास्वरूपिन् सर्वेप्सितप्रद सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन् निगर्भयोगिन् (७५४) वशिन् कामेश्वर मोदिन् विमलारूण जयिन् सर्वेश्वर कौलिन् सर्वरोगहरचक्रस्वामिन् रहस्ययोगिन् (७९०) बाणिन् चापिन् पाशिन्नङ्कुशिन् (५९९) महाकामेश्वर महावज्रेश्वर महाभगमालिन्

महाश्रीसुन्दर सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्नतिरहस्ययोगिन् (८४०) श्रीश्रीमहाभट्टारक सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन परापररहस्ययोगिन् (८६७) त्रिपुरत्रिपुरेश त्रिपुरसुन्दर त्रिपुरवासिन त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिन् त्रिपुरासिद्ध त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दर (९११) महामहेश्वर महामहाराज महामहाशक्ते महामहागुप्त महामहाज्ञप्त महामहानन्द महामहास्पन्द महामहाशय महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज (९७२) नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥(९८१)

एकाशीत्यधिकनवशतान्यक्षराणि ।

इति शुद्धशिवसम्बुद्ध्यन्तमाला ।

***

७ शुद्धशिवनमोऽन्तमाला ।

स

श्री शिवदूती नित्या

'सर्वाधारां सामगानप्रियाञ्च सूक्ष्मां शुद्धां सूर्यचन्द्राग्निनेत्राम्।
श्रीचक्रस्थां चिन्मयीं सिद्धविद्यां वन्दे दूतीं मातरं वेदवेद्याम्॥

शुक्लसप्तम्याम् कृष्णनवम्याम्

अस्य श्रीशुद्धशिवनमोऽन्तमालमहामन्त्रस्य, जिह्वेन्द्रियाधिष्ठायीन्द्रादित्य-ऋषये नमः । जगतीच्छन्दसे नमः । भोगदसकारभट्टारकपीठस्थित-सरस्वतीललितामण्डिताङ्काय सर्वज्ञकामेश्वरमहाभट्टारकाय देवतायै नमः। ऐं बीजं,क्लीं शक्तिः,सौः कीलकम् । लोहसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

त्वद्भक्तहस्तस्पर्शेन लोहोऽप्यष्टविधश्शिवे ।
काञ्चनीभावमाप्नोति यथा स्याच्छिवतुल्यता ॥

गायत्री

शिवदूत्यै विद्महे शिवङ्कर्यै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि (२२)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदयदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरोदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखादेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवचदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्रदेवाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्रदेवाय नमः पादुकां पूजयामि (१०७)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भगमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यक्लिन्नाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव(शिवा)दूताय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरिताय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्याय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नीलपताकाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वालामालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्राय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानित्याय नमः पादुकां पूजयामि (३३९)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वरपरमेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रामयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्यमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कालतापनमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचारमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वरमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीपकलानाथमयाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णुदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकरदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजोदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोजदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याणदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्नदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि (६२४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्दमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्वसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्वसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्यसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि (७७६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्माय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमाराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराहाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्राय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि (८९०)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमहाङ्कुशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वखेचराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वबीजाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वयोनये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वत्रिखण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकटयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (१०७३)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रूपाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि (१३३६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्तयोगिने नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गकुसुमाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमेखलाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनातुराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गरेखाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गवेगिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गाङ्कुशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततरयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (१५०४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्मोहिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वस्तम्भिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वजृम्भिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरञ्जिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्तिपूरणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमन्त्रमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (१७५४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वप्रियङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलकारिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वदुःखविमोचिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमृत्युप्रशमनाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविघ्ननिवारिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायिने नमःपादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्णयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (१९५६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वशक्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्यप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञानमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वव्याधिविनाशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधारस्वरूपाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वपापहराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षास्वरूपिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२१४९)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलाय नमः पादुकां पूजयाम
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिने नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरोगहरचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२२८५)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अङ्कुशिने नमः पादुकां पूजयामि (२३३३)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाकामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाभगमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाश्रीसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२४३३)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीश्रीमहाभट्टारकाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापररहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२४९०)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरवासिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रिये नमः .पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महात्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि (२६२४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाराजाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशक्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहागुप्ताय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाज्ञप्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहानन्दाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहास्पन्दाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजाय नमः पादुकां पूजयामि (२७७५)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (२७८४)

चतुरशीत्यधिकसप्तशतोत्तरद्विसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशिवनमोऽन्तमाला ।।

***

८ शुद्धशिवस्वाहान्तमाला ।

क

श्री त्वरिता नित्या

न वेद्मि मन्त्रं न हि चक्रपूजां न वेद्मि होमं न हि योगदीक्षाम्।
न वेद्मि मुद्रां न हि वेदशास्त्रं त्वदङ्घ्रियुग्मं मनसा स्मरामि ॥

शुक्लाष्टम्याम् कृष्णाष्टम्याम्

अस्य श्रीशुद्ध शिवस्वाहान्तमालामहामन्त्रस्य, चक्षुरिन्द्रयाधिष्ठायि-विवस्वदादित्यऋषये नमः। अतिजगतीच्छन्दसे नमः। तामसककार-भट्टारकपीठस्थितकमलाललितामण्डिताङ्काय कालमर्दनकामेश्वरमहाभट्टारकाय देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । अणिमाद्यष्टैश्वर्यसिद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

येऽष्टाणुत्वमहत्त्वाद्याः स्वेच्छामात्रप्रकल्पिताः ।
तव भक्तशरीराणां ते स्युर्नैसर्गिका गुणाः ॥

गायत्री

त्वरितायै विद्महे महानित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा -

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा (१५)

हृदयदेवाय स्वाहा
शिरोदेवाय स्वाहा
शिखादेवाय स्वाहा
कवचदेवाय स्वाहा
नेत्रदेवाय स्वाहा
अस्त्रदेवाय स्वाहा (५८)

कामेश्वराय स्वाहा
भगमालिने स्वाहा
नित्यक्लिन्नाय स्वाहा
भेरुण्डाय स्वाहा
वह्निवासिने स्वाहा
महावज्रेश्वराय स्वाहा
शिव(शिवा)दूताय स्वाहा
त्वरिताय स्वाहा
कुलसुन्दराय स्वाहा
नित्याय स्वाहा
नीलपताकाय स्वाहा
विजयाय स्वाहा
सर्वमङ्गलाय स्वाहा
ज्वालामालिने स्वाहा
चित्राय स्वाहा
महानित्याय स्वाहा (१६८)
परमेश्वरपरमेश्वराय स्वाहा
मित्रीशमयाय स्वाहा
षष्ठीशमयाय स्वाहा
उड्डीशमयाय स्वाहा
चर्यानाथमयाय स्वाहा
लोपामुद्रामयाय स्वाहा
अगस्त्यमयाय स्वाहा
कालतापनमयाय स्वाहा
धर्माचारमयाय स्वाहा
मुक्तकेशीश्वरमयाय स्वाहा

दीपकलानाथमयाय स्वाहा
विष्णुदेवमयाय स्वाहा
प्रभाकरदेवमयाय स्वाहा
तेजोदेवमयाय स्वाहा
मनोजदेवमयाय स्वाहा
कल्याणदेवमयाय स्वाहा
रत्नदेवमयाय स्वाहा
वासुदेवमयाय स्वाहा (३३७)
श्रीरामानन्दमयाय स्वाहा
अणिमासिद्धये स्वाहा
लघिमासिद्धये स्वाहा
महिमासिद्धये स्वाहा
ईशित्वसिद्धये स्वाहा
वशित्वसिद्धये स्वाहा
प्राकाम्यसिद्धये स्वाहा
भुक्तिसिद्धये स्वाहा
इच्छासिद्धये स्वाहा
प्राप्तिसिद्धये स्वाहा
सर्वकामसिद्धये स्वाहा (४२२)
ब्राह्माय स्वाहा
माहेश्वराय स्वाहा
कौमाराय स्वाहा
वैष्णवाय स्वाहा
वाराहाय स्वाहा
माहेन्द्राय स्वाहा
चामुण्डाय स्वाहा

महालक्ष्म्यै स्वाहा (४७०)
सर्वसंक्षोभिणे स्वाहा
सर्वविद्राविणे स्वाहा
सर्वाकर्षिणे स्वाहा
सर्ववशङ्कराय स्वाहा
सर्वोन्मादिने स्वाहा
सर्वमहाङ्कुशाय स्वाहा
सर्वखेचराय स्वाहा
सर्वबीजाय स्वाहा
सर्वयोनये स्वाहा
सर्वत्रिखण्डाय स्वाहा
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिने स्वाहा
प्रकटयोगिने स्वाहा (५६९)
कामाकर्षणाय स्वाहा
बुद्ध्याकर्षणाय स्वाहा
अहङ्काराकर्षणाय स्वाहा
शब्दाकर्षणाय स्वाहा
स्पर्शाकर्षणाय स्वाहा
रूपाकर्षणाय स्वाहा
रसाकर्षणाय स्वाहा
गन्धाकर्षणाय स्वाहा
चित्ताकर्षणाय स्वाहा
धैर्याकर्षणाय स्वाहा
स्मृत्याकर्षणाय स्वाहा
नामाकर्षणाय स्वाहा
बीजाकर्षणाय स्वाहा
आत्माकर्षणाय स्वाहा
अमृताकर्षणाय स्वाहा
शरीराकर्षणाय स्वाहा
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिने
स्वाहा (७१३)
गुप्तयोगिने स्वाहा
अनङ्गकुसुमाय स्वाहा
अनङ्गमेखलाय स्वाहा
अनङ्गमदनाय स्वाहा
अनङ्गमदनातुराय स्वाहा
अनङ्गरेखाय स्वाहा
अनङ्गवेगिने स्वाहा
अनङ्गाङ्कुशाय स्वाहा
अनङ्गमालिने स्वाहा
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिने स्वाहा
गुप्ततरयोगिने स्वाहा (८०४)
सर्वसंक्षोभिणे स्वाहा
सर्वविद्राविणे स्वाहा
सर्वाकर्षिणे स्वाहा
सर्वाह्लादिने स्वाहा
सर्वसम्मोहिने स्वाहा
सर्वस्तम्भिने स्वाहा
सर्वजृम्भिणे स्वाहा
सर्ववशङ्कराय स्वाहा
सर्वरञ्जिने स्वाहा
सर्वोन्मादिने स्वाहा

सर्वार्थसाधिने स्वाहा
सर्वसम्पत्तिपूरणाय स्वाहा
सर्वमन्त्रमयाय स्वाहा
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कराय स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिने स्वाहा
सम्प्रदाययोगिने स्वाहा (९४२)
सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा
सर्वसम्पत्प्रदाय स्वाहा
सर्वप्रियङ्कराय स्वाहा
सर्वमङ्गलकारिणे स्वाहा
सर्वकामप्रदाय स्वाहा
सर्वदुःखविमोचिने स्वाहा
सर्वमृत्युप्रशमनाय स्वाहा
सर्वविघ्ननिवारिणे स्वाहा
सर्वाङ्गसुन्दराय स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायिने स्वाहा
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिने स्वाहा
कुलोत्तीर्णयोगिने स्वाहा (१०६०)
सर्वज्ञाय स्वाहा
सर्वशक्तये स्वाहा
सर्वैश्वर्यप्रदाय स्वाहा
सर्वज्ञानमयाय स्वाहा
सर्वव्याधिविनाशिने स्वाहा
सर्वाधारस्वरूपाय स्वाहा
सर्वपापहराय स्वाहा
सर्वानन्दमयाय स्वाहा

सर्वरक्षास्वरूपिणे स्वाहा
सर्वेप्सितप्रदाय स्वाहा
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिने स्वाहा
निगर्भयोगिने स्वाहा (११६९)
वशिने स्वाहा
कामेश्वराय स्वाहा
मोदिने स्वाहा
विमलाय स्वाहा
अरुणाय स्वाहा
जयिने स्वाहा
सर्वेश्वराय स्वाहा
कौलिने स्वाहा
सर्वरोगहरचक्रस्वामिने स्वाहा
रहस्ययोगिने स्वाहा (१२३५)
बाणिने स्वाहा
चापिने स्वाहा
पाशिने स्वाहा
अङ्कुशिने स्वाहा (१२५५)
महाकामेश्वराय स्वाहा
महावज्रेश्वराय स्वाहा
महाभगमालिने स्वाहा
महाश्रीसुन्दराय स्वाहा
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिने स्वाहा
अतिरहस्ययोगिने स्वाहा (१३१३)
श्रीश्रीमहाभट्टारकाय स्वाहा
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिने स्वाहा

परापररहस्ययोगिने स्वाहा (१३४९)
त्रिपुराय स्वाहा
त्रिपुरेशाय स्वाहा
त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा
त्रिपुरवासिने स्वाहा
त्रिपुराश्रिये स्वाहा
त्रिपुरमालिने स्वाहा
त्रिपुरासिद्धाय स्वाहा
त्रिपुराम्बाय स्वाहा
महात्रिपुरसुन्दराय स्वाहा (१४२०)
महामहेश्वराय स्वाहा
महामहाराजाय स्वाहा
महामहाशक्तये स्वाहा
महामहागुप्ताय स्वाहा
महामहाज्ञप्तये स्वाहा
महामहानन्दाय स्वाहा
महामहास्पन्दाय स्वाहा
महामहाशयाय स्वाहा
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजाय
स्वाहा (१५०८)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१५१७)

सप्तदशाधिकपञ्चशतोत्तरसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशिवस्वाहान्तमाला ।

***

९ शुद्धशिवतर्पणान्तमाला ।

ह

श्री कुलसुन्दरी नित्या

सदाशिवकुटुम्बिनीं सकलमन्त्रसञ्चारिणीं
सदा शुभकरीं शिवां सुजनक्लेशसंहारिणीम् ।
गदाधरसहोदरीं गजमुखप्रियां शाङ्करीं
भजामि कुलसुन्दरीं प्रमथनायिकां मातरम् ॥

शुक्लनवम्याम् कृष्णसप्तम्याम्

अस्य श्रीशुद्धशिवतर्पणान्तमालामहामन्त्रस्य, त्वगिन्द्रियाधिष्ठाय-पूषादित्यऋषये नमः। शक्करीच्छन्दसे नमः। मोक्षदहकारभट्टारकपीठस्थित-हरिवल्लभाललितामण्डिताङ्काय हरनाथकामेश्वरमहाभट्टारकाय देवतायै नमः। ऐं बीजं,क्लीं शक्तिः,सौः कीलकम् । सर्ववश्यसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

शरीरमर्थं प्राणांश्च निवेद्य निजभृत्यवत् ।
तव भक्तान्निषेवन्ते वशीभूता नृपादयः ॥

गायत्री

कुलसुन्दर्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा -

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि (१६)

हृदयदेवं तर्पयामि शिखादेवं तर्पयामि
शिरोदेवं तर्पयामि कवचदेवं तर्पयामि

नेत्रदेवं तर्पयामि
अस्त्रदेवं तर्पयामि (६५)
कामेश्वरं तर्पयामि
भगमालिनं तर्पयामि
नित्यक्लिन्नं तर्पयामि
भेरुण्डं तर्पयामि
वह्निवासिनं तर्पयामि
महावज्रेश्वरं तर्पयामि
शिव(शिवा)दूतं तर्पयामि
त्वरितं तर्पयामि
कुलसुन्दरं तर्पयामि
नित्यं तर्पयामि
नीलपताकं तर्पयामि
विजयं तर्पयामि
सर्वमङ्गलं तर्पयामि
ज्वालामालिनं तर्पयामि
चित्रं तर्पयामि
महानित्यं तर्पयामि (१९४)
परमेश्वरपरमेश्वरं तर्पयामि
मित्रीशमयं तर्पयामि
षष्ठीशमयं तर्पयामि
उड्डीशमयं तर्पयामि
चर्यानाथमयं तर्पयामि
लोपामुद्रामयं तर्पयामि
अगस्त्यमयं तर्पयामि
कालतापनमयं तर्पयामि
धर्माचारमयं तर्पयामि
मुक्तकेशीश्वरमयं तर्पयामि
दीपकलानाथमयं तर्पयामि
विष्णुदेवमयं तर्पयामि
प्रभाकरदेवमयं तर्पयामि
तेजोदेवमयं तर्पयामि
मनोजदेवमयं तर्पयामि
कल्याणदेवमयं तर्पयामि
रत्नदेवमयं तर्पयामि
वासुदेवमयं तर्पयामि (३८१)
श्रीरामानन्दमयं तर्पयामि
अणिमासिद्धिं तर्पयामि
लघिमासिद्धिं तर्पयामि
महिमासिद्धिं तर्पयामि
ईशित्वसिद्धिं तर्पयामि
वशित्वसिद्धिं तर्पयामि
प्राकाम्यसिद्धिं तर्पयामि
भुक्तिसिद्धिं तर्पयामि
इच्छासिद्धिं तर्पयामि
प्राप्तिसिद्धिं तर्पयामि
सर्वकामसिद्धिं तर्पयामि (४७७)
ब्राह्मं तर्पयामि
माहेश्वरं तर्पयामि
कौमारं तर्पयामि
वैष्णवं तर्पयामि
वाराहं तर्पयामि

माहेन्द्रं तर्पयामि
चामुण्डं तर्पयामि
महालक्ष्मीं तर्पयामि (५३४)
सर्वसंक्षोभिणं तर्पयामि
सर्वविद्राविणं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणं तर्पयामि
सर्ववशङ्करं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनं तर्पयामि
सर्वमहाङ्कुशं तर्पयामि
सर्वखेचरं तर्पयामि
सर्वबीजं तर्पयामि
सर्वयोनिं तर्पयामि
सर्वत्रिखण्डं तर्पयामि
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनं तर्पयामि
प्रकटयोगिनं तर्पयामि (६५१)
कामाकर्षणं तर्पयामि
बुद्ध्याकर्षणं तर्पयामि
अहङ्काराकर्षणं तर्पयामि
शब्दाकर्षणं तर्पयामि
स्पर्शाकर्षणं तर्पयामि
रूपाकर्षणं तर्पयामि
रसाकर्षणं तर्पयामि
गन्धाकर्षणं तर्पयामि
चित्ताकर्षणं तर्पयामि
धैर्याकर्षणं तर्पयामि
स्मृत्याकर्षणं तर्पयामि
नामाकर्षणं तर्पयामि
बीजाकर्षणं तर्पयामि
आत्माकर्षणं तर्पयामि
अमृताकर्षणं तर्पयामि
शरीराकर्षणं तर्पयामि
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनं तर्पयामि (८१३)
गुप्तयोगिनं तर्पयामि
अनङ्गकुसुमं तर्पयामि
अनङ्गमेखलं तर्पयामि
अनङ्गमदनं तर्पयामि
अनङ्गमदनातुरं तर्पयामि
अनङ्गरेखं तर्पयामि
अनङ्गवेगिनं तर्पयामि
अनङ्गाङ्कुशं तर्पयामि
अनङ्गमालिनं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनं तर्पयामि
गुप्ततरयोगिनं तर्पयामि (९२०)
सर्वसंक्षोभिणं तर्पयामि
सर्वविद्राविणं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणं तर्पयामि
सर्वाह्लादिनं तर्पयामि
सर्वसम्मोहिनं तर्पयामि
सर्वस्तम्भिनं तर्पयामि
सर्वजृम्भिणं तर्पयामि
सर्ववशङ्करं तर्पयामि
सर्वरञ्जिनं तर्पयामि

सर्वोन्मादिनं तर्पयामि
सर्वार्थसाधिनं तर्पयामि
सर्वसम्पत्तिपूरणं तर्पयामि
सर्वमन्त्रमयं तर्पयामि
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनं तर्पयामि
सम्प्रदाययोगिनं तर्पयामि (१०८६)
सर्वसिद्धिप्रदं तर्पयामि
सर्वसम्पत्प्रदं तर्पयामि
सर्वप्रियङ्करं तर्पयामि
सर्वमङ्गलकारिणं तर्पयामि
सर्वकामप्रदं तर्पयामि
सर्वदु:खविमोचिनं तर्पयामि
सर्वमृत्युप्रशमनं तर्पयामि
सर्वविघ्ननिवारिणं तर्पयामि
सर्वाङ्गसुन्दरं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायिनं तर्पयामि
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनं तर्पयामि
कुलोत्तीर्णयोगिनं तर्पयामि (१२२२)
सर्वज्ञं तर्पयामि
सर्वशक्तिं तर्पयामि
सर्वैश्वर्यप्रदं तर्पयामि
सर्वज्ञानमयं तर्पयामि
सर्वव्याधिविनाशिनं तर्पयामि
सर्वाधारस्वरूपं तर्पयामि
सर्वपापहरं तर्पयामि

सर्वानन्दमयं तर्पयामि
सर्वरक्षास्वरूपिणं तर्पयामि
सर्वेप्सितप्रदं तर्पयामि
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनं तर्पयामि
निगर्भयोगिनं तर्पयामि (१३४७)
वशिनं तर्पयामि
कामेश्वरं तर्पयामि
मोदिनं तर्पयामि
विमलं तर्पयामि
अरुणं तर्पयामि
जयिनं तर्पयामि
सर्वेश्वरं तर्पयामि
कौलिनं तर्पयामि
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनं तर्पयामि
रहस्ययोगिनं तर्पयामि (१४२९)
बाणिनं तर्पयामि
चापिनं तर्पयामि
पाशिनं तर्पयामि
अङ्कुशिनं तर्पयामि (१४५७)
महाकामेश्वरं तर्पयामि
महावज्रेश्वरं तर्पयामि
महाभगमालिनं तर्पयामि
महाश्रीसुन्दरं तर्पयामि
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनं तर्पयामि
अतिरहस्ययोगिनं तर्पयामि (१५२४)
श्रीश्रीमहाभट्टारकं तर्पयामि

सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनं तर्पयामि
परापररहस्ययोगिनं तर्पयामि (१५६५)
त्रिपुरं तर्पयामि
त्रिपुरेशं तर्पयामि
त्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि
त्रिपुरवासिनं तर्पयामि
त्रिपुराश्रियं तर्पयामि
त्रिपुरमालिनं तर्पयामि
त्रिपुरासिद्धं तर्पयामि
त्रिपुराम्बं तर्पयामि
महात्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि (१६४८)

महामहेश्वरं तर्पयामि
महामहाराजं तर्पयामि
महामहाशक्तिं तर्पयामि
महामहागुप्तं तर्पयामि
महामहाज्ञप्तिं तर्पयामि
महामहानन्दं तर्पयामि
महामहास्पन्दं तर्पयामि
महामहाशयं तर्पयामि
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजं तर्पयामि (१७४५)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं । (१७५४)

चतुःपञ्चादशदधिकसप्तशतोत्तरसहस्राक्षराणि
इति शुद्धशिवतर्पणान्तमाला ।

***

१० शुद्धशिवजयान्तमाला ।

ल

श्री नित्या नित्या

कालातीतां भानुकोटिप्रकाशां मूलाधारां सर्वसिद्धिप्रदाञ्च ।
बालांबन्धूकप्रभां पङ्कजाक्षीं देवीं नित्यां सन्ततं भावयामि ॥

शुक्लदशम्याम् कृष्णषष्ठ्याम्

अस्यश्रीशुद्धशिवजयान्तमाला महामन्त्रस्य, श्रोत्रेन्द्रियाधिष्ठायिसवित्रादित्यऋषये नमः। अतिशक्करीच्छन्दसे नमः। तामसलकार भट्टारकपीठस्थित-लक्ष्मीललितामण्डिताङ्काय ललज्जिह्वाकामेश्वरमहाभट्टारकाय देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः,सौः कीलकम् । सर्वाकर्षणसिद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

लोहप्राकारसङ्गुप्ता निगडैर्यन्त्रिता अपि ।
त्वद्भक्तैः कृष्यमाणाश्च समयान्त्येव योषितः ॥

गायत्री

नित्याभैरव्यै विद्महे नित्यानित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर जय जय (१६)

हृदयदेव जय जय
शिरोदेव जय जय
शिखादेव जय जय
कवचदेव जय जय
नेत्रदेव जय जय
अस्त्रदेव जय जय (६५)
कामेश्वर जय जय
भगमालिन जय जय

नित्यक्लिन्न जय जय
भेरुण्ड जय जय
वह्निवासिन् जय जय
महावज्रेश्वर जय जय
शिव(शिवा)दूत जय जय
त्वरित जय जय
कुलसुन्दर जय जय
नित्य जय जय
नीलपताक जय जय
विजय जय जय
सर्वमङ्गल जय जय
ज्वालामालिन् जय जय
चित्र जय जय
महानित्य जय जय (१९१)
परमेश्वरपरमेश्वर जय जय
मित्रीशमय जय जय
षष्ठीशमय जय जय
उड्डीशमय जय जय
चर्यानाथमय जय जय
लोपामुद्रामय जय जय
अगस्त्यमय जय जय
कालतापनमय जय जय
धर्माचारमय जय जय
मुक्तकेशीश्वरमय जय जय
दीपकलानाथमय जय जय
विष्णुदेवमय जय जय

प्रभाकरदेवमय जय जय
तेजोदेवमय जय जय
मनोजदेवमय जय जय
कल्याणदेवमय जय जय
रत्नदेवमय जय जय
वासुदेवमय जय जय (३७८)
श्रीरामानन्दमय जय जय
अणिमासिद्धे जय जय
लघिमासिद्धे जय जय
महिमासिद्धे जय जय
ईशित्वसिद्धे जय जय
वशित्वसिद्धे जय जय
प्राकाम्यसिद्धे जय जय
भुक्तिसिद्धे जय जय
इच्छासिद्धे जय जय
प्राप्तिसिद्धे जय जय
सर्वकामसिद्धे जय जय (४७४)
ब्राह्म जय जय
माहेश्वर जय जय
कौमार जय जय
वैष्णव जय जय
वाराह जय जय
माहेन्द्र जय जय
चामुण्ड जय जय
महालक्ष्मि जय जय (५३१)
सर्वसंक्षोभिन् जय जय

सर्वविद्राविन् जय जय
सर्वाकर्षिन् जय जय
सर्ववशङ्कर जय जय
सर्वोन्मादिन जय जय
सर्वमहाङ्कुश जय जय
सर्वखेचर जय जय
सर्वबीज जय जय
सर्वयोने जय जय
सर्वत्रिखण्ड जय जय
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन् जय जय
प्रकटयोगिन जय जय (६४२)
कामाकर्षण जय जय
बुद्ध्याकर्षण जय जय
अहङ्काराकर्षण जय जय
शब्दाकर्षण जय जय
स्पर्शाकर्षण जय जय
रूपाकर्षण जय जय
रसाकर्षण जय जय
गन्धाकर्षण जय जय
चित्ताकर्षण जय जय
धैर्याकर्षण जय जय
स्मृत्याकर्षण जय जय
नामाकर्षण जय जय
बीजाकर्षण जय जय
आत्माकर्षण जय जयं
अमृताकर्षण जय जय
शरीराकर्षण जय जय
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन जय जय
गुप्तयोगिन जय जय (८११)
अनङ्गकुसुम जय जय
अनङ्गमेखल जय जय
अनङ्गमदन जय जय
अनङ्गमदनातुर जय जय
अनङ्गरेख जय जय
अनङ्गवेगिन् जय जय (८६६)
अनङ्गाङ्कुश जय जय
अनङ्गमालिन् जय जय
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन् जय जय
गुप्ततरयोगिन जय जय (९०७)
सर्वसंक्षोभिन् जय जय
सर्वविद्राविन् जय जय
सर्वाकर्षिन् जय जय
सर्वाह्लादिन् जय जय
सर्वसम्मोहिन् जय जय
सर्वस्तम्भिन् जय जय
सर्वजृम्भिन् जय जय
सर्ववशङ्कर जय जय
सर्वरञ्जिन् जय जय
सर्वोन्मादिन् जय जय
सर्वार्थसाधिन् जय जय
सर्वसम्पत्तिपूरण जय जय
सर्वमन्त्रमय जय जय

सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर जय जय
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन् जय जय
सम्प्रदाययोगिन् जय जय (१०६१)
सर्वसिद्धिप्रद जय जय
सर्वसम्पत्प्रद जय जय
सर्वप्रियङ्कर जय जय
सर्वमङ्गलाकारिन् जय जय
सर्वकामप्रद जय जय
सर्वदु:खविमोचिन् जय जय
सर्वमृत्युप्रशमन जय जय
सर्वविघ्ननिवारिन् जय जय
सर्वाङ्गसुन्दर जय जय
सर्वसौभाग्यदायिन् जय जय
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन् जय जय
कुलोत्तीर्णयोगिन् जय जय (११९१)
सर्वज्ञ जय जय
सर्वशक्ते जय जय
सर्वैश्वर्यप्रद जय जय
सर्वज्ञानमय जय जय
सर्वव्याधिविनाशिन् जय जय
सर्वाधारस्वरूप जय जय
सर्वपापहर जय जय
सर्वानन्दमय जय जय
सर्वरक्षास्वरूपिन् जय जय
सर्वेप्सितप्रद जय जय
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन् जय जय
निगर्भयोगिन् जय जय (१३१२)
वशिन् जय जय
कामेश्वर जय जय
मोदिन् जय जय
विमल जय जय
अरुण जय जय
जयिन् जय जय
सर्वेश्वर जय जय
कौलिन् जय जय
सर्वरोगहरचक्रस्वामिन् जय जय
रहस्ययोगिन् जय जय (१३८८)
बाणिन् जय जय
चापिन् जय जय
पाशिन् जय जय
अङ्कुशिन् जय जय (१४१३)
महाकामेश्वर जय जय
महावज्रेश्वर जय जय
महाभगमालिन् जय जय
महाश्रीसुन्दर जय जय
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन् जय जय
अतिरहस्ययोगिन् जय जय (१४७८)
श्रीश्रीमहाभट्टारक जय जय
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन् जय जय
परापररहस्ययोगिन् जय जय (१५१७)
त्रिपुर जय जय
त्रिपुरेश जय जय
त्रिपुरसुन्दर जय जय

त्रिपुरवासिन् जय जय
त्रिपुराश्री जय जय
त्रिपुरमालिन् जय जय
त्रिपुरासिद्ध जय जय
त्रिपुराम्ब जय जय
महात्रिपुरसुन्दर जय जय (१५९७)
महामहेश्वर जय जय
महामहाराज जय जय
महामहाशक्ते जय जय
महामहागुप्त जय जय
महामहाज्ञप्ते जय जय
महामहानन्द जय जय
महामहास्पन्द जय जय
महामहाशय जय जय
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज-
जय जय (१६९४)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१७०३)

त्र्यधिकसप्तदशशतान्यक्षराणि ।

इति शुद्धशिवजयान्तमाला ।

***

११ शुद्धशक्तिशिवमिथुनसम्बुद्ध्यन्तमाला ।

ह्रीं

श्री नीलपताका नित्या

ब्रह्मेन्द्ररुद्रकमलासनभानुचन्द्र-
कन्दर्पगूहप्रमुखार्चितदिव्यपादाम् ।
देवीं त्रिलोकजननीं त्रिगुणस्वरूपां
ध्यायामि नीलचिकुरां शुभपुण्यपुञ्जाम् ॥

शुक्लैकादश्याम् कृष्णपञ्चम्याम्

अस्यश्रीशुद्धशक्तिशिवमिथुनसम्बुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रयस्य, अहङ्कारतत्त्व-धिष्ठायित्वष्ट्रादित्यऋषये नमः। अष्टिच्छन्दसे नमः। तामसह्रींकारभट्टारक-पीठस्थितहिरण्याललितामहाभट्टारिकाहृदयेश्वरकामेश्वरमहाभट्टारकमिथुनाय देवतायै नमः । ऐं बीजं,क्लीं शक्तिः,सौः कीलकम् । सर्वसम्मोहनसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्-

अम्बिके तव भक्तानामवलोकनमात्रतः ।
कृत्याकृत्यविमूढाः स्युर्नरा नार्यो नृपादयः ॥

गायत्री

नीलपताकायै विद्महे महानित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरसुन्दर (१८) हृदयदेवि हृदयदेव शिरोदेवि शिरोदेव शिखादेवि शिखादेव कवचदेवि कवचदेव

नेत्रदेवि नेत्रदेवास्त्रदेव्यस्त्रदेव (६८) कामेश्वरि कामेश्वर भगमालिनि भगमालिन् नित्यक्लिन्ने नित्यक्लिन्न भेरुण्डे भेरुण्ड वह्निवासिनि वह्निवासिन् महावज्रेश्वरि महावज्रेश्वर शिव(शिवा)दूति शिव(शिवा)दूत त्वरिते त्वरित कुलसुन्दरि कुलसुन्दर नित्ये नित्य नीलपताके नीलपताक विजये विजय सर्वमङ्गले सर्वमङ्गल ज्वालामालिनि ज्वालामालिन् चित्रे चित्र महानित्ये महानित्य (१९५) परमेश्वरपरमेश्वरि परमेश्वरपरमेश्वर मित्रीशमयि मित्रीशमय षष्ठीशमयी षष्ठीशमयोड्डीशमयुड्डीशमय चर्यानाथमयि चर्यानाथमय लोपामुद्रामयि लोपामुद्रामयागस्त्यमय्यगस्त्यमय कालतापनमयि कालतापनमय धर्माचारमयि धर्माचारमय मुक्तकेशीश्वरमयि मुक्तकेशीश्वरमय दीपकलानाथमयि दीपकलानाथमय विष्णुदेवमयि विष्णुदेवमय प्रभाकरदेव-मयि प्रभाकरदेवमय तेजोदेवमयि तेजोदेवमय मनोजदेवमयि मनोजदेवमय कल्याणदेवमयि कल्याणदेवमय रत्नदेवमयि रत्नदेवमय वासुदेवमयि वासुदेवमय (४२५) श्रीरामानन्दमयि श्रीरामानन्दमयाणिमासिद्धे अणिमासिद्ध लघिमासिद्धे लघिमासिद्ध महिमासिद्धे महिमासिद्ध ईशित्वसिद्ध ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे भुक्तिसिद्ध इच्छासिद्ध इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे सर्वकामसिद्ध (५३३) ब्राह्मि ब्राह्म माहेश्वरि माहेश्वर कौमारि कौमार वैष्णवि वैष्णव वाराहि वाराह माहेन्द्रि माहेन्द्र चामुण्डे चामुण्ड महालक्ष्मीर्महालक्ष्मी (५८३) सर्वसंक्षोभिणि सर्वसंक्षोभिन् सर्वविद्राविणि सर्वविद्राविन् सर्वाकर्षिणि सर्वाकर्षिन् सर्ववशङ्करि सर्ववशङ्कर सर्वोन्मादिनि सर्वोन्मादिन् सर्वमहाङ्कुशे सर्वमहाङ्कुश सर्वखेचरि सर्वखेचर सर्वबीजे सर्वबीज सर्वयोने सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे सर्वत्रिखण्ड त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन् प्रकटयोगिनि प्रकटयोगिन् (७१५) कामाकर्षणि कामाकर्षण बुद्ध्याकर्षणि बुद्ध्याकर्षण अहङ्काराकर्षणि अहङ्काराकर्षण शब्दाकर्षणि शब्दाकर्षण स्पर्शाकर्षणि स्पर्शाकर्षण रूपाकर्षणि रूपाकर्षण रसाकर्षणि रसाकर्षण गन्धाकर्षणि गन्धाकर्षण चित्ताकर्षणि चित्ताकर्षण धैर्याकर्षणि धैर्याकर्षण स्मृत्याकर्षणि स्मृत्याकर्षण नामाकर्षणि नामाकर्षण बीजाकर्षणि

बीजाकर्षणात्माकर्षण्यात्माकर्षणमृताकर्षण्यमृताकर्षण शरीराकर्षणि शरीराकर्षण सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्(९०२) गुप्तयोगिनि गुप्तयोगिनि अनङ्गकुसुमे अनङ्गकुसुम अनङ्गमेखले अनङ्गमेखल अनङ्गमदने अनङ्गमदन अनङ्गमदनातुरे अनङ्गमदनातुर अनङ्गरेखे अनङ्गरेख अनङ्गवेगिनि अनङ्गवेगिन् अनङ्गाङ्कुशे अनङ्गाङ्कुश अनङ्गमालिनि अनङ्गमालिन् सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन् गुप्ततरयोगिनि गुप्ततरयोगिन् (१०२५) सर्वसंक्षोभिणि सर्वसंक्षोभिन् सर्वविद्राविणि सर्वविद्राविन् सर्वाकर्षिणी सर्वाकर्षिन् सर्वह्लादिनि सर्वह्लादिन् सर्वसम्मोहिनि सर्वसम्मोहिन् सर्वस्तम्भिनि सर्वस्तम्भिन् सर्वजृम्भिणि सर्वजृम्भिन् सर्ववशङ्करि सर्ववशङ्कर सर्वरञ्जिनि सर्वरञ्जिन् सर्वोन्मादिनि सर्वोन्मादिन् सर्वार्थसाधिनि सर्वार्थसाधिन् सर्वसम्पत्तिपूरणि सर्वसम्पत्तिपूरण सर्वमन्त्रमयि सर्वमन्त्रमय सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन् सम्प्रदाययोगिनि सम्प्रदाययोगिन् (१२१७) सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसिद्धिप्रद सर्वसम्पत्प्रदे सर्वसम्पत्प्रद सर्वप्रियङ्करि सर्वप्रियङ्कर सर्वमङ्गलकारिणि सर्वमङ्गलकारिन् सर्वकामप्रदे सर्वकामप्रद सर्वदुःखविमोचिनि सर्वदुःखविमोचिन् सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वमृत्युप्रशमन् सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वविघ्ननिवारिन् सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वाङ्गसुन्दर सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वसौभाग्यदायिन् सर्वार्थसाधक-चक्रस्वामिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन् कुलोत्तीर्णयोगिनि कुलोत्तीर्णयोगिन् (१३८७) सर्वज्ञे सर्वज्ञ सर्वशक्ते सर्वशक्त सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वैश्वर्यप्रद सर्वज्ञानमयि सर्वज्ञानमय सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वव्याधिविनाशिन् सर्वाधारस्वरूपे सर्वाधारस्वरूप सर्वपापहरे सर्वपापहर सर्वानन्दमयि सर्वानन्दमय सर्वरक्षा-स्वरूपिणि सर्वरक्षास्वरूपिन् सर्वेप्सितप्रदे सर्वेप्सितप्रद सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन् निगर्भयोगिनि निगर्भयोगिन् (१५३७) वशिनि वशिन् कामेश्वरि कामेश्वर मोदिनि मोदिन् विमले विमलारूणेऽरुण जयिनि जयिन् सर्वेश्वरि सर्वेश्वर कौलिनि कौलिन् सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिन् रहस्ययोगिनि रहस्ययोगिन् (१६१५) बाणिनि बाणिन् चापिनि चापिन् पाशिनि पाशिन् अङ्कुशिनि अङ्कुशिन् (१६३६) महाकामेश्वरि

महाकामेश्वर महावज्रेश्वरि महावज्रेश्वर महाभगमालिनि महाभगमालिन् महाश्रीसुन्दरि महाश्रीसुन्दर सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन् अतिरहस्ययोगिनि अतिरहस्ययोगिन् (१७१०) श्रीश्रीमहाभट्टारिके श्रीश्रीमहाभट्टारक सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन् परापररहस्ययोगिनि परापररहस्ययोगिन् (१७७६) त्रिपुरे त्रिपुर त्रिपुरेशि त्रिपुरेश त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरसुन्दर त्रिपुरवासिनि त्रिपुरवासिन् त्रिपुराश्री त्रिपुराश्री त्रिपुरमालिनि त्रिपुरमालिन् त्रिपुरासिद्धे त्रिपुरासिद्ध त्रिपुराम्ब त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दरि महात्रिपुरसुन्दर (१८६६) महामहेश्वरि महामहेश्वर महामहाराज्ञि महामहाराज महामहाशक्ते महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहागुप्त महामहाज्ञप्ते महामहाज्ञप्त महामहानन्दे महामहानन्द महामहास्पन्दे महामहास्पन्द महामहाशये महामहाशय महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज (१९८८) नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१९९७)

सप्तनवत्युत्तरनवशताधिकसहस्राक्षराणि ।

इति शुद्धशक्तिशिवमिथुनसम्बुद्ध्यन्तमाला ।

***

१२ शुद्धशक्तिशिवमिथुननमोऽन्तमाला ।

स

श्री विजया नित्या

गजास्यस्कन्दजननीं सुजनार्तिविनाशिनीं ।

यजामहे प्रतिदिनं विजयां विश्वमोहिनीम् ॥

शुक्लद्वादश्याम् कृष्णचतुर्थ्याम्

अस्य श्रीशुद्धशक्तिशिवमिथुननमोऽन्तमालामहामन्त्रस्य, बुद्धितत्त्वाधिष्ठायिविष्ण्वादित्यऋषये नमः। अत्यष्टिच्छन्दसे नमः। मोक्षदसकारभट्टारकपीठस्थितसकलजननीललितामहाभट्टारिकासकलेश्वरकामेश्वरमहाभट्टारकमिथुनाय देवतायै नमः। ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । सर्वस्तम्भनसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

देवि त्वद्भक्तमालोक्य शरीरेन्द्रियचेतसाम् ।

स्तम्भनाद्वैरिणः स्तब्धाः स्वस्वकार्यपराङ्मुखाः ॥

गायत्री

विजयादेव्यै विद्महे महानित्यायै धीमहि ।

तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि (३७)

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदयदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदयदेवाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरोदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरोदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखादेव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखादेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवचदेव्यै नमः पादुकां पूजंयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवचदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्रदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्रदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्रदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्रदेवाय नमः पादुकां पूजयामि (२०१)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भगमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भगमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यक्लिन्नायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यक्लिन्नाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव(शिवा)दूत्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिव(शिवा)दूताय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरितायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरिताय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्याय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नीलपताकायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नीलपताकाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वालामालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वालामालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्रायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्राय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानित्यायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानित्याय नमः पादुकां पूजयामि (६४१)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वरपरमेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथमयाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रामय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रामयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्यमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्यमयाय नमः पादुकां पूजयामि (८५४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कालतापनमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कालतापनमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचारमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचारमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वरमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीपकलानाथमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीपकलानाथमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णुदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णुदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकरदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकरदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजोदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजोदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोजदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोजदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याणदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याणदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्नदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्नदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि (१२१३)

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्दमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्दमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्वसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्वसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्वसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्वसिद्धये नमः पादुका पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्यसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्तिसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्तिसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि (१५२६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्म्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्माय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमार्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमाराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराह्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराहाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्र्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्राय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नमः पादुकां पूजयामि (१७३८)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमहाङ्कुशायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमहाङ्कुशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वखेचर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वखेचराय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वबीजायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वबीजाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वयोन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वयोनये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वत्रिखण्डायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वत्रिखण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकटयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकटयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२१०२)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रूपाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रूपाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि (२६०१)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्तयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्तयोगिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गकुसुमाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमेखलायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमेखलाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनातुरायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनातुराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गरेखायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गरेखाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गवेगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गवेगिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गाङ्कुशायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गाङ्कुशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततरयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततरयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२९३७)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वह्लादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वह्लादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्मोहिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्मोहिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वस्तम्भिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वस्तम्भिने नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वजृम्भिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वजृम्भिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरञ्जिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरञ्जिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्तिपूरण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्तिपूरणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमन्त्रमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमन्त्रमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (३४४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वप्रियङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वप्रियङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलकारिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वदु:खविमोचिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वदु:खविमोचिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमृत्युप्रशमनाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविघ्ननिवारिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्णयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (३८३४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वशक्त्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वशक्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्यप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्यप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञानमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञानमयाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वव्याधिविनाशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधारस्वरूपायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधारस्वरूपाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वपापहरायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वपापहराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षास्वरूपिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (४२१७)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरोगहरचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (४४८७)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अङ्कुशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अङ्कुशिने नमः पादुकां पूजयामि (४५८३)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाकामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाकामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाभगमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाभगमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाश्रीसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाश्रीसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (४७८०)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीश्रीमहाभट्टारकाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापररहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापररहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (४८९४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेश्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरवासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरवासिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रियै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रिये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महात्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि (५१५९)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाराज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाराजाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशक्तयै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशक्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहागुप्तायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहागुप्ताय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाज्ञप्तयै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाज्ञप्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहानन्दायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहानन्दाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहास्पन्दायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहास्पन्दाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशयायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजाय नमः पादुकां पूजयामि ।(५४५६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥(५४६५)

पञ्चषष्ट्याधिकचतुःशतोत्तरपञ्चसहस्त्राक्षराणि ।
इति शुद्धशक्तिशिवमिथुननमोऽन्तमाला ।

***

१३ शुद्धशक्तिशिवमिथुनस्वाहान्तमाला ।

क

श्री सर्वमङ्गला नित्या

पार्वणेन्दुसन्निभाननां प्रदीप्तकुण्डलां
सर्वलोकपूजितांघ्रिदिव्यपङ्कजां शिवाम् ।
सर्वलोकनायिकां समस्तसौख्यादायिकां
प्रसन्नविग्रहां सदा स्मरामि सर्वमङ्गलाम् ॥

शुक्लत्रयोदश्यां कृष्णतृतीयायां

अस्य श्रीशुद्धशक्तिशिवमिथुनस्वाहान्तमालामहामन्त्रस्य, चित्ततत्त्वाधिष्ठायिब्रह्मात्मने प्रातरादित्यऋषये नमः । धृतिच्छन्दसे नमः । राजसककारभट्टारकपीठस्थितकामकोटिललितामहाभट्टारिकाकरुणाकरकामेश्वरमहाभट्टारकमिथुनाय देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । मम धर्मार्थकाममोक्षचतुष्टयसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्-

**धर्मश्चार्थश्च कामश्च मोक्षश्चेति चतुष्टयम् ।
तव भक्तः स्वभक्तेभ्यः प्रयच्छत्यप्रयासतः ॥**

गायत्री

**सर्वमङ्गलायै विद्महे चन्द्रात्मिकायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।**

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा
त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा (२३) हृदयदेव्यै स्वाहा

हृदयदेवाय स्वाहा
शिरोदेव्यै स्वाहा
शिरोदेवाय स्वाहा
शिखादेव्यै स्वाहा
शिखादेवाय स्वाहा
कवचदेव्यै स्वाहा
कवचदेवाय स्वाहा
नेत्रदेव्यै स्वाहा
नेत्रदेवाय स्वाहा
अस्त्रदेव्यै स्वाहा
अस्त्रदेवाय स्वाहा (१०३)
कामेश्वर्यै स्वाहा
कामेश्वराय स्वाहा
भगमालिन्यै स्वाहा
भगमालिने स्वाहा
नित्यक्लिन्नायै स्वाहा
नित्यक्लिन्नाय स्वाहा
भेरुण्डायै स्वाहा
भेरुण्डाय स्वाहा
वह्निवासिन्यै स्वाहा
वह्निवासिने स्वाहा
महावज्रेश्वर्यै स्वाहा
महावज्रेश्वराय स्वाहा
शिव(शिवा)दूत्यै स्वाहा
शिव(शिवा)दूताय स्वाहा
त्वरितायै स्वाहा
त्वरिताय स्वाहा

कुलसुन्दर्यै स्वाहा
कुलसुन्दराय स्वाहा
नित्यायै स्वाहा
नित्याय स्वाहा
नीलपताकायै स्वाहा
नीलपताकाय स्वाहा
विजयायै स्वाहा
विजयाय स्वाहा
सर्वमङ्गलायै स्वाहा
सर्वमङ्गलाय स्वाहा
ज्वालामालिन्यै स्वाहा
ज्वालामालिने स्वाहा
चित्रायै स्वाहा
चित्राय स्वाहा
महानित्यायै स्वाहा
महानित्याय स्वाहा (१३९)
परमेश्वरपरमेश्वर्यै स्वाहा
परमेश्वरपरमेश्वराय स्वाहा
मित्रीशमय्यै स्वाहा
मित्रीशमयाय स्वाहा
षष्ठीशमय्यै स्वाहा
षष्ठीशमयाय स्वाहा
उड्डीशमय्यै स्वाहा
उड्डीशमयाय स्वाहा
चर्यानाथमय्यै स्वाहा
चर्यानाथमयाय स्वाहा
लोपामुद्रामय्यै स्वाहा

लोपामुद्रामयाय स्वाहा
अगस्त्यमय्यै स्वाहा
अगस्त्यमयाय स्वाहा
कालतापनमय्यै स्वाहा
कालतापनमयाय स्वाहा
धर्माचारमय्यै स्वाहा
धर्माचारमयाय स्वाहा
मुक्तकेशीश्वरमय्यै स्वाहा
मुक्तकेशीश्वरमयाय स्वाहा
दीपकलानाथमय्यै स्वाहा
दीपकलानाथमयाय स्वाहा
विष्णुदेवमय्यै स्वाहा
विष्णुदेवमयाय स्वाहा
प्रभाकरदेवमय्यै स्वाहा
प्रभाकरदेवमयाय स्वाहा
तेजोदेवमय्यै स्वाहा
तेजोदेवमयाय स्वाहा
मनोजदेवमय्यै स्वाहा
मनोजदेवमयाय स्वाहा
कल्याणदेवमय्यै स्वाहा
कल्याणदेवमयाय स्वाहा
रत्नदेवमय्यै स्वाहा
रत्नदेवमयाय स्वाहा
वासुदेवमय्यै स्वाहा
वासुदेवमयाय स्वाहा (६३९)
श्रीरामानन्दमय्यै स्वाहा
श्रीरामानन्दमयाय स्वाहा

अणिमासिद्ध्यै स्वाहा
अणिमासिद्धये स्वाहा
लघिमासिद्ध्यै स्वाहा
लघिमासिद्धये स्वाहा
महिमासिद्ध्यै स्वाहा
महिमासिद्धये स्वाहा
ईशत्वसिद्ध्यै स्वाहा
ईशित्वसिद्धये स्वाहा
वशित्वसिद्ध्यै स्वाहा
वशित्वसिद्धये स्वाहा
प्राकाम्यसिद्ध्यै स्वाहा
प्राकाम्यसिद्धये स्वाहा
भुक्तिसिद्ध्यै स्वाहा
भुक्तिसिद्धये स्वाहा
इच्छासिद्ध्यै स्वाहा
इच्छासिद्धये स्वाहा
प्राप्तिसिद्ध्यै स्वाहा
प्राप्तिसिद्धये स्वाहा
सर्वकामसिद्ध्यै स्वाहा
सर्वकामसिद्धये स्वाहा (७९८)
ब्राह्म्यै स्वाहा
ब्राह्माय स्वाहा
माहेश्वर्यै स्वाहा
माहेश्वराय स्वाहा
कौमार्यै स्वाहा
कौमाराय स्वाहा
वैष्णव्यै स्वाहा

वैष्णवाय स्वाहा
वाराह्यै स्वाहा
वाराहाय स्वाहा
माहेन्द्र्यै स्वाहा
माहेन्द्राय स्वाहा
चामुण्डायै स्वाहा
चामुण्डाय स्वाहा
महालक्ष्म्यै स्वाहा
महालक्ष्म्ये स्वाहा (८८८)
सर्वसंक्षोभिण्यै स्वाहा
सर्वसंक्षोभिणे स्वाहा
सर्वविद्राविण्यै स्वाहा
सर्वविद्राविणे स्वाहा
सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा
सर्वाकर्षिणे स्वाहा
सर्ववशङ्कर्यै स्वाहा
सर्ववशङ्कराय स्वाहा
सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा
सर्वोन्मादिने स्वाहा
सर्वमहाङ्कुशायै स्वाहा
सर्वमहाङ्कुशाय स्वाहा
सर्वखेचर्यै स्वाहा
सर्वखेचराय स्वाहा
सर्वबीजायै स्वाहा
सर्वबीजाय स्वाहा
सर्वयोन्यै स्वाहा
सर्वयोनये स्वाहा
सर्वत्रिखण्डायै स्वाहा
सर्वत्रिखण्डाय स्वाहा
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिने स्वाहा
प्रकटयोगिन्यै स्वाहा
प्रकटयोगिने स्वाहा (१०८३)
कामाकर्षण्यै स्वाहा
कामाकर्षणाय स्वाहा
बुद्ध्याकर्षण्यै स्वाहा
बुद्ध्याकर्षणाय स्वाहा
अहङ्काराकर्षण्यैं स्वाहा
अहङ्काराकर्षणाय स्वाहा
शब्दाकर्षण्यै स्वाहा
शब्दाकर्षणाय स्वाहा
स्पर्शाकर्षण्यै स्वाहा
स्पर्शाकर्षणाय स्वाहा
रूपाकर्षण्यै स्वाहा
रूपाकर्षणाय स्वाहा
रसाकर्षण्यै स्वाहा
रसाकर्षणाय स्वाहा
गन्धाकर्षण्यै स्वाहा
गन्धाकर्षणाय स्वाहा
चित्ताकर्षण्यै स्वाहा
चित्ताकर्षणाय स्वाहा
धैर्याकर्षण्यै स्वाहा
धैर्याकर्षणाय स्वाहा
स्मृत्याकर्षण्यै स्वाहा

स्मृत्याकर्षणाय स्वाहा
नामाकर्षण्यै स्वाहा
नामाकर्षणाय स्वाहा
बीजाकर्षण्यै स्वाहा
बीजाकर्षणाय स्वाहा
आत्माकर्षण्यै स्वाहा
आत्माकर्षणाय स्वाहा
अमृताकर्षण्यै स्वाहा
अमृताकर्षणाय स्वाहा
शरीराकर्षण्यै स्वाहा
शरीराकर्षणाय स्वाहा
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिने स्वाहा (१३५५)
गुप्तयोगिन्यै स्वाहा
गुप्तयोगिने स्वाहा
अनङ्गकुसुमायै स्वाहा
अनङ्गकुसुमाय स्वाहा
अनङ्गमेखलायै स्वाहा
अनङ्गमेखलाय स्वाहा
अनङ्गमदनायै स्वाहा
अनङ्गमदनाय स्वाहा
अनङ्गमदनातुरायै स्वाहा
अनङ्गमदनातुराय स्वाहा
अनङ्गरेखायै स्वाहा
अनङ्गरेखाय स्वाहा
अनङ्गवेगिन्यै स्वाहा

अनङ्गवेगिने स्वाहा
अनङ्गाङ्कुशायै स्वाहा
अनङ्गाङ्कुशाय स्वाहा
अनङ्गमालिन्यै स्वाहा
अनङ्गमालिने स्वाहा
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिने स्वाहा
गुप्ततरयोगिन्यै स्वाहा
गुप्ततरयोगिने स्वाहा (१५३७)
सर्वसंक्षोभिण्यै स्वाहा
सर्वसंक्षोभिणे स्वाहा
सर्वविद्राविण्यै स्वाहा
सर्वविद्राविणे स्वाहा
सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा
सर्वाकर्षिणे स्वाहा
सर्वह्लादिन्यै स्वाहा
सर्वह्लादिने स्वाहा
सर्वसम्मोहिन्यै स्वाहा
सर्वसम्मोहिने स्वाहा
सर्वस्तम्भिन्यै स्वाहा
सर्वस्तम्भिने स्वाहा
सर्वजृम्भिण्यै स्वाहा
सर्वजृम्भिणे स्वाहा
सर्ववशङ्कर्यै स्वाहा
सर्ववशङ्कराय स्वाहा
सर्वरञ्जिन्यै स्वाहा
सर्वरञ्जिने स्वाहा

सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा
सर्वोन्मादिने स्वाहा
सर्वार्थसाधिन्यै स्वाहा
सर्वार्थसाधिने स्वाहा
सर्वसम्पत्तिपूरण्यै स्वाहा
सर्वसम्पत्तिपूरणाय स्वाहा
सर्वमन्त्रमय्यै स्वाहा
सर्वमन्त्रमयाय स्वाहा
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै स्वाहा
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कराय स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिने स्वाहा
सम्प्रदाययोगिन्यै स्वाहा
सम्प्रदाययोगिने स्वाहा (१८०९)
सर्वसिद्धिप्रदायै स्वाहा
सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा
सर्वसम्पत्प्रदायै स्वाहा
सर्वसम्पत्प्रदाय स्वाहा
सर्वप्रियङ्कर्यै स्वाहा
सर्वप्रियङ्कराय स्वाहा
सर्वमङ्गलकारिण्यै स्वाहा
सर्वमङ्गलकारिणे स्वाहा
सर्वकामप्रदायै स्वाहा
सर्वकामप्रदाय स्वाहा
सर्वदुःखविमोचिन्यै स्वाहा
सर्वदुःखविमोचिने स्वाहा
सर्वमृत्युप्रशमन्यै स्वाहा
सर्वमृत्युप्रशमनाय स्वाहा
सर्वविघ्ननिवारिण्यै स्वाहा
सर्वविघ्ननिवारिणे स्वाहा
सर्वाङ्गसुन्दर्यै स्वाहा
सर्वाङ्गसुन्दराय स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायिन्यै स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायिने स्वाहा
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिने स्वाहा
कुलोत्तीर्णयोगिन्यै स्वाहा
कुलोत्तीर्णयोगिने स्वाहा (२०४२)
सर्वज्ञायै स्वाहा
सर्वज्ञाय स्वाहा
सर्वशक्त्यै स्वाहा
सर्वशक्तये स्वाहा
सर्वैश्वर्यप्रदायै स्वाहा
सर्वैश्वर्यप्रदाय स्वाहा
सर्वज्ञानमय्यै स्वाहा
सर्वज्ञानमयाय स्वाहा
सर्वव्याधिविनाशिन्यै स्वाहा
सर्वव्याधिविनाशिने स्वाहा
सर्वाधारस्वरूपायै स्वाहा
सर्वाधारस्वरूपाय स्वाहा
सर्वपापहरायै स्वाहा
सर्वपापहराय स्वाहा
सर्वानन्दमय्यै स्वाहा
सर्वानन्दमयाय स्वाहा

सर्वरक्षास्वरूपिण्यै स्वाहा
सर्वरक्षास्वरूपिणे स्वाहा
सर्वेप्सितप्रदायै स्वाहा
सर्वेप्सितप्रदाय स्वाहा
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिने स्वाहा
निगर्भयोगिन्यै स्वाहा
निगर्भयोगिने स्वाहा (२२५६)
वशिन्यै स्वाहा
वशिने स्वाहा
कामेश्वर्यै स्वाहा
कामेश्वराय स्वाहा
मोदिन्यै स्वाहा
मोदिने स्वाहा
विमलायै स्वाहा
विमलाय स्वाहा
अरुणायै स्वाहा
अरुणाय स्वाहा
जयिन्यै स्वाहा
जयिने स्वाहा
सर्वेश्वर्यै स्वाहा
सर्वेश्वराय स्वाहा
कौलिन्यै स्वाहा
कौलिने स्वाहा
सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वरोगहरचक्रस्वामिने स्वाहा
रहस्ययोगिन्यै स्वाहा
रहस्ययोगिने स्वाहा (२३८७)
बाणिन्यै स्वाहा
बाणिने स्वाहा
चापिन्यै स्वाहा
चापिने स्वाहा
पाशिन्यै स्वाहा
पाशिने स्वाहा
अङ्कुशिन्यै स्वाहा
अङ्कुशिने स्वाहा (२४२७)
महाकामेश्वर्यै स्वाहा
महाकामेश्वराय स्वाहा
महावज्रेश्वर्यै स्वाहा
महावज्रेश्वराय स्वाहा
महाभगमालिन्यै स्वाहा
महाभगमालिने स्वाहा
महाश्रीसुन्दर्यै स्वाहा
महाश्रीसुन्दराय स्वाहा
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिने स्वाहा
अतिरहस्ययोगिन्यै स्वाहा
अतिरहस्ययोगिने स्वाहा (२५४०)
श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै स्वाहा
श्रीश्रीमहाभट्टारकाय स्वाहा
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिने स्वाहा
परापररहस्ययोगिन्यै स्वाहा
परापररहस्ययोगिने स्वाहा (२६१२)

त्रिपुरायै स्वाहा
त्रिपुराय स्वाहा
त्रिपुरेश्यै स्वाहा
त्रिपुरेशाय स्वाहा
त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा
त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा
त्रिपुरवासिन्यै स्वाहा
त्रिपुरवासिने स्वाहा
त्रिपुराश्रियै स्वाहा
त्रिपुराश्रिये स्वाहा
त्रिपुरमालिन्यै स्वाहा
त्रिपुरमालिने स्वाहा
त्रिपुरासिद्धायै स्वाहा
त्रिपुरासिद्धाय स्वाहा
त्रिपुराम्बायै स्वाहा
त्रिपुराम्बाय स्वाहा
महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा
महात्रिपुरसुन्दराय स्वाहा (२७५१)
महामहेश्वर्यै स्वाहा
महामहेश्वराय स्वाहा

महामहाराज्ञ्यै स्वाहा
महामहाराजाय स्वाहा
महामहाशक्त्यै स्वाहा
महामहाशक्तये स्वाहा
महामहागुप्तायै स्वाहा
महामहागुप्ताय स्वाहा
महामहाज्ञप्त्यै स्वाहा
महामहाज्ञप्तये स्वाहा
महामहानन्दायै स्वाहा
महामहानन्दाय स्वाहा
महामहास्पन्दायै स्वाहा
महामहास्पन्दाय स्वाहा
महामहाशयायै स्वाहा
महामहाशयाय स्वाहा
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ्यै स्वाहा
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजाय स्वाहा
(२९२२)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (२९३१)

एकत्रिंशदधिकनवशतोत्तरद्विसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशक्तिशिवमिथुनस्वाहान्तमाला ।

***

१४ शुद्धशक्तिशिवमिथुनतर्पणान्तमाला ।

ल

श्री ज्वालामालिनी नित्या

फालाक्षाब्जभवेन्द्रविष्णुनमितां फट्कारवर्णात्मिकां
मालां भक्तजनार्तिमङ्गलकरां भाग्यप्रदां श्यामलाम् ।
मूलाधारगतां त्रिलोकजननीं मुक्तिप्रदां कामदां
वन्दे ज्वालामालिनीं प्रतिदिनं पद्मासनस्थां शिवाम् ॥

शुक्लचर्तुदश्याम् कृष्णाद्वितीयायाम्

अस्य श्रीशुद्धशिवमिथुनतर्पणान्तमालामहामन्त्रस्य, प्रधानतत्त्वधिष्ठायि-विष्णवात्मने मध्याह्नादित्यऋषये नमः । अतिधृतिच्छन्दसे नमः । राज-सलकारभट्टारकपीठस्थितलीलावती ललितामहाभट्टारिकालावण्यनायक-कामेश्वरमहाभट्टारकमिथुनाय देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । मम नित्यानन्दसिद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

अलौकिकं लौकिकं च ह्यानन्दद्वयनिर्मलम् ।
सुलभं परमेशानि त्वत्पादौ भजतां नृणाम् ॥

गायत्री

ज्वालामालिन्यै विद्महे महाज्वालायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा -

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि

त्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि(२६) हृदयदेवीं तर्पयामि

हृदयदेवं तर्पयामि
शिरोदेवीं तर्पयामि
शिरोदेवं तर्पयामि
शिखादेवीं तर्पयामि
शिखादेवं तर्पयामि
कवचदेवीं तर्पयामि
कवचदेवं तर्पयामि
नेत्रदेवीं तर्पयामि
नेत्रदेवं तर्पयामि
अस्त्रदेवीं तर्पयामि
अस्त्रदेवं तर्पयामि (१२४)
कामेश्वरीं तर्पयामि
कामेश्वरं तर्पयामि
भगमालिनीं तर्पयामि
भगमालिनं तर्पयामि
नित्यक्लिन्नां तर्पयामि
नित्यक्लिन्नं तर्पयामि
भेरुण्डां तर्पयामि
भेरुण्डं तर्पयामि
वह्निवासिनीं तर्पयामि
वह्निवासिनं तर्पयामि
महावज्रेश्वरीं तर्पयामि
महावज्रेश्वरं तर्पयामि
शिव(शिवा)दूतीं तर्पयामि
शिव(शिवा)दूतं तर्पयामि
त्वरितां तर्पयामि
त्वरितं तर्पयामि

कुलसुन्दरीं तर्पयामि
कुलसुन्दरं तर्पयामि
नित्यां तर्पयामि
नित्यं तर्पयामि
नीलपताकां तर्पयामि
नीलपताकं तर्पयामि
विजयां तर्पयामि
विजयं तर्पयामि
सर्वमङ्गलां तर्पयामि
सर्वमङ्गलं तर्पयामि
ज्वालामालिनीं तर्पयामि
ज्वालामालिनं तर्पयामि
चित्रां तर्पयामि
चित्रं तर्पयामि
महानित्यां तर्पयामि
महानित्यं तर्पयामि (३८२)
परमेश्वरपरमेश्वरीं तर्पयामि
परमेश्वरपरमेश्वरं तर्पयामि
मित्रीशमयीं तर्पयामि
मित्रीशमयं तर्पयामि
षष्ठीशमयीं तर्पयामि
षष्ठीशमयं तर्पयामि
उड्डीशमयीं तर्पयामि
उड्डीशमयं तर्पयामि
चर्यानाथमयीं तर्पयामि
चर्यानाथमयं तर्पयामि
लोपामुद्रामयीं तर्पयामि

लोपामुद्रामयं तर्पयामि
अगस्त्यमयीं तर्पयामि
अगस्त्यमयं तर्पयामि
कालतापनमयीं तर्पयामि
कालतापनमयं तर्पयामि
धर्माचारमयीं तर्पयामि
धर्माचारमयं तर्पयामि
मुक्तकेशीश्वरमयीं तर्पयामि
मुक्तकेशीश्वरमयं तर्पयामि
दीपकलानाथमयीं तर्पयामि
दीपकलानाथमयं तर्पयामि
विष्णुदेवमयीं तर्पयामि
विष्णुदेवमयं तर्पयामि
प्रभाकरदेवमयीं तर्पयामि
प्रभाकरदेवमयं तर्पयामि
तेजोदेवमयीं तर्पयामि
तेजोदेवमयं तर्पयामि
मनोजदेवमयीं तर्पयामि
मनोजदेवमयं तर्पयामि
कल्याणदेवमयीं तर्पयामि
कल्याणदेवमयं तर्पयामि
रत्नदेवमयीं तर्पयामि
रत्नदेवमयं तर्पयामि
वासुदेवमयीं तर्पयामि
वासुदेवमयं तर्पयामि (७५६)
श्रीरामानन्दमयीं तर्पयामि
श्रीरामानन्दमयं तर्पयामि

अणिमासिद्धिं तर्पयामि
अणिमासिद्धिं तर्पयामि
लघिमासिद्धिं तर्पयामि
लघिमासिद्धिं तर्पयामि
महिमासिद्धिं तर्पयामि
महिमासिद्धिं तर्पयामि
ईशित्वसिद्धिं तर्पयामि
ईशित्वसिद्धिं तर्पयामि
वशित्वसिद्धिं तर्पयामि
वशित्वसिद्धिं तर्पयामि
प्राकाम्यसिद्धिं तर्पयामि
प्राकाम्यसिद्धिं तर्पयामि
भुक्तिसिद्धिं तर्पयामि
भुक्तिसिद्धिं तर्पयामि
इच्छासिद्धिं तर्पयामि
इच्छासिद्धिं तर्पयामि
प्राप्तिसिद्धिं तर्पयामि
प्राप्तिसिद्धिं तर्पयामि
सर्वकामसिद्धिं तर्पयामि
सर्वकामसिद्धिं तर्पयामि (९४८)
ब्राह्मीं तर्पयामि
ब्राह्मं तर्पयामि
माहेश्वरीं तर्पयामि
माहेश्वरं तर्पयामि
कौमारीं तर्पयामि
कौमारं तर्पयामि
वैष्णवीं तर्पयामि

वैष्णवं तर्पयामि
वाराहीं तर्पयामि
वाराहं तर्पयामि
माहेन्द्रीं तर्पयामि
माहेन्द्रं तर्पयामि
चामुण्डां तर्पयामि
चामुण्डं तर्पयामि
महालक्ष्मीं तर्पयामि
महालक्ष्मीं तर्पयामि (१०६२)
सर्वसंक्षोभिणीं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभिणं तर्पयामि
सर्वविद्राविणीं तर्पयामि
सर्वविद्राविणं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणं तर्पयामि
सर्ववशङ्करीं तर्पयामि
सर्ववशङ्करं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनं तर्पयामि
सर्वमहाङ्कुशां तर्पयामि
सर्वमहाङ्कुशं तर्पयामि
सर्वखेचरीं तर्पयामि
सर्वखेचरं तर्पयामि
सर्वबीजां तर्पयामि
सर्वबीजं तर्पयामि
सर्वयोनिं तर्पयामि
सर्वयोनिं तर्पयामि
सर्वत्रिखण्डां तर्पयामि
सर्वत्रिखण्डं तर्पयामि
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनं तर्पयामि
प्रकटयोगिनीं तर्पयामि
प्रकटयोगिनं तर्पयामि (१२९६)
कामाकर्षणीं तर्पयामि
कामाकर्षणं तर्पयामि
बुद्ध्याकर्षणीं तर्पयामि
बुद्ध्याकर्षणं तर्पयामि
अहङ्काराकर्षणीं तर्पयामि
अहङ्काराकर्षणं तर्पयामि
शब्दाकर्षणीं तर्पयामि
शब्दाकर्षणं तर्पयामि
स्पर्शाकर्षणीं तर्पयामि
स्पर्शाकर्षणं तर्पयामि
रूपाकर्षणीं तर्पयामि
रूपाकर्षणं तर्पयामि
रसाकर्षणीं तर्पयामि
रसाकर्षणं तर्पयामि
गन्धाकर्षणीं तर्पयामि
गन्धाकर्षणं तर्पयामि
चित्ताकर्षणीं तर्पयामि
चित्ताकर्षणं तर्पयामि
धैर्याकर्षणीं तर्पयामि
धैर्याकर्षणं तर्पयामि
स्मृत्याकर्षणीं तर्पयामि

स्मृत्याकर्षणं तर्पयामि
नामाकर्षणीं तर्पयामि
नामाकर्षणं तर्पयामि
बीजाकर्षणीं तर्पयामि
बीजाकर्षणं तर्पयामि
आत्माकर्षणीं तर्पयामि
आत्माकर्षणं तर्पयामि
अमृताकर्षणीं तर्पयामि
अमृताकर्षणं तर्पयामि
शरीराकर्षणीं तर्पयामि
शरीराकर्षणं तर्पयामि
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनं तर्पयामि (१६२०)
गुप्तयोगिनीं तर्पयामि
गुप्तयोगिनं तर्पयामि
अनङ्गकुसुमां तर्पयामि
अनङ्गकुसुमं तर्पयामि
अनङ्गमेखलां तर्पयामि
अनङ्गमेखलं तर्पयामि
अनङ्गमदनां तर्पयामि
अनङ्गमदनं तर्पयामि
अनङ्गमदनातुरां तर्पयामि
अनङ्गमदनातुरं तर्पयामि
अनङ्गरेखां तर्पयामि
अनङ्गरेखं तर्पयामि
अनङ्गवेगिनीं तर्पयामि
अनङ्गवेगिनं तर्पयामि
अनङ्गाङ्कुशां तर्पयामि
अनङ्गाङ्कुशं तर्पयामि
अनङ्गमालिनीं तर्पयामि
अनङ्गमालिनं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनं तर्पयामि
गुप्ततरयोगिनीं तर्पयामि
गुप्ततरयोगिनं तर्पयामि (१८३४)
सर्वसंक्षोभिणीं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभिणं तर्पयामि
सर्वविद्राविणीं तर्पयामि
सर्वविद्राविणं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणं तर्पयामि
सर्वह्लादिनीं तर्पयामि
सर्वह्लादिनं तर्पयामि
सर्वसम्मोहिनीं तर्पयामि
सर्वसम्मोहिनं तर्पयामि
सर्वस्तम्भिनीं तर्पयामि
सर्वस्तम्भिनं तर्पयामि
सर्वजृम्भिणीं तर्पयामि
सर्वजृम्भिणं तर्पयामि
सर्ववशङ्करीं तर्पयामि
सर्ववशङ्करं तर्पयामि
सर्वरञ्जिनीं तर्पयामि
सर्वरञ्जिनं तर्पयामि

सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनं तर्पयामि
सर्वार्थसाधिनीं तर्पयामि
सर्वार्थसाधिनं तर्पयामि
सर्वसम्पत्तिपूरणीं तर्पयामि
सर्वसम्पत्तिपूरणं तर्पयामि
सर्वमन्त्रमयीं तर्पयामि
सर्वमन्त्रमयं तर्पयामि
सर्वद्वन्द्वक्षयंकरीं तर्पयामि
सर्वद्वन्द्वक्षयंकरं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनं तर्पयामि
सम्प्रदाययोगिनीं तर्पयामि
सम्प्रदाययोगिनं तर्पयामि (२१६६)
सर्वसिद्धिप्रदां तर्पयामि
सर्वसिद्धिप्रदं तर्पयामि
सर्वसम्पत्प्रदां तर्पयामि
सर्वसम्पत्प्रदं तर्पयामि
सर्वप्रियङ्करीं तर्पयामि
सर्वप्रियङ्करं तर्पयामि
सर्वमङ्गलकारिणीं तर्पयामि
सर्वमङ्गलकारिणं तर्पयामि
सर्वकामप्रदां तर्पयामि
सर्वकामप्रदं तर्पयामि
सर्वदुःखविमोचिनीं तर्पयामि
सर्वदुःखविमोचिनं तर्पयामि
सर्वमृत्युप्रशमनीं तर्पयामि
सर्वमृत्युप्रशमनं तर्पयामि
सर्वविघ्ननिवारिणीं तर्पयामि
सर्वविघ्ननिवारिणं तर्पयामि
सर्वाङ्गसुन्दरीं तर्पयामि
सर्वाङ्गसुन्दरं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायिनीं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायिनं तर्पयामि
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनं तर्पयामि
कुलोत्तीर्णयोगिनीं तर्पयामि
कुलोत्तीर्णयोगिनं तर्पयामि (२४३८)
सर्वज्ञां तर्पयामि
सर्वज्ञं तर्पयामि
सर्वशक्तिं तर्पयामि
सर्वशक्तिं तर्पयामि
सर्वैश्वर्यप्रदां तर्पयामि
सर्वैश्वर्यप्रदं तर्पयामि
सर्वज्ञानमयीं तर्पयामि
सर्वज्ञानमयं तर्पयामि
सर्वव्याधिविनाशिनीं तर्पयामि
सर्वव्याधिविनाशिनं तर्पयामि
सर्वाधारस्वरूपां तर्पयामि
सर्वाधारस्वरूपं तर्पयामि
सर्वपापहरां तर्पयामि
सर्वपापहरं तर्पयामि
सर्वानन्दमयीं तर्पयामि
सर्वानन्दमयं तर्पयामि

सर्वरक्षास्वरूपिणीं तर्पयामि
सर्वरक्षास्वरूपिणं तर्पयामि
सर्वेप्सितप्रदां तर्पयामि
सर्वेप्सितप्रदं तर्पयामि
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनं तर्पयामि
निगर्भयोगिनीं तर्पयामि
निगर्भयोगिनं तर्पयामि (२६८८)
वशिनीं तर्पयामि
वशिनं तर्पयामि
कामेश्वरीं तर्पयामि
कामेश्वरं तर्पयामि
मोदिनीं तर्पयामि
मोदिनं तर्पयामि
विमलां तर्पयामि
विमलं तर्पयामि
अरुणां तर्पयामि
अरुणं तर्पयामि
जयिनीं तर्पयामि
जयिनं तर्पयामि
सर्वेश्वरीं तर्पयामि
सर्वेश्वरं तर्पयामि
कौलिनीं तर्पयामि
कौलिनं तर्पयामि
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनं तर्पयामि
रहस्ययोगिनीं तर्पयामि

रहस्ययोगिनं तर्पयामि (२८५२)
बाणिनीं तर्पयामि
बाणिनं तर्पयामि
चापिनीं तर्पयामि
चापिनं तर्पयामि
पाशिनीं तर्पयामि
पाशिनं तर्पयामि
अङ्कुशिनीं तर्पयामि
अङ्कुशिनं तर्पयामि (२९०८)
महाकामेश्वरीं तर्पयामि
महाकामेश्वरं तर्पयामि
महावज्रेश्वरीं तर्पयामि
महावज्रेश्वरं तर्पयामि
महाभगमालिनीं तर्पयामि
महाभगमालिनं तर्पयामि
महाश्रीसुन्दरीं तर्पयामि
महाश्रीसुन्दरं तर्पयामि
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनं तर्पयामि
अतिरहस्ययोगिनीं तर्पयामि
अतिरहस्ययोगिनं तर्पयामि (३०४२)
श्रीश्रीमहाभट्टारिकां तर्पयामि
श्रीश्रीमहाभट्टारकं तर्पयामि
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनं तर्पयामि
परापररहस्ययोगिनीं तर्पयामि
परापररहस्ययोगिनं तर्पयामि (३१२४)

त्रिपुरां तर्पयामि
त्रिपुरं तर्पयामि
त्रिपुरेशीं तर्पयामि
त्रिपुरेशं तर्पयामि
त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि
त्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि
त्रिपुरवासिनीं तर्पयामि
त्रिपुरवासिनं तर्पयामि
त्रिपुराश्रियं तर्पयामि
त्रिपुराश्रियं तर्पयामि
त्रिपुरमालिनीं तर्पयामि
त्रिपुरमालिनं तर्पयामि
त्रिपुरासिद्धां तर्पयामि
त्रिपुरासिद्धं तर्पयामि
त्रिपुराम्बां तर्पयामि
त्रिपुराम्बं तर्पयामि
महात्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि
महात्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि (३२९०)
महामहेश्वरीं तर्पयामि
महामहेश्वरं तर्पयामि
महामहाराज्ञीं तर्पयामि
महामहाराजं तर्पयामि
महामहाशक्तिं तर्पयामि
महामहाशक्तिं तर्पयामि
महामहागुप्तां तर्पयामि
महामहागुप्तं तर्पयामि
महामहाज्ञप्तिं तर्पयामि
महामहाज्ञप्तं तर्पयामि
महामहानन्दां तर्पयामि
महामहानन्दं तर्पयामि
महामहास्पन्दां तर्पयामि
महामहास्पन्दं तर्पयामि
महामहाशयां तर्पयामि
महामहाशयं तर्पयामि
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञीं तर्पयामि
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजं तर्पयामि
(३४८४)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (३४९३)

त्रिनवत्यधिकचतुःशतोत्तरत्रिसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशक्तिशिवमिथुनतर्पणान्तमाला ।

***

१५ शुद्धशक्तिशिवमिथुनजयान्तमाला ।

ह्रीं

श्री चित्रा नित्या

चित्रां चन्द्रनिभाननां गुणमयीं चित्राम्भरालङ्कृतां
चिद्रूपां परदेवतां स्मितमुखीं चिन्ताकुलध्वंसिनीम् ।
अद्वैतामृतवर्षिणीं हरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां
सत्यां सामजराजमन्दगमनां सर्वेश्वरीं भावये ॥

पूर्णिमायाम् कृष्णप्रतिपदि

अस्य श्रीशुद्धशक्तिशिवमिथुनजयान्तमालामहामन्त्रस्य, पुरुषतत्त्वाधिष्ठायिशिवात्मने सायमादित्यऋषये नमः । कृतिच्छन्दसे नमः । राजसह्रींकारपीठस्थितहरेश्वरीललितामहाभट्टारिकाहिरण्यबाहुकामेश्वरमहाभट्टारकमिथुनाय देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । भोगमोक्षसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्-

या भोगदायिनी देवी जीवन्मुक्तिप्रदा न सा ।
मोक्षदा तु न भोगाय ललिता तूभयप्रदा ॥

गायत्री

विचित्रायै विद्महे महानित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि जय जय
त्रिपुरसुन्दर जय जय (२६) हृदयदेवि जय जय

हृदयदेव जय जय
शिरोदेवि जय जय
शिरोदेव जय जय
शिखादेवि जय जय
शिखादेव जय जय
कवचदेवि जय जय
कवचदेव जय जय
नेत्रदेवि जय जय
नेत्रदेव जय जय
अस्त्रदेवि जय जय
अस्त्रदेव जय जय (१२४)
कामेश्वरि जय जय
कामेश्वर जय जय
भगमालिनि जय जय
भगमालिन् जय जय
नित्यक्लिन्ने जय जय
नित्यक्लिन्न जय जय
भेरुण्डे जय जय
भेरुण्ड जय जय
वह्निवासिनि जय जय
वह्निवासिन् जय जय
महावज्रेश्वरि जय जय
महावज्रेश्वर जय जय
शिव(शिवा)दूति जय जय
शिव(शिवा)दूत जय जय
त्वरिते जय जय
त्वरित जय जय

कुलसुन्दरि जय जय
कुलसुन्दर जय जय
नित्ये जय जय
नित्य जय जय
नीलपताके जय जय
नीलपताक जय जय
विजये जय जय
विजय जय जय
सर्वमङ्गले जय जय
सर्वमङ्गल जय जय
ज्वालामालिनि जय जय
ज्वालामालिन् जय जय
चित्रे जय जय
चित्र जय जय
महानित्ये जय जय
महानित्य जय जय (३७९)
परमेश्वरपरमेश्वरि जय जय
परमेश्वरपरमेश्वर जय जय
मित्रीशमयि जय जय
मित्रीशमय जय जय
षष्ठीशमयी जय जय
षष्ठीशमय जय जय
उड्डीशमयी जय जय
उड्डीशमय जय जय
चर्यानाथमयि जय जय
चर्यानाथमय जय जय
लोपामुद्रामयि जय जय

लोपामुद्रामय जय जय
अगस्त्यमयि जय जय
अगस्त्यमय जय जय
कालतापनमयि जय जय
कालतापनमय जय जय
धर्माचारमयि जय जय
धर्माचारमय जय जय
मुक्तकेशीश्वरमयि जय जय
मुक्तकेशीश्वरमय जय जय
दीपकलानाथमयि जय जय
दीपकलानाथमय जय जय
विष्णुदेवमयि जय जय
विष्णुदेवमय जय जय
प्रभाकरदेवमयि जय जय
प्रभाकरदेवमय जय जय
तेजोदेवमयि जय जय
तेजोदेवमय जय जय
मनोजदेवमयि जय जय
मनोजदेवमय जय जय
कल्याणदेवमयि जय जय
कल्याणदेवमय जय जय
रत्नदेवमयि जय जय
रत्नदेवमय जय जय
वासुदेवमयि जय जय
वासुदेवमय जय जय (७५३)
श्रीरामानन्दमयि जय जय
श्रीरामानन्दमय जय जय

अणिमासिद्धे जय जय
अणिमासिद्धे जय जय
लघिमासिद्धे जय जय
लघिमासिद्धे जय जय
महिमासिद्धे जय जय
महिमासिद्धे जय जय
ईशित्वसिद्धे जय जय
ईशित्वसिद्धे जय जय
वशित्वसिद्धे जय जय
वशित्वसिद्धे जय जय
प्राकाम्यसिद्धे जय जय
प्राकाम्यसिद्धे जय जय
भुक्तिसिद्धे जय जय
भुक्तिसिद्धे जय जय
इच्छासिद्धे जय जय
इच्छासिद्धे जय जय
प्राप्तिसिद्धे जय जय
प्राप्तिसिद्धे जय जय
सर्वकामसिद्धे जय जय
सर्वकामसिद्धे जय जय (९४५)
ब्राह्मि जय जय
ब्राह्म जय जय
माहेश्वरि जय जय
माहेश्वर जय जय
कौमारि जय जय
कौमार जय जय
वैष्णवि जय जय

वैष्णव जय जय
वाराहि जय जय
वाराह जय जय
माहेन्द्रि जय जय
माहेन्द्र जय जय
चामुण्डे जय जय
चामुण्ड जय जय
महालक्ष्मी जय जय
महालक्ष्मी जय जय (१०५९)
सर्वसंक्षोभिणि जय जय
सर्वसंक्षोभिन् जय जय
सर्वविद्राविणि जय जय
सर्वविद्राविन् जय जय
सर्वाकर्षिणि जय जय
सर्वाकर्षिन् जय जय
सर्ववशङ्करि जय जय
सर्ववशङ्कर जय जय
सर्वोन्मादिनि जय जय
सर्वोन्मादिन् जय जय
सर्वमहाङ्कुशे जय जय
सर्वमहाङ्कुश जय जय
सर्वखेचरि जय जय
सर्वखेचर जय जय
सर्वबीजे जय जय
सर्वबीज जय जय
सर्वयोने जय जय
सर्वयोने जय जय
सर्वत्रिखण्डे जय जय
सर्वत्रिखण्ड जय जय
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि जय जय
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन् जय जय
प्रकटयोगिनि जय जय
प्रकटयोगिन् जय जय (१२८७)
कामाकर्षणि जय जय
कामाकर्षण जय जय
बुद्ध्याकर्षणि जय जय
बुद्ध्याकर्षण जय जय
अहङ्काराकर्षणि जय जय
अहङ्काराकर्षण जय जय
शब्दाकर्षणि जय जय
शब्दाकर्षण जय जय
स्पर्शाकर्षणि जय जय
स्पर्शाकर्षण जय जय
रूपाकर्षणि जय जय
रूपाकर्षण जय जय
रसाकर्षणि जय जय
रसाकर्षण जय जय
गन्धाकर्षणि जय जय
गन्धाकर्षण जय जय
चित्ताकर्षणि जय जय
चित्ताकर्षण जय जय
धैर्याकिर्षणि जय जय
धैर्याकिर्षण जय जय
स्मृत्याकर्षणि जय जय

स्मृत्याकर्षण जय जय
नामाकर्षणि जय जय
नामाकर्षण जय जय
बीजाकर्षणि जय जय
बीजाकर्षण जय जय
आत्माकर्षणि जय जय
आत्माकर्षण जय जय
अमृताकर्षणि जय जय
अमृताकर्षण जय जय
शरीराकर्षणि जय जय
शरीराकर्षण जय जय
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन् जय जय
(१६१०)
गुप्तयोगिनि जय जय
गुप्तयोगिन् जय जय
अनङ्गकुसुमे जय जय
अनङ्गकुसुम जय जय
अनङ्गमेखले जय जय
अनङ्गमेखल जय जय
अनङ्गमदने जय जय
अनङ्गमदन जय जय
अनङ्गमदनातुरे जय जय
अनङ्गमदनातुर जय जय
अनङ्गरेखे जय जय
अनङ्गरेख जय जय
अनङ्गवेगिनि जय जय

अनङ्गवेगिन् जय जय
अनङ्गाङ्कुशे जय जय
अनङ्गाङ्कुश जय जय
अनङ्गमालिनि जय जय
अनङ्गमालिन् जय जय
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन् जय जय
गुप्ततरयोगिनि जय जय
गुप्ततरयोगिन् जय जय (१८२१)
सर्वसंक्षोभिणि जय जय
सर्वसंक्षोभिन् जय जय
सर्वविद्राविणि जय जय
सर्वविद्राविन् जय जय
सर्वाकर्षिणी जय जय
सर्वाकर्षिन् जय जय
सर्वह्लादिनि जय जय
सर्वह्लादिन् जय जय
सर्वसम्मोहिनि जय जय
सर्वसम्मोहिन् जय जय
सर्वस्तम्भिनि जय जय
सर्वस्तम्भिन् जय जय
सर्वजृम्भिणि जय जय
सर्वजृम्भिन् जय जय
सर्ववशङ्करि जय जय
सर्ववशङ्कर जय जय
सर्वरञ्जिनि जय जय
सर्वरञ्जिन् जय जय

सर्वोन्मादिनि जय जय
सर्वोन्मादिन् जय जय
सर्वार्थसाधिनि जय जय
सर्वार्थसाधिन् जय जय
सर्वसम्पत्तिपूरणि जय जय
सर्वसम्पत्तिपूरण जय जय
सर्वमन्त्रमयि जय जय
सर्वमन्त्रमय जय जय
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि जय जय
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर जय जय
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन् जय जय
सम्प्रदाययोगिनि जय जय
सम्प्रदाययोगिन् जय जय (२१४१)
सर्वसिद्धिप्रदे जय जय
सर्वसिद्धिप्रद जय जय
सर्वसम्पत्प्रदे जय जय
सर्वसम्पत्प्रद जय जय
सर्वप्रियङ्करि जय जय
सर्वप्रियङ्कर जय जय
सर्वमङ्गलकारिणि जय जय
सर्वमङ्गलकारिन् जय जय
सर्वकामप्रदे जय जय
सर्वकामप्रद जय जय
सर्वदु:खविमोचिनि जय जय
सर्वदु:खविमोचिन् जय जय
सर्वमृत्युप्रशमनि जय जय
सर्वमृत्युप्रशमन् जय जय
सर्वविघ्ननिवारिणि जय जय
सर्वविघ्ननिवारिन् जय जय
सर्वाङ्गसुन्दरि जय जय
सर्वाङ्गसुन्दर जय जय
सर्वसौभाग्यदायिनि जय जय
सर्वसौभाग्यदायिन् जय जय
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन् जय जय
कुलोत्तीर्णयोगिनि जय जय
कुलोत्तीर्णयोगिन् जय जय (२४०७)
सर्वज्ञे जय जय
सर्वज्ञ जय जय
सर्वशक्ते जय जय
सर्वशक्ते जय जय
सर्वैश्वर्यप्रदे जय जय
सर्वैश्वर्यप्रद जय जय
सर्वज्ञानमयि जय जय
सर्वज्ञानमय जय जय
सर्वव्याधिविनाशिनि जय जय
सर्वव्याधिविनाशिन् जय जय
सर्वाधारस्वरूपे जय जय
सर्वाधारस्वरूप जय जय
सर्वपापहरे जय जय
सर्वपापहर जय जय
सर्वानन्दमयि जय जय
सर्वानन्दमय जय जय

सर्वरक्षास्वरूपिणि जय जय
सर्वरक्षास्वरूपिन् जय जय
सर्वेप्सितप्रदे जय जय
सर्वेप्सितप्रद जय जय
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन् जय जय
निगर्भयोगिनि जय जय
निगर्भयोगिन् जय जय (२६५३)
वशिनि जय जय
वशिन् जय जय
कामेश्वरि जय जय
कामेश्वर जय जय
मोदिनि जय जय
मोदिन् जय जय
विमले जय जय
विमल जय जय
अरुणे जय जय
अरुण जय जय
जयिनि जय जय
जयिन् जय जय
सर्वेश्वरि जय जय
सर्वेश्वर जय जय
कौलिनि जय जय
कौलिन् जय जय
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वरोगहरचक्रस्वामिन् जय जय
रहस्ययोगिनि जय जय

रहस्ययोगिन् जय जय (२८११)
बाणिनि जय जय
बाणिन् जय जय
चापिनि जय जय
चापिन् जय जय
पाशिनि जय जय
पाशिन् जय जय
अङ्कुशिनि जय जय
अङ्कुशिन् जय जय (२८६४)
महाकामेश्वरि जय जय
महाकामेश्वर जय जय
महावज्रेश्वरि जय जय
महावज्रेश्वर जय जय
महाभगमालिनि जय जय
महाभगमालिन् जय जय
महाश्रीसुन्दरि जय जय
महाश्रीसुन्दर जय जय
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन् जय जय
अतिरहस्ययोगिनि जय जय
अतिरहस्ययोगिन् जय जय (२९९६)
श्रीश्रीमहाभट्टारिके जय जय
श्रीश्रीमहाभट्टारक जय जय
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन् जय जय
परापररहस्ययोगिनि जय जय
परापररहस्ययोगिन् जय जय (३०७६)

त्रिपुरे जय जय
त्रिपुर जय जय
त्रिपुरेशि जय जय
त्रिपुरेश जय जय
त्रिपुरसुन्दरि जय जय
त्रिपुरसुन्दर जय जय
त्रिपुरवासिनि जय जय
त्रिपुरवासिन् जय जय
त्रिपुराश्री जय जय
त्रिपुरश्री जय जय
त्रिपुरमालिनि जय जय
त्रिपुरमालिन् जय जय
त्रिपुरासिद्धे जय जय
त्रिपुरासिद्ध जय जय
त्रिपुराम्बा जय जय
त्रिपुराम्ब जय जय
महात्रिपुरसुन्दरि जय जय
महात्रिपुरसुन्दर जय जय (३२३८)
महामहेश्वरि जय जय

महामहेश्वर जय जय
महामहाराज्ञि जय जय
महामहाराज जय जय
महामहाशक्ते जय जय
महामहाशक्ते जय जय
महामहागुप्ते जय जय
महामहागुप्त जय जय
महामहाज्ञप्ते जय जय
महामहाज्ञप्त जय जय
महामहानन्दे जय जय
महामहानन्द जय जय
महामहास्पन्दे जय जय
महामहास्पन्द जय जय
महामहाशये जय जय
महामहाशय जय जय
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि जय जय
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज जय जय
(३४३२)

नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ ३४४१

एकचत्वारिंशदधिकचतुःशतोत्तरत्रिसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशक्तिशिवमिथुनजयान्तमाला ।

॥ श्रीविद्याखड्गमाला सम्पूर्णा ॥

***

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

(प्रस्तुत अष्टोत्तरशतनाम भगवती त्रिपुरा के हैं। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, यह सौभाग्यदायक है। जमदग्नि से प्राप्तकर भगवान् दत्तात्रेय ने परशुराम से कहा है। इसे पूर्व में भगवान् शिव ने पार्वती से भी कहा है। यह स्तोत्र श्रीविद्या समुद्र के रत्न के समान है।)

ॐ अस्य श्रीसौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य भार्गवऋषिः, रक्तः शिवः, अनुष्टुप् छन्दः, ललिताम्बिका देवता, पाठे विनियोगः ।

ॐ कामेश्वरी कामशक्तिः कामसौभाग्यदायिनी ।
कामरूपा कामकला कामिनी कमलासना ॥1॥
कमला कल्पनाहीना कमनीया कलावती ।
कमला भारती सेव्या कल्पिताशेषसंस्कृतिः ॥2॥
अनुत्तरानघानन्ताद्भुतरूपानलोद्भवा ।
अतिलोकचरित्रातिसुन्दर्यातिशुभप्रदा ॥3॥
अनन्त्यतिविस्तारार्चनतुष्टामितप्रभा ।
एकरूपैकवीरैकनाथा कान्तार्चनप्रिया ॥4॥
एकैकभावतुष्टैकरसैकान्तजनप्रिया ।
एधमानप्रभावैधद्भक्तपातकनाशिनी ॥5॥
एलामोदमुखेनोद्रि शक्रायुधसमस्थितिः ।
ईहाशून्योप्सितेशादिसैव्येशानवरांगना ॥6॥
ईश्वराज्ञापिकेकारभाव्येप्सितफलप्रदा ।
ईशानेति हरे शेषदरुणाक्षीश्वरेश्वरी ॥7॥
ललिता ललनारूपा लयहीना लसत्तनुः ।
लयसर्वा लयक्षाणिः लयकर्त्री लयात्मिका ॥8॥

लघिमा लघुमध्याढ्या ललमाना लघुद्रुता ।
हयारूढा हतामित्रा हरकान्ता हरिस्तुता ॥9॥
हयग्रीवेष्टदा हालप्रिया हर्षसमुद्भवा ।
हर्षणा हल्लकामाङ्गी हस्त्यन्तैश्वर्यदायिनी ॥10॥
हलहस्तार्चिपदा हविर्दानप्रसादिनी ।
रामा रामार्चिता राज्ञी रम्या रवमयी रतिः ॥11॥
रक्षिणी रमणी राकारमणी मण्डलप्रिया ।
रक्षिताखिललोकेशी रक्षोगणनिषूदिनी ॥12॥
अन्तान्तकारिण्यम्भोजप्रियान्तक भयङ्करी ।
अम्बुरूपाम्बुजकराम्बुजजातवरप्रदा ॥13॥
अन्तःपूजाप्रियान्तःस्थरूपिण्यन्तर्वचोमयी ।
अन्तकारातिवामाङ्कस्थितान्तस्सुखरूपिणी ॥14॥
सर्वज्ञा सर्वगा सारा समा समसुखा सती ।
सन्ततिः सन्तता सोमा सर्वा सांख्या सनातनी ॥15॥
एतत् ते कथितं देवि! नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
अतिगोप्यमिदं स्तोत्रं सर्वतो सारमुद्धृतम् ॥16॥
एतच्छदृशं स्तोत्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
अप्रकाश्यमभक्तानां पुरतो देवताद्विषम् ॥17॥
एतत् सदाशिवो नित्यं पठन्त्यन्ये हरादयः ।
एतत् प्रभावात् कन्दर्पः त्रैलोक्यं जयति क्षणात् ॥18॥
सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रमनोहरम् ।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेन्नित्यं न तस्य भुवि दुर्लभम् ॥19॥
श्रीविद्योपासनवतौ एतदावश्यकं मतम् ।
सकृदेतत् प्रपठतां नान्यकर्म विलुप्यते ॥20॥

अपठित्वा स्तोत्रमिदं नित्यं नैमित्तिकं कृतम् ।
व्यर्थी भवति तन्नरकृतं कर्म यथा-तथा ॥21॥
सहस्रनामपाठादौ पठेत् स्तोत्रं शुभप्रदम् ।
सहस्रनामपाठस्य फलं शतगुणं भवेत् ॥22॥
सहस्रपठनाद् ध्याता वीक्षणान्नाशयेद् रिपून् ।
करवीरैः रक्तपुष्पैर्हुत्वा लोकान् वशं नयेत् ॥23॥
स्तम्भयेत् पीतकुसुमैर्नीलैरुच्चाटयेद् रिपून् ।
मरीचिर्विद्वेषणाय लवङ्गैर्व्याधिं नश्यते ॥24॥
पत्रपुष्पैः फलैर्वापि पूजयेत् प्रतिनामभिः ।
चक्रराजेऽथवाऽन्यत्र स वसेच्छ्रीपुरं चिरम् ॥25॥
यः सदाऽऽवर्तयन् आस्ते नामाष्टशतमुत्तमम् ।
तस्य श्रीललिता माता प्रसन्ना वांछितप्रदा ॥26॥

॥ इति श्रीसौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

***

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वर्यै नमः।
२ ....कामशक्त्यै नमः ।
३ ...... कामसौभाग्यदायिन्यै नमः।
४ .... कामरूपायै नमः।
५ .... कामकलायै नमः।
६ .... कामिन्यै नमः।
७ .... कमलासनायै नमः।
८ .... कमलायै नमः।
९ .... कल्पनाहीनायै नमः।
१० ..... कमनीयकलावत्यै नमः।
११ . कमलाभारती सेव्यायै नमः।
१२ . कल्पिताशेषसंस्थितायै नमः।
१३ .... अनुत्तरायै नमः ।
१४ .... अनघायै नमः।
१५ .... अनन्तायै नमः।
१६ .... अद्भुतरूपायै नमः।
१७ .... अनलोद्भवायै नमः।
१८ ...... अतिलोकचरित्रायै नमः।
१९ .... अतिसुन्दर्यै नमः।
२० .... अतिशुभप्रदायै नमः।
२१ .... अघहन्त्र्यै नमः।
२२ .... अतिविस्तारायै नमः।
२३ .... अर्चनतुष्टायै नमः।
२४ .... अमितप्रभायै नमः।
२५ .... एकाररूपायै नमः।
२६ .... एकवीरायै नमः।
२७ .... एकनाथायै नमः।
२८ ......एकान्तार्चनप्रियायै नमः।
२९ .... एकस्यै नमः।
३० .... एकभावतुष्टायै नमः।
३१ .... एकरसायै नमः।
३२ ..... एकान्तजनप्रियायै नमः।
३३ .... एधमानप्रभावायै नमः।
३४ .. एकभक्तपातकनाशिन्यै नमः।
३५ ...... एलामोदलसन्मुख्यै नमः।
३६ .... एनोद्रिशक्रायुधसमस्थित्यै .... नमः।
३७ .... ईहाशून्यायै नमः।
३८ .... ईप्सितायै नमः।
३९ .... ईशादिसेव्यायै नमः।
४० .... ईशानवराङ्गनायै नमः।
४१ .... ईश्वराज्ञापिकायै नमः।
४२ .... ईकारभाव्यायै नमः।
४३ .... ईप्सितफलप्रदायै नमः।
४४ .... ईशानायै नमः।
४५ .... ईतिहरायै नमः।
४६ .... ईशायै नमः।
४७ .... ईषदरुणाक्ष्यै नमः।
४८ .... ईश्वरेश्वर्यै नमः।
४९ .... ललितायै नमः।
५० .... ललनारूपायै नमः।
५१ .... लयहीनायै नमः।
५२ .... लसत्तनवे नमः।
५३ .... लयसर्वायै नमः।

५४ .... लयक्षोण्यै नमः।
५५ .... लयकर्त्र्यै नमः।
५६ .... लयात्मिकायै नमः।
५७ ....,........ लघिमायै नमः।
५८ .... लघुमध्याढ्यायै नमः।
५९ .... ललमानायै नमः।
६० .... लघुद्रुतायै नमः।
६१ .... हयारूढायै नमः।
६२ .... हतामित्रायै नमः।
६३ .... हरकान्तायै नमः।
६४ .... हरिस्तुतायै नमः।
६५ .... हयग्रीवेष्टदायै नमः।
६६ .... हालप्रियायै नमः।
६७ .... हर्षसमुद्भवायै नमः।
६८ .... हर्षणायै नमः।
६९ .... हल्लकामाङ्ग्यै नमः।
७० .... हस्त्यन्तैश्वर्यदायिन्यै नमः।
७१ ..... हलहस्तार्चितपदायै नमः।
७२ ...... हविर्दानप्रसादिन्यै नमः।
७३ .... रामायै नमः।
७४ .... रामार्चितायै नमः।
७५ .... राज्ञ्यै नमः।
७६ .... रम्यायै नमः।
७७ .... रवमय्यै नमः।
७८ .... रत्यै नमः।
७९ .... रक्षिण्यै नमः।
८० .... रमण्यै नमः।
८१ .... राकायै नमः।
८२ ... रमणीमण्डलप्रियायै नमः।
८३ .. रक्षिताखिललोकेश्यै नमः।
८४ ..... रक्षोगणनिषूदिन्यै नमः।
८५ ..... अन्ताऽन्तकारिण्यै नमः।
८६ .... अम्भोजप्रियायै नमः।
८७ .... अन्तकभयङ्कर्यै नमः।
८८ .... अम्बुरूपायै नमः।
८९ .... अम्बुजकरायै नमः।
९० .. अम्बुजजातवरप्रदायै नमः।
९१ ..... अन्तःपूजाप्रियायै नमः।
९२ .... अन्तःस्थायै नमः।
९३ .... अरूपिण्यै नमः।
९४ .... अन्तर्वचोमय्यै नमः।
९५ .... अन्तकारातिवामाङ्क-
.... स्थितायै नमः।
९६ ..... अन्तःसुखरूपिण्यै नमः।
९७ .... सर्वज्ञायै नमः।
९८ .... सर्वगायै नमः।
९९ .... सारायै नमः।
१०० .... समायै नमः।
१०१ .... समसुखायै नमः।
१०२ .... सत्यै नमः।
१०३ .... सन्तत्यै नमः।
१०४ .... सन्ततायै नमः।
१०५ .... सोमायै नमः।
१०६ .... सर्वस्यै नमः।
१०७ .... साङ्ख्यायै नमः।
१०८ .... सनातन्यै नमः।

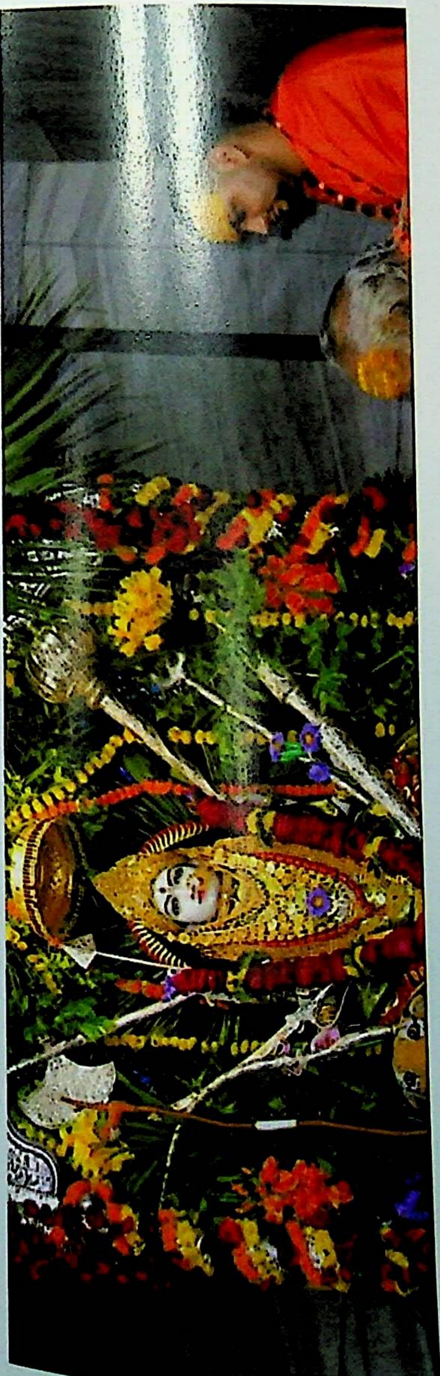
॥ इति श्रीसौभाग्याष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

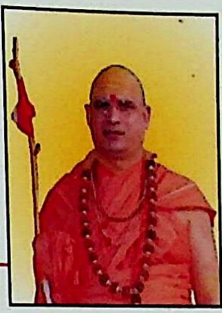
श्रीविद्या उपासकों के आवश्यक नित्यकर्म

१. प्रात:काल पृथ्वी को नमस्कार, माँ के चित्र को प्रणाम, पिता या पति को प्रणाम । स्नानपूर्व प्रात: स्मरण का पाठ ।
२. स्नानादि । दो माला गुरुमन्त्र का जाप ।
३. बालात्रिपुरसुन्दरी मानसपूजा का पाठ ।
४. रश्मिमाला स्मरण (यदि गुरु आदेश हो) ।
५. परमदेवीसूक्त का पाठ (यदि गुरु आदेश हो तो) ।
६. श्रीसूक्त से या पौराणिक मन्त्र से श्रीयन्त्र का अभिषेक ।
७. ललिता सहस्रार्चन (रक्ताक्षत, कुङ्कुम, पुष्प या द्राक्ष)।
८. अर्चन की सुविधा न होने पर केवल सहस्रनाम का पाठ ।
९. खड्गमाला पाठ ।
१०. त्रिशती पाठ या अर्चन ।
११. सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम पाठ या अर्चन,गुरुमन्त्र का एक माला जप।
१२. पुन: नीराजन (आरती) पुष्पाञ्जलि, देव्यपराधक्षमापन, मुद्राप्रदर्शन, नमस्कार ।
१३. नवरात्रि आदि पर्वों पर आवरण पूजन (यथोपदेश) ।
१४. मन्त्र पुरश्चरण ।
१५. श्रीविद्या उपासकों को गन्ना (ईक्षु), गाजर, प्याज, लहसुन आदि समस्त तामसी भोजन का निषेध किया गया है ।
१६. नवरात्रि आदि पर्वों पर सुवासिनी पूजन, कन्यापूजन का विधान है।
१७. यत्रास्ति भोगो न हि तत्र मोक्ष:, यत्रास्ति मोक्षो न हि तत्र भोग:।
श्रीसुन्दरी सेवनतत्पराणां, भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥
१८. यस्य च चरमञ्जन्म यदि वा शङ्कर: स्वयम् ।
तेनैव लभ्यते विद्या श्रीमत्पञ्चदशाक्षरी ॥
१९. अतिप्रियतमं देयं सुतदाराधनादिकम् ।
राज्यदेयं शिरोदेयं न देयं षोडशाक्षरीम् ॥

श्रीशारदापीठ प्रकाशनम्

1 --- माधवीयश्रीमच्छङ्करदिग्विजय डिम्डिम नाम संस्कृत टीका एवं सदगुरु --- सपर्या नाम्नीहिन्दीटीका सहित 500/-
2 --- सामवेद (कौथुमशाखीय गानार्चिकपदस्तोभः) 600/-
3 --- सामवेद (राणायणी शाखा) 700/-
4 --- ईशादिपञ्चोपनिषद् (ईश, कठ, केन, प्रश्न, मुण्डक) 150/-
5 --- सौन्दर्य-लहरी (संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, आंग्लभाषा सहितम्) 300/-
6 --- त्रिपुरसुन्दरी नित्याराधनस्तोत्राणि 300/-
7 --- भज-गोविन्दम् 20/-
8 --- वार्षिक शोध पत्रिका प्रदीप 100/-
9 --- भागवत प्रबोध (हिन्दी, गुजराती) 50/-
10 --- शङ्कराचार्य संदेश (त्रैमासिक पत्रिका) 50/-
11 --- श्रीनवभारती पत्रिका (मासिक) 10/-
12 --- धर्मरथ (ज.गु.शङ्कराचार्य महाराज के प्रवचनों का संग्रह, हिन्दी में) 50/-
13 --- संसार सागर से समुद्धरण 15/-
14 --- चमत्कार चिन्तामणि (गुजराती अनुवाद सहित) 50/-
15 --- दिव्य-द्वारका 150/-
16 --- ग्रह मङ्गलाष्टकम् 40/-
17 --- ईशावास्योपनिषद् (संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, आंग्लभाषा सहितम्) 50/-
18 --- यतिधर्मदर्शनी 150/-
19 --- श्रीविद्यानित्यार्चन विधि 100/-
20 --- ज्योतिष भाव सुधाकर 100/-
21 --- पञ्चदेवोपासना 100/-
22 --- वेदान्त-विचार-चूडामणि 100/-
23 --- स्वरूप सपर्या 50/-
24 --- श्रीविद्यानवावरण सपर्या 200/-
25 --- शाङ्करपीठ परम्परा में चतुष्पीठ 50/-
26 --- शिवपूजा विधानम् (हिन्दी, गुजराती) 50/-
27 --- ललिता त्रिशती 250/-
28 --- विवेक चूडामणि 400/-
29 --- अद्वैतानुभूतिब्रह्मविदाशीर्वादश्च 50/-
30 --- ब्रह्मसिद्धि 200/-
31 --- श्रुतिसार समुद्धरण 150/-
32 --- पञ्चदशी (भाग त्रयस्य) 2000/-
33 --- शंकर पञ्चकम् 100/-
34 --- मठाम्नाय महानुशासनम् 100/-
35 --- आद्यशङ्कराचार्य मण्डनमिश्र शास्त्रार्थ 100/-
36 --- श्री त्रिपुरा चरित 150/-
37 --- करुणासागर द्वारकाधीश 50/-





प्रकाशक

स्वामी सदानन्द सरस्वती

जन्म : भाद्रकृष्ण द्वितीया सं. 2015 (31 अगस्त 1958) बरगी, करकबेल, नरसिंहपुर, म.प्र

माता : स्व. श्रीमती मानकुंवर देवी

पिता : आयुर्वेदरत्न पं. विद्याधर अवस्थी

पूर्वनाम : रमेश कुमार अवस्थी

शिक्षा : प्राथमिक शिक्षा बरगी (म.प्र.) में, संस्कृत शिक्षा झोंतेश्वर, नरसिंहपुर (म.प्र.) में, व्याकरण, वेद और वेदान्त की शिक्षा काशी में।

दीक्षा : प्रयाग कुम्भ (सन् 1977 ई.) में।

संन्यास : चैत्र शु.13 सोमवार सं. 2060 तदनुसार 15 अप्रैल 2003 काशी में, पूज्य महाराजश्री के प्रथम दण्डी संन्यासी शिष्य।

श्रीविद्या पूर्णाभिषेक : श्रावण शुक्ल नवमी सं. 2067 तदनुसार 18 अगस्त 2010, परमहंसी गंगा आश्रम में।

पूर्णाभिषेक नाम : ज्ञानशक्त्यम्बासहितसदानन्दनाथः।

दीक्षागुरु : अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

अन्य अभिरुचियां : वेद-वेदान्त अध्ययन के साथ शैक्षणिक क्षेत्र में, जैसे - शिशुमंदिर, हाईस्कूल, कॉलेज और नेत्रालय का संचालन। इसके अतिरिक्त अस्पताल, ग्रन्थ प्रणयन, ग्रन्थ पुनर्मुद्रण, प्राचीन ग्रन्थ संरक्षण आदि में पूज्य गुरुजी की आज्ञा से संलग्नता।



त्रैलोक्यसुन्दर जगत म[illegible]र

